BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 नवम्बर - 31 दिसम्बर, 2023 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

खेती-बारी विशेषांक

भाग-3

छठी मइया के अर्पित खेती-बारी अंक

राष्ट्रपति के हाथे डॉक्टरेट के मानद उपाधि से सम्मानित भइनी आर. के. सिन्हा

19 अक्टूबर 2023, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के प्रथम दीक्षांत समारोह के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा पूर्व राज्य सभा सांसद, वरिष्ठ पत्रकार, विख्यात समाजसेवी आ उद्योगपति श्री रवींद्र किशोर सिन्हा जी के पत्रकारिता, साहित्य, रोजगार सृजन आ समाज सेवा में उहाँ के अनुकरणीय आ उल्लेखनीय योगदान खातिर मानद् डाक्टरेट के उपाधि से विभूषित कइल गइल। दू हजार के क्षमता वाला खचाखच भरल बापू सभागार में आयोजित एह समारोह में बिहार के राज्यपाल मान्यवर राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, मुख्यमंत्री नितीश कुमार, कुलाधिपति पद्मश्री डॉ. महेश शर्मा, कुलपति प्रो० संजय श्रीवास्तव अउर स्थानीय सांसद, विधायक, कई मंत्री, मुख्य सचिव आमिर सुभानी, पुलिस महानिदेशक आर० एस० भट्टी आ अनेक शिक्षाविद् आ प्रशासनिक पदाधिकारी उपस्थित रहलें।

वर्ष :4, अंक : 5-8 | 1 नवम्बर-31 दिसम्बर, 2023

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित । संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा ।

खबर.....02

राष्ट्रपति के हाथे डॉक्टरेट के मानद उपाधि से सम्मानित भइनी पूर्व राज्य सभा सांसद आर. के. सिन्हा

एह अंक में

सुनीं सभे

भाषा
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষা
ভাষا
ভাষا
ভাষا

The Indian Public School

Dehradun

The 21st century gurukul

- Auditorium with a seating capacity of 1500
- 2 Swimming Pools
- In- House Dairy with more than 200 Cows Supplying pure fresh milk & dairy products to the Mess
- 80 acres of lush green campus
- Co- educational Residential School with qualified & experienced teachers
- Modern Academic Block with laboratories, Music & Art rooms with covered area measuring 60,000 sq. ft.
- Horse Riding Facility
- Smart Classrooms
- Excellent Games & Sporting facilities: Cricket, Football, Chess Badminton, Basketball, Volleyball, Tennis, Rugby, etc.

ADMISSION OPEN

For Classes III-IX & XI - 2022-23

www.indianpublicschool.com

+91 9568012777 | +91 9568012778

संपादकीय

छठी मइया के अर्पित खेती-बारी अंक:

कविता में खेती-किसानी

बेटा के डेंगू भइल बा। बोखार कम करे खातिर बर्फ के पट्टी देतानी। बेटा हमरा के देखत बा, हम ओकरा के। हम चिंता में बानीं।

... माई के फोन आइल ह। माई कहलऽसियऽ कि छठी मइया सब ठीक क दिहें। माई से बतियावल दवाई ह का? बुझाता जे सब दुखवे ओरा गइल। हम झर-झर बहे लगनी ह। बुझाइल ह जे आँख से कविता झरत बा।

गाँवे आइल बानी। सई बरिस पार बड़का बाबूजी के संगे खेत घूमत बानीं। उनकर बोलिये कविता लागत बा।

जौ-गेहूँ के बाल में ना जाने केतना दोहा, चौपाई, छंद नाचत बा।

पछुआ बेयार देह के छू के निकल गइल। केहू के इयाद गजल बन के ओठ प थिरके लागल।

खेत के डँरार प ठेस लागल ह। छने भर में केतना ना घात-प्रतिघात कविता में उतर गइल ह।

घर के छत पर आ गइल बानीं। साइलेंट मोड में बानीं। शब्द फुटते नइखे, बाकिर कविता-मन चलत बा। मूक अभिनय के तरह मूक कविता, गूँग कविता।

कहे के मतलब, संवेदना के स्तर पर हरेक जिनिगी एगो अमूर्त, अटूट कविता में तब्दील होत रहेला आ जे कवि बा ओह अमूर्त के मूर्त बना के प्रस्तुत करत रहेला।

एह संदर्भ में हमार कुछ शेर-

दुख-दरद भा हँसी भा खुशी, जौने
दुनिया से हमरा मिलल
ऊहे दुनिया के सँउपत हई, आज देके
गजल के शकल

xxx

अनुभव नया-नया मिले भावुक हो रोज-रोज
पर गीत आ गजल में ढले कवनो-कवनो बात

एह संसार में अनगिनत कवि बाड़न जेकर अनुभव, जेकर दुख-सुख, कविता में रूपांतरित भइल। अनेक भाषा के अनेक कवि खेती-किसानी के पीड़ा, समस्या आ ओकरा साजिश-सियासत के कविता में ढालल।

एह अंक में हम भोजपुरी कविता में खेती-किसानी, नेपाल के भोजपुरी कविता में खेती-किसानी, मॉरिशस में खेती-किसानी, हिंदी कविता में खेती-किसानी, हिंदी-उर्दू गजल में खेती-किसानी लेके आइल बानीं।

दरअसल खेती-किसानी हमनी के जीवन के आधार ह। ओकरा से हमनी के बने-बिगड़े के बा। हमनी के माने देश के, दुनिया के। ई संसार जइसन खाई, ओइसने बन जाई। अभी सँउसे दुनिया बेमार बा, काहे कि अन्नपूर्णा नाराज बाड़ी, धरती नाराज बाड़ी। उनका कोख में जहर बो के हमनी के अमृत के उम्मेद करत बानीं जा। हमनी के जहर बोवे के आदते हो गइल बा, देश में, समाज में, धरती में, त फिजा में जहर काहे ना फइली? बाल-बच्चा जहरीला काहे ना होइहें? जहरीला भइल सरीसृप के पहचान ह, स्तनधारी के ना। हमनी के मूल रूप में जवन हईं जा, ऊ होखे के पड़ी। हमनी के मूल स्वरूप शांत चित्त आ आनंद से भरल मन ह। मन के नदी में हलचल बा। पानी जबले थिराई ना, बात ना बनी। मन के नदी में जहर बा। सफाई करे के पड़ी।

कविता कुछ हद तक ई काम करेला। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहले बानी कि 'कविता आदमी के आदमी बनावेला।' कार्ल मार्क्स के कहनाम बा कि 'कविता मनुष्यता के मातृभाषा ह।' हिन्दी कवि धूमिल जी कहले बानी कि 'कविता भाषा में आदमी होखे के तमीज ह।'

कविता के लेके बहुत लोग बहुत कुछ कहले बा। हमरो लागेला कि कुछ हद तक, कविता मन के दवाई ह। त का जाने ई दवइया कुछ लोग पर असर कइए जाय।

बड़ी पवित्र भावना आ बड़ा उद्देश्य से ई अंक रउरा के सँउपत बानीं। ई अंक खेती-किसानी के कविता से संबंधित बा।

बड़का बाबूजी के बतिया बेर-बेर मन परत बा-'पगला गइल बाड़ऽ तू! तोहरा कहला से हम बाप-दादा के इज्जत बेंच दीं? खेत बेंच दीं?'

खेतो इज्जत ह। जीवन में सब चीज इज्जत ना बन पावेला। कुछ खासे चीज इज्जत बनेला। ओह इज्जत के इज्जत करे के चाहीं। ना त बेइज्जत हो जाये के पड़ेला।

बात ई बा कि हमनी के शब्द पकड़ के बइठ जानीं जा आ तहतुक शुरू हो जाला। शब्द के पीछे के भावना जबले ना पकड़ाई, कविता ना पकड़ाई। खेत से इज्जत के संबंध भावनात्मक बा। भावनात्मक गहराई ले पहुँचे खातिर जहरमुक्त मन चाहीं। जहरमुक्त मन खातिर जहरमुक्त अन्न चाहीं। जहरमुक्त अन्न खातिर खेती-किसानी के ठीक से बूझे के पड़ी।

कविता में सूत्र में, संकेत में, भाव में, तेवर में, खीस में, आक्रोश में, प्रेम में, पीड़ा में बहुत कुछ कहाला, बहुत कुछ लिखाला। ओह बहुत कुछ में से इचिको रउरा लगे पहुँच गइल त हमनी के ई अंक निकालल सार्थक हो जाई।

ई कातिक के महिना ह। ए महिना में कतिकी धान तइयार हो जाला आ अगहनी पाके लागेला। रवि फसल के बोअनी शुरू हो जाला। अलुआ रोपाये लागेला। सनई फुलाये लागेला। सुरुका चिउरा कुटाये लागेला। छठी मइया के परसादी खातिर ऊँख, हरदी, अदरख, सुथनी, कोन (सकरकंद) घर में आवे लागेला। खेती से जुड़ल सब औजार पुजाए लागेला। माल-मवेशी के नहवा-धोआ के नया घंटी बन्हाये लागेला।

ई अंक हम छठी मइया के अर्पित करत बानी आ उनका से बेहतर खेती-किसानी आ वृहत्तर अर्थ में बेहतर जीवन खातिर अरज-निहोरा करत बानी-

प्रणाम।
मनोज भावुक

सुनीं सभे

आर.के. सिन्हा

काहे जरूरी बा बच्चन के मातृभाषा में शिक्षा देहल !

बेशक, भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलन में शिक्षा ग्रहण करे के अंधा दौड़ के चलते अधिकतर बच्चा असली शिक्षा पावे के आनंद से वंचित रह जालें। असली शिक्षा के आनंद त रउआ तबे पा सकेनी, जब रउआ कम से कम पांचवीं तक के शिक्षा अपना मातृभाषा में हीं हासिल कइले होखीं। विभिन्न अध्ययन से प्रमाणित हो चुकल बा कि जवन बच्चा मातृभाषा में स्कूली शिक्षा प्राप्त करी, ऊ अधिक सीखी। अंग्रेजी के विरोध नइखे चाहे अंग्रेजी शिक्षा आ अध्ययन के लेके कवनों आपत्तियो नइखे। पर भारत के आपन भाषा, चाहे हिन्दी, तमिल, बांग्ला आ कवनों दोसर, में प्राइमरी स्कूली शिक्षा देवे के संबंध में त बहुत पहिलहीं फैसला ले लेवे के चाहत रहे। काहे कि ओकरा बिना शिक्षा त नइखे देहल जा सकत। हँ, शिक्षा के नाम पर प्रमाणपत्र जरूर बाँटल जा सकेला।

कुछ दिन पहिलहीं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) एगो बेहद जरूरी फैसला लिहलस। एकरा तहत अब सीबीएसई स्कूल प्री-प्राइमरी से 12वीं कक्षा तक क्षेत्रीय व मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करे के विकल्प दी। अब ले, राज्य बोर्ड स्कूलन के विपरीत, सीबीएसई स्कूलन में खाली अंग्रेजी अउर हिंदी माध्यम हीं शिक्षा पावे के विकल्प रहे। सीबीएसई अपना सभ संबंधित स्कूलन से कहलस कि जहाँ ले संभव हो सके यथाशीघ्र पांचवीं कक्षा तक ले क्षेत्रीय भाषा में चाहे फेर बच्चन के मातृभाषा में पढ़ाई के विकल्प उपलब्ध करावे। बेशक, ई एगो युगांतकारी फैसला बा। हरेक बच्चा के पास ई विकल्प होखे के हीं चाहीं कि ऊ अपना मातृभाषा में स्कूली शिक्षा ग्रहण कर सके। हँ, ओके विषय के रूप में कवनों एगो भाषा चाहे एकाधिक भाषा पढ़ावल जा सकेला।

மொழி
भाषा
ภาษา
ভাষা
ভাষা
ভাষা

बेशक, भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलन में शिक्षा ग्रहण करे के अंधा दौड़ के चलते अधिकतर बच्चा असली शिक्षा पावे के आनंद से वंचित रह जालें। असली शिक्षा के आनंद त रउआ तबे पा सकेनी, जब रउआ कम से कम पांचवीं तक के शिक्षा अपना मातृभाषा में हीं हासिल कइले होखीं। विभिन्न अध्ययन से प्रमाणित हो चुकल बा कि जवन बच्चा मातृभाषा में स्कूली शिक्षा प्राप्त करी, ऊ अधिक सीखी। अंग्रेजी के विरोध नइखे चाहे अंग्रेजी शिक्षा आ अध्ययन के लेके कवनों आपत्तियो नइखे। पर भारत के आपन भाषा, चाहे हिन्दी, तमिल, बांग्ला आ कवनों दोसर, में प्राइमरी स्कूली शिक्षा देवे के संबंध में त बहुत पहिलहीं फैसला ले लेवे के चाहत रहे। काहे कि ओकरा बिना शिक्षा त नइखे देहल जा सकत। हँ, शिक्षा के नाम पर प्रमाणपत्र जरूर बाँटल जा सकेला। याद रखीं कि शिक्षा के अर्थ ह ज्ञान। बच्चन के ज्ञान कहाँ मिलल? हम त उनका के नौकरी पावे खातिर तइयार कर रहल बानीं। अभी हमनीं इहाँ दुर्भाग्यवश स्कूली या कॉलेज शिक्षा के अर्थ नौकरी पावे से अधिक कुछओ नइखे। आजादी के बाद हिंदी अउर दोसर भारतीय भाषा के उत्थान के जे सपना देखल गइल रहे ऊ सपना दस्तावेजन आ सरकारी कार्यक्रम में हीं दब के रह गइल।

हमनीं के जानतानी कि पूरा देश में अंग्रेजी माध्यम से स्कूली शिक्षा लेवे-देवे के महामारी अखिल भारतीय स्वरूप ले चुकल बा। जम्मू-कश्मीर आ नागालैंड अपना सब स्कूलन में शिक्षा के एकमात्र माध्यम अंग्रेजी ही कर देले बा। महाराष्ट्र, दिल्ली, तमिलनाडु समेत कुछ अउर अन्य राज्यन में छात्र के विकल्प दिहल जा रहल बा कि ऊ लोग चाहे त अपना पढ़ाई के माध्यम अंग्रेजी रख सकेला। यानी बच्चन के उनका मातृभाषा से दूर करे के भरपूर कोशिश भइल बा।

हमार एगो मित्र, जे राजधानी के मशहूर स्कूल के प्रधानाचार्य बाड़े, बतावत रहलन कि जब ऊ हरियाणा के करनाल जिला के एगो ग्रामीण इलाके में पढ़ावत रहलन त उनका एगो नया अनुभव भइल। उहाँ माता-पिता के साथ बच्चा सब खुशी-खुशी स्कूल में दाखिला लेवे आवें। ऊ नया किताब आ कॉपी लेके स्कूल आवे लागे लो। लेकिन, स्कूल में कुछ दिन बितवला के बाद उनकर स्कूल से मोहभंग होखे लगे। ऊ कहे लागे लो कि उनका त पढ़े अइबे ना करे। ऊ लोग धीरे-धीरे चुप रहे लागे कक्षा में। एकर वजह ई रहे कि उनका के पढ़ावल जात रहे अंग्रेजी में। उनका के उनका मातृभाषा में पढ़ावल जाइत त शायद उनकर स्कूल आ पढ़ाई से मोहभंग ना होइत। ये स्थिति के कारण बहुते बच्चा बीच में ही पढ़ाई छोड़ियो देला।

पूरा संसार के भाषा-वैज्ञानिक, अध्यापक आ शिक्षा से जुड़ल अन्य जानकार लोग के राय बा कि बच्चा सबसे आराम से अपना भाषा में पढ़वला पर ही शिक्षा ग्रहण करेला। जइसहीं ओके कवनों अन्य भाषा में पढ़ावल जाए लागेला, तब ही गड़बड़ी चालू हो जाला। पर अपना देश में त इहे होत चलल आ रहल बा। केतने अध्ययन से साबित हो चुकल बा कि जवन बच्चा अपना मातृभाषा में प्राइमरी से पढ़ल चालू करेला ओकरा खातिर शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़े के संभावना अधिक प्रबल हो जाला। मतलब बच्चा जवना भाषा के घर में अपना अभिभावक, भाई-बहिन आ मित्र लोग बोलेला, ओमे पढ़े में ओकरा अधिक सुविधा रहेला। अफसोस कि अपना देश के एगो बड़हन वर्ग मान लेले बा कि अंग्रेजी जाने-समझे बिना गति नइखे। एकरा चलते हर स्तर पर एके बढ़ावा देवे के मानसिकता नजर आवेला।

विद्यार्थी सबके मातृभाषा में शिक्षा देहल मनोवैज्ञानिक आ व्यवहारिक रूप से वांछनीय बा, काहे कि, विद्यालय अइला पर बच्चा अगर अपना भाषा में पढ़ेला, त ऊ विद्यालय में आत्मीयता के अनुभव करे लागेला अउर यदि उनके सब कुछ उनहीं के भाषा में पढ़ावल जाला, त उनका खातिर सब चीज के समझल बेहद आसान हो जाला।

पूरा संसार के भाषा-वैज्ञानिक, अध्यापक आ शिक्षा से जुड़ल अन्य जानकार लोग के राय बा कि बच्चा सबसे आराम से अपना भाषा में पढ़वला पर ही शिक्षा ग्रहण करेला। जइसहीं ओके कवनों अन्य भाषा में पढ़ावल जाए लागेला, तब ही गड़बड़ी चालू हो जाला। पर अपना देश में त इहे होत चलल आ रहल बा। केतने अध्ययन से साबित हो चुकल बा कि जवन बच्चा अपना मातृभाषा में प्राइमरी से पढ़ल चालू करेला ओकरा खातिर शिक्षा क्षेत्र में आगे बढ़े के संभावना अधिक प्रबल हो जाला। मतलब बच्चा जवना भाषा के घर में अपना अभिभावक, भाई-बहिन आ मित्र लोग बोलेला, ओमे पढ़े में ओकरा अधिक सुविधा रहेला। अफसोस कि अपना देश के एगो बड़हन वर्ग मान लेले बा कि अंग्रेजी जाने-समझे बिना गति नइखे। एकरा चलते हर स्तर पर एके बढ़ावा देवे के मानसिकता नजर आवेला। एक तरह से ई सोच घर कर गइल बा कि अंग्रेजी जनला बिना दुनिया अधूरा-अधकचरा बा। बेशक, एही मानसिकता के चलते हमरा समाज के एगो बड़हन हिस्सा अपना आय के एगो लमहर भाग अपना बच्चन के कथित अंग्रेजी स्कूलन में भेजे पर खर्च करे लागल बा। एगो अनुमान के मुताबिक, वर्तमान में भारत के 25 फीसद स्कूली बच्चा ओ स्कूलन में पढ़ाई शुरू करे लागल बा, जहाँ पर मातृभाषा के बजाय शिक्षा के माध्यम अंग्रेजी बा। ये बच्चन के शिक्षा के आनंद आ हीं नइखे सकत। आ एमे से अनेक अंग्रेजी के अनिवार्यता के चलते स्कूल छोड़ देवेलें।

खैर,केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के ताजा फैसला से एगो उम्मीद अवश्य जागल बा कि चलीं हमनीं भारत के अपना भाषा सबके सम्मान देहल भलहीं देर से चालू त कइनीं।

परिचयः लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।

आवरण कथा

डॉ० ब्रज भूषण मिश्र

भोजपुरी कविता में खेती-किसानी

लड़िकाई में नीचे के दरजा में अपना भारत देस के बारे में पढ़ावल जात रहे कि ई गाँवन के देस ह, जे खेती-किसानी प्रधान बा। आँकड़ा बता रहल बा कि अपना देस में लगभग सत्तर फीसदी आबादी गाँवन में रहेले, आ जवन आबादी गाँवन में रहेले, ऊ कवनो ना कवनो रूप में खेती किसानी से जुड़ल बा। छोट-मोट जोतदार से लेके बड़हन जोतदार तक, हुंडा-बटइया खेती करेवाला, खेती-किसानी के काम करेवाला मजदूर आ पशुपालन करेवाला गाँवन में बसेला। भोजपुरिहा इलाका के हाल इहे बा। जतना पहिले जातिगत पेशा रहल ह, उहो एही खेती किसानी से जुड़ल रहल ह, ओकर हिस्सेदार रहल ह। जुग के हिसाब से बहुत कुछ बदलल बा, तबहुँओ बहुत कुछ ओइसनके बा। किसानी करेवाला तरह-तरह के मशीन आ गइल बा, मजदूर दोसरा जगह रोजी-रोजगार खातिर पलायन कर रहल बा, जातिगत पेशा के सरूप बदल गइल बा। तबहुँओ खेती-किसानी के काम चलिए रहल बा, काहे से कि ओही पर देश के पूरा आबादी के पेट भरे के जिम्मेदारी बा। बाढ़-सुखाड़, ओला-पाला, कीट-फतिंगा से ओकर नोकसानो कम नइखे। तबहुँ जीवट के साथे खेती-किसानी के काम बदस्तूर जारी बा। खेती-किसानी के गूर बतवनिहारो लोग प्राचीन काल से लेके नवीन काल तक होत आ रहल बा। भोजपुरी इलाका के भौगोलिक स्थिति देखब, त उतरवारी छोर पर हिमालय से लागल बा, दखिनवारी छोर रोहतास, कैमूर से लेके झारखंड के गढ़वा-पलामू होखत उ.प्र. के सोनभद्र तक विंध्य पहाड़ से लागत बा, पुरुब-पछिम समतल बा। पूरा भोजपुरी क्षेत्र में गंगा, सरयू, गंडक, राप्ती, सोन, घाघरा जइसन बड़हन-बड़हन नदी आ ना जाने छोट-छोट कतने नाला-आहर-पइन-पोखरा-झील जल के स्रोत बा, जे सिंचाई के साधनो बा आ तबाही के कारनो बन जात बा। सोभाविक बा कि भोजपुरिहा समाज के सजी चिंतन-मनन, राग-द्वेष, हँसी-खुशी, दुख-तकलीफ एह खेती किसानी पर केंद्रित बा आ ई सब लोक वार्ता-लोक साहित्य से ले के आधुनिक साहित्य तक में परगट होत आइल बा।

भाग-1
भोजपुरी लोक में खेती-किसानी

पहिले लोक साहित्य के उठाई त ओह में लोकगीत आ लोककथा प्रमुख बा। लोकोगाथा बा, बाकिर ई वीर चाहे प्रेम कथात्मक बा, बनिज-बेपार के बात ओह में बा। खेती-किसानी आ ओह से जुड़ल पशुपालन वगैरह के बात कथा-कहानी में मिलेला। लोकोक्ति में कहावत, सूक्ति, बुझौवल आ मुहावरा आवेला। एह सब में खेती-किसानी से जुड़ल भा ओकरा बेयाज से बहुत बात कहल सुनल गइल बा। जब निबरखन हो जाला त धान के खेती कइसे होई, किसान के चिन्ता सतावे लागेला। तब टोला पड़ोस के बहिन-बेटी-माई इनर देवता से पानी माँगेली। एह अवसर पर ऊ लोग एगो गीत गावेली-

हाली हाली बरसीं ए इनर देवता, पानी बिनु पड़ेला अकाले हो राम !
धोबिया गड़हिया में छिप छाप पनिया से बभना करेला असनाने हो राम!
अँठई के चिऊड़ा, गदही के दही, बभना करेला जेवनारे हो राम !

छोट लइकन के खेलावे में एगो खेल- घुघुआमाना खेलावल जाला। एह खेलवला में कइसे खेती गिरहस्ती के संस्कार दिआला देखल जा सकत बा-

घुघुआ माना, खेत खरिहाना।
अनर मनर पुआ पाकेला, खोंइछा चीलर नाचेला।
चिलरा गइल खेत खरिहान, ले आइल कतिकवा धान।
ओह धान के रिन्हलस खीर, बाम्हन नेवतलस ऊ दस बीस।
बम्हना के पुतवा दिहलसि असीस, बबुआ जियसु लाख बरिस।

भोजपुरी में क्रिया गीत मिलेला, जवना के खेती गिरहथी के काम निबटावत गावल जाला। एह गीतन में नारी के त्रासद स्थिति के बयान होला। एगो मेहरारू रोपनी करत ई गीत गावत बिया, जे खेतियो से जुड़ल बा-

जहिया से अइलीं पिया तहरी महलिया में,
रात दिन कइलीं टहलिया रे पियवा !
घर के करत काम सूखल देही के चाम,
सुखवा सपनवा होई गइले रे पियवा !
बड़की गोतिनिया जे हई मलकिनिया से,
भसुर जी छयला चिकनिया रे पियवा !
हरवा जोतत तोर गोरवा पिरइले,
रूपया के मुँह नाहीं देखलीं रे पियवा !

भोजपुरिया क्षेत्र चंपारन में धान के खेती खूब होखेला। एह अवसर पर तीन-चार तरह से, सुमिरन, चढ़ंती, ओल्हानी आ मजदूरन के गीत गवाला। सुमिरन के गीत बीया उखारे के पहिले गावल जाला। भगवान विष्णु आ लछिमी के रूप ह खेती गिरहथी करेवाला, काहे से कि अन्न से प्रतिपाल होखेला। बीया के उदेसे विष्णु भगवान दुनों बेकत लोग जा रहल बा। गीत देखीं-

उठु उठु बिअवा हो हरखित मन से,
तोरा जोगे बिअवा रे लगन सोचइले।
के मोरा जइहें रे पुरूब देसवा रे पछिम देसवा,
के मोरा जइहें बीआ के उदेसवा।
बिसुन बाबा जइहें पुरूब देसवा रे पछिम देसवा,
बिसुनाइन देई जइहें बीआ का उदेसवा।

अब देखीं कि ब्रह्मा, विष्णु आ महादेव के संगे खेती-किसानी के बात जोड़ के खेती आ खेतिहर लोग के अगिला गीत में कइसे महत्त्व दिहल जा रहल बा-

कथी के महादेव हरवा बनाइले कथी के परिहथ होय।
चनन धई महादेव हरवा बनाइले, धूपवन परिहथ होय।
गावा लेवे चलले ईसर महादेव, ब्रह्मा बिसुन संग लोई।
गावा पूजे चलली सुभवा गउरी देई, सखी सब गोहन लगाई।
जेतने पूजेली गावा, ओतने असीस देली,
जुगे जुगे जिअहूं भइया हरवहवा, जिन कांदो दिहले बनाय।
सोने फूल फूले इहे चारों कोनवा, मोती झालर लटकेला बाल।

रोपनी के गीतन में मजदूर लोग के व्यथा कथा बड़ा मार्मिक बा। एक गीत में एगो मजदूरिन अपना छोट बालक के घर पर छोड़ के धनरोपनी करे आइल बाड़ी, बेरा बितलो पर मालिक रोपनी करवा रहल बा, बच्चा घर पर दूध बिना रोवत होई। गिरहस्त के ऊ दगाबाज कहत बिया-

बेर गयल बेर लहसले, गोदी बालक रोवे।
कइसन निदरदी गिरहथवा हो, संवकेरे छुटियो ना देवे।।
कहले गिरहथ बबुआ संवकेरे छुट्टी देबऊ,
बेरवा से भइले कुबेरवा हो दगाबजऊ।
कहलें गिरहथ बबुआ बूंट पनपिआई देबऊ,
अब ना अइबो रउरा खेतवा हो दगाबजऊ।

अन्हारा भइला ले रोपनी करवावें पर ऊ गिरहथ के ताना मारत बिया-

गर के हंसुलिया भला कांदो में भुलइले, दियरा बार के।
मालिक रोपनी करइहें दियरा बार के।

भोजपुरी लोककथा खेते-खरिहाने, चरवाही, अगोरवाही मे समय काटे वास्ते कहल सुनल जाला। लोक कथा त अइसे गद्यात्मक होला, बाकिर ओह में पद्य के पुट होला। देखीं कइसे खेती से जुड़ल अन्न के चरचा ओह में आवत बा-

अन्न बिना हम दूबर भइलीं, दुबरा पड़ल मोर नाँव।
एही नगरी में पैर पुजवलीं, मानिकचंद मोर नाँव ।

लोकसाहित्य के एगो भेद लोकोक्ति ह। लोकोक्ति तीन प्रकार के होला- कहावत, सूक्ति आ बुझउअल। एह तीनों में मानव जीवन के गहन अनुभव आ ज्ञान के कथन होला, जे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखावन के काम करत आ रहल बा। ई लोकोक्ति कवनो एक बेकती के अनुभव आ ज्ञान ना ह। समाज के अनुभव आ ज्ञान ह। ई प्रायः पद्यात्मक आ तुकांत होखेला, लयबद्ध होखेला। ई सब में भी खेती-बारी, पशुपालन से जुड़ल भा ओकरा ब्याज से जीवन के अउर बात परगट कइल जाला। किसानी से जुड़ल एक से एक कहावत समाज में प्रचलन में बा। कुछ नमूना -

***खाइबि गेहूँ आ ना त रहब एहूँ;**
***अउरी अन्न खइले नात गेहूँ गठिअवले;**
***खेत जोरु जोर के, बल घटे त और के;**
***जइसे अगिला हर बहेला, ओइसहीं पछिला;**
***आगिल खेती आगे-आगे, पाछिल खेती भागे-जोगे;**

अइसन अनेक कहावत भोजपुरी जन-जीवन में प्रचलित बा, जे ओकरा खेती-बारी से लगाव के परिचायक बा। एह कहावत के अलावे कुछ रुढ़िबद्ध कहावत बा जे चिरई-चुरुंग, कीड़ा-मकोड़ा, जर-जनावर से फसल के रछेया करे अगोरवाही करत में शोर मचावत कहल जाला। कुछ एक उदाहरण देखीं-

***मैनी खाले खइनी मैनवा खाला पान।**
मैनी के सात बेटा, सातो पहलवान।
मैनी चलेले उतान।।

***बाँड़ी चिरइआ का एक ही डेरा, फेनु फेनु आवेले हमरे डेरा।**

***मडुआ के लिट्टी खेसारी के दाल, ए बनरा तोर नकिये लाल ।**

कहावत के बाद सूक्ति बा, जवना में खेती-बारी से जुड़ल बहुते सिखावन-समुझावन बा जे खेती-बारी आ ओकरे से जुड़ल पशुपालन के बारे में बाटे। भोजपुरी प्रदेश में घाघ के सूक्ति बहुत प्रचलित बाटे। जवन-जवन काम मनई का अपने सम्हारे के चाहीं, ओह में

खेतियो बतावल गइल बा। सूक्ति देखीं–

***परहथ बनिज, संदेशे खेती। बिन घर देखे बिआहे बेटी।।**
***द्वार पराये गारे थाती। ई चारु मिलि पिटसु छाती।।**

अइसे एगो कहावत में इहो कहल गइल बा–

***बढ़े पूत पिता के धरमे, खेती उपजे अपना करमे।**

खेती सबसे उत्तम धंधा मानल जात रहल बा–

***उत्तम खेती मध्यम बान, अधम चाकरी भीख निदान।**

कृषि के महत्व बतावत पाराशर जी लिखले बानी–
***अवस्यत्वं, निरन्नत्वं, कृषितोनेव जायते।**
अनातिथ्य चदुखित्वं, दुर्मनो न कदाचन।

खेती–बारी खातिर वर्षा विज्ञान, वायु परीक्षण, पशु ज्ञान, बीज ज्ञान, खाद–पानी के ज्ञान आ फसल ज्ञान जरूरी होखत रहे। एह से भोजपुरी सूक्तियन में एह सब पर कहावत उपलब्ध बा। वर्षा से संबंधित कुछ सूक्ति देखल जा सकत बा–

***कातिक द्वादस मेघा लउके।**
ऊ मेघा असाढ़े छउके।।

***पूस मास दसमी अँधियारी।**
बदरी होय, घोर अँधियारी।।

*** सावन बदी दसमी के दिने।**
भरिहें मेघ आ अधिके मीनें।।

***आदि न बरसे आदरा अंत न बरसे हस्त।**
कहे घाघ घाघिन से का करिहें गिरहस्त।।

अब बयार परीक्षण के सूक्ति देखीं–

***फागुन मास बहे पुरवाई।**
तब गेहूँ में गेरुई धाई।।

***सावन मास बहै पुरवाई।**
बरधा बेंचि लेहु धेनु गाई।।

***जै दिन जेठ बहे पुरवाई।**
तै दिन सावन धूर उड़ाई।।

पहिले खेती में हर बैल के उपयोग होत रहल ह। अब कम हो गइल बा। खेती खातिर कइसन बैल राखे के चाहीं आ कइसन ना, एह से जुड़ल सूक्ति देखीं–

***बाछा बैल बहुरिया जोय।**
ना घर रहे ना खेती होय।।

***ऊ किसान बड़ पातर।**
जे बैला राखे कादर।।

***छोट मुँह आ अँइठल कान।**
तेज बैल के ई पहिचान।।

*** बरध बेसाहन जइह कंता।**
खैरा के जनि देखिह दंता।।

खेती खातिर बीआ बड़ा मतलब राखेला। काथी के बीआ कइसन खेत में केतना मात्रा में देवे के चाहीं, ई अनुभव आ समझ के बात ह। कतना–कतना दूरी पर बीज गिरे कि फसल बढ़िया होखे। भोजपुरी क्षेत्र में एकर ज्ञान दिहल गइल बा सूक्ति के जरिये। देखीं, कुछ पाँतियन के जवना में बीज ज्ञान बा–

***जौ गेहूँ बोवे पाँच सेर।**
मटर के बीया तीने सेर।।

***बोवे चना पसेरी तीन।**
तीन सेर बिगहा जोन्हरी कीन।।

***दो सेर मेथी अरहर मास।**
डेढ़ सेर बिगह बीज कपास।।

कवन–कवन चीज के बीआ कतना–कतना दूरी पर लगावल जाई, एहू के बारे में सूक्ति कहल गइल बा–

***गाजर गंजी मूरी।**
तीनों बोवे दूरी।।

***हरिन फलांगन काँकरी, पैग–पैग कपास।**
जाय कहीं किसान से बोवै घने कपास।।

***कदम–कदम पर बाजरा मेढ़क कुदौनी जवार।**
अइसै बोवे जे कोई, घर–घर भरे कोठार।।

खेती में खादर के बड़ा महत्व बा। खाद दिहला से उपज बढ़ेला, मनी बढ़ेला। एह से समझदार किसान लोग खेत में खाद डालेला। लगावल पौधन के पोसन होला। खाद के जरूरत बतावत कहल गइल बा–

'खाद पड़े त खेत ना त कूड़ा रेत'।

एही से खेत में खाद देवे के बारे में ढेरे कहावत कहल गइल बा। एगो नमूना देखीं–

***खेती करे खाद से भरे। सै मन कोठिला में ले धरे।।**

गोबर के साथ सड़ल खर–पतवार, भूसा–भूसी वाला खाद बड़ा फायदेमंद होला। खेत के माटी के ताकत प्रदान करेला। एही से कहल बा–

***गोबर चोकर चकवड़ रूसा।**
इनके छोड़े होय न भूसा।।

***गोबर मइला पानी सड़े।**
तब खेती में दाना पड़े।।

***जबे डलबS गोबर खाद।**
तब देखिहS खेती के स्वाद।।

अब देखीं कि जतने खाद खेती में फसल का उपजा खातिर जरूरी बा ओतने सींचे खातिर पानियो जरूरी बा। धान, पान आ खीरा खातिर सिंचाई के जरूरत बतावल कहल गइल बा–

'धान पान उखेरा, तीनों पानी के चेरा।' चाहे **'धान पान खीरा, तीनों पानी के कीरा।।'**

एगो सूक्ति में फसल खातिर पानी के जरूरत बतावत कहल गइल बा–

***खेत बेपनिया बूढ़ा बयल।**
से किसान साँझे चलि गयल।।

***जब बरिसे त बान्हे कियारी।**
बड़ किसान जे हाथ कुदारी।।

*** पानी बरिसे बहे न पावे।**
तब खेती के मजा देखावे।।

बुझउअल दिमाग के तेज करे भा तेज दिमाग के पहचान करेला। लइकन में बुझउअल के

जरिये इतिहास, भूगोल, पुरान, गणित आदि विषयन के शिक्षा आसानी से दे दिआला, मनोरंजन के साथ। अब देखल जाव कि भोजपुरी इलाका में बुझउवल के जरिये कइसे अनाज के पहचान करावल जाला-

*** लाल बिटिया ओकर पेटवे फाटल-(गेहूँ)**
***अती चुकी मरद के नकिये टेंढ़ - (चना)**
***जब हम रहनी बारि कुँआरी। तब पहिरीं हम जोड़ा सारी।। - (मकई)**
***राजा के बेटी रजवंतिया नाँव। घघरी पहिरि के बजारे जाँव।। - (मुरई)**

अब खेती-किसानी से जुड़ल औजारन के बारे में बुझावल जाएवाला बुझौवल के एक दू गो नमूना देखीं-

***अँइठन मइठन काठ कपार। बारह टंगरी चार कपार।। - (पुरवट)**
***बन से आइलि बानरी घरे छेदवलस कान। बीस गोड़ से चले बनरिया छै मुँह बारह कान।। - (हेंगा)**

लोकवार्ता भा लोकोक्ति के एगो महत्वपूर्ण अंग मुहावरा ह। ई मुहावरा सब लोकभाषा से हिन्दी-संस्कृत जइसन विकसित भा मान्यता प्राप्त भाषा में आइल बा। जीवन के अनुभव आ लक्षणा आधारित ई मुहावरा सब अभिधा जइसन सहज सरल होला। ओकरा प्रयोग से कथन के अभिप्राय साफ हो जाला। भोजपुरी में मुहावरन के अकूत भंडार बा, जवना में बहुत कुछ खेती-किसानी से लिहल अनुभव आ लक्षण के आधार पर बा। देखीं कुछ उदाहरण-

***आन्ही के आम भइल,**
***खेती मराइल,**
***गाजर मूरई बूझल,**
***खीरा ककड़ी बूझल,**
***ऊसर में बीआ डालल,**
***पिआज निकिआवल आदि आदि।**

एह प्रकार से, देखल जाए त भोजपुरी लोकवार्ता आ लोकसाहित्य में खेती-बारी करे के बारे में बहुत कुछ सिखावल गइल बा चाहे त जीवन के एह महत्वपूर्ण अंग के लक्षण के जरिये संवाद शक्ति बढ़ावे के काम भइल बा। बादर बरखा पर निर्भर खेती ओकरा अभाव में कइसन दिन देखा सकत बा, इहो पता चलत बा।

भाग-2
भोजपुरी संतकाव्य आ खेती-किसानी

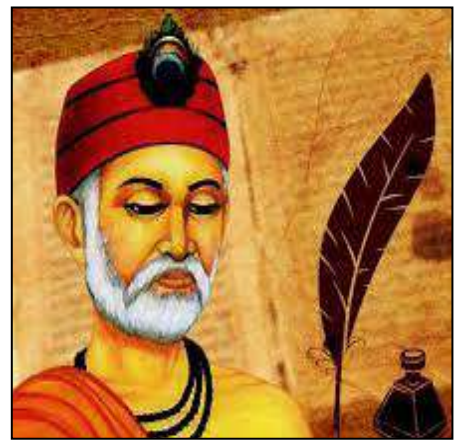

भोजपुरी साहित्य में संतकाव्य के लमहर परम्परा बा। लगभग पाँच सै बरिस से ऊपर तक अपना आध्यात्मिक चेतना के प्रसार में लागल ई संत लोग अपना दर्शन आ बिचार के आम आदमी तक पहुँचावेला, जातिगत पेशा सब के आलंबन लिहल, जवना से सहजे लोग समझ सके। चूँकि जातिगत पेशा करे वाला लोग के भरण पोषण खेतिहर किसान लोग करत रहल बा, एह से, ऊ खेती-किसानी से जुड़ल रहल बा। आईं, देखल जाव कि कइसे खेती-किसानी से जुड़ल बात आध्यात्मिक दर्शन के आधार बनत बा। संत कबीर भोजपुरी के आदि कवि मानल जालन। ऊ खेती आ जातिगत पेशा के शब्दन के अपना पदन में उपयोग कइले बाड़न। एक दू गो उदाहरण देखीं-

कर हो मन राम नाम धनखेती।।
राम नाम के बोअना हो, उपजे हीरामोती।
ग्यान ध्यान के बयल बनल हव,
मन आई तब जोती।। कर हो मन...

पहिले पहिल हम खेती कइलीं,
गंग जमन के रेती।
यह खेती में नफा बहुत हव, जीव के मुकुति होती।। कर हो मन...

अब देखीं कि अपना जातिगत पेशा के कबीर दास जी कइसे अपना आध्यात्मिक चेतना के साधारणीकरण खातिर उपयोग कर रहल बानी-

काहे के ताना, काहे के भरनी, कवन तार से बीनी चदरिया, झीनी रे झीनी।
इंगला पिंगला ताना भरनी, सुखमन तार से बीनी चदरिया झीनी रे झीनी।।

गाँव-देहात में महुआ के शराब बनावे के प्रचलन बा। आजुओ, रोक टोक के बादो ई काम चल रहल बा। कबीर दास जी एहू के अपना दर्शन के समझावे खातिर आधार बनवले बानी-

कलवारिन होइबो, पियवा मैं मदिरा बनाय।
मन महुआ गुर गेआन जवर करि, तन के भटी चढइबो।।
सत गाछ के लकड़ी मँगइबो, प्रेम अगिन धधकइबो।
एह बोतल के दाम बहुत हो, दारू सराब न पइबों।।
सब संतन के लागल कचहरी दरुअन ढार चलइबों।

खेती किसानी से उपराजल सामान बनिया लोग खरिदेला आ घोड़ा पर, बैलगाड़ी पर लाद के ले जाला आ शहर बाजार में बेंचेला। संत धरमदास के पद में बनिक जाति के पेशा के जरिये कइसे आध्यात्मिक बात राखल गइल बा, देखीं-

हम सत नाम के बैपारी।।
कोई कोई लादे कांसा पीतल,
कोई लवंग सुपारी।
हम तो लादीं नाम धनी के,
पूरन खेप हमारी।।
पूँजी न टूटे, नफा चौगुना,
बनिज किया हम भारी।
हाट जगाती रोक न सकिहें,
निर्भय गैल हमारी।।

दरिया साहेब के निरगुनिया संत लोगन में बड़हन नाम बा, उहाँ का आपन अलग संप्रदाय स्थापित कइनी। उहाँ का खेती के बेयाज से आपन दर्शन आम फहम कइले बानी-

साधो अइसी खेती करी,
जासे काल अकाल न मरई।।
रसना का हल बैल मन पवना बिरह,
भोम तँह बरई ।।

अन्न के महिमा बरनन करत गरीब दास जी लिखले बाड़न–

अन्न ही माता अन्न ही पिता अन्न ही मेटत है सब बिथा।
अन्न ही प्राण-पुरुष आधारा अन्न से खुले ब्रह्म-द्वारा।।

सरभंग सम्प्रदाय के प्रवर्तक संत कवि कीनारामजी खेती किसानी के शब्दावली से अपना अनुयायी लोग के कवना तरह ईश्वर आराधना करे के चाहीं, बता रहल बानी–

बन्दे करु खेती हरिनाम की।।
इस खेती में नफा बहुत हौ।
कौड़ी न लगे छदाम की।।
तन के बैल सुरत हरवाहा।
अहँई लगल गुरु ज्ञान की।।
ऊँच खाल सब समकर जोतो।
इहे रीति किसान की।।
अगल बगल संतन के मड़ैया।
बीच मड़ई कीनाराम की।।

एगो दोसर पद देखीं, जवना में खेत बनवला आ बीज गिरवला आ सिंचला वगैरह के चरचा मिलत बा–

खाह मन सुरति सुरति लगाय।
फेरि न जनम नर बड़ी सहाय।।
बुद्धि जमीन बिचार बनाय।
गुरु के शब्द बीज सोहाय।।
अंकुर दल श्रद्धा सत भाय।
बस प्रेम यामे गुन छाय।।
स्वाद सहज सुख कुमति उड़ाय।
दीनो जल अनुराग जनाय।।

सखी सम्प्रदाय के प्रवर्तक लक्ष्मी सखी जातिगत पेशा के आधार बना के आपन अध्यात्म दर्शन के समझावे के कोशिश कइलें। धोबी जाति के पेशा धोआई ह, आ धोआई के जवन प्रक्रिया होला, ओही प्रक्रिया के अपनावे पर संतकवि के जोर बा–

चल, सखी धोवे मनवा के मइली ।।
कथी के रेहिया, कथी के घइली।
कवन घाट पर सउनन भइली।।
चितकर रेहिया सुरतकर घइली।
त्रिकुटी घाट पर सउनन भइली ।।
ग्यान के सबद से काया धोअइली।
सहजे कपड़ा सफेदा होई गइली ।।
कपड़ा पहिरी लछिमी सखी आनंद भइली।
धोबी घरे भेज देहली नेवत कसइली।।

भाग-3
भोजपुरी खेती-किसानी कविता में देशभक्ति

संतकाव्य परम्परा भोजपुरी में लगभग 1900 ई. सन तक चलल। सदी के अंतिम दशक में भोजपुरी का काव्यगत प्रवृत्ति में बदलाव आवे लागल। खेती-किसानी से जुड़ल बा पशुपालन। एह पशुपालन में गोवंश के महत्वपूर्ण स्थान बा। अंगरेज राज में कसाईखाना सब में गोवंश के बध होखे लागल। किसानी में गो पालन अर्थ व्यवस्था के रीढ़ ह। पं. दूधनाथ उपाध्याय गोवध के विरोध में कविता लिख के आवाज उठइलीं जे आंदोलन के रूप लिहल। उहाँ के किताब के नाम 'गो विलाप छंदावली' बा जे 1893 ई. में छपल रहे। आईं एगो छंद देखीं–

हमनी का गइया के दूध दही खात बानी
हमनी का गइये से सब सुख मिलता।
लड्डू पेंड़ा बुनिया बतासा दाल-भात सब
गइये के जरिये से सब कुछ बनता।
हर गाड़ी माटी सब बैल जोतत बाड़ें,
हमनी के सब काम गइये से चलता।
हाइ-हाइ ताहू पर हमनी का जीयते में,
हमनी का देखत कसाई जान मारता।

ई एक तरह से तत्कालीन सत्ता व्यवस्था के विरोध रहे। कसाईखाना में गो-बध से परम्परागत भारतीय अर्थ-व्यवस्था के रीढ़ तूड़ल जात रहे। 1857 ई. के पहिला संगठित संग्राम से स्वतंत्रता खातिर जुझार शुरू रहे जे 1900 ई. तक निलहा आंदोलन तक से देश भक्ति आ राष्ट्र प्रेम के रूप में लखार होखे लागल रहे। चंपारन में तीन कठिया कानून लागू रहे, मतलब कि बिगहा में तीन कट्ठा नील के खेती कइल जरूरी रहे। भोजपुरी साहित्य पर एह सबके प्रभाव पड़ल। शिवशंकर पाठक एह नील के खेती के परेशानी के बतावत एगो लमहर कविता लिखलें। कुछ पाँति देखीं–

रामनाम भइल भोर गाँव लिलहा के भइले। चँवर दहे सब धान लील गोंएड़े बोअइले।।
भई भैल आमील के राज प्रजा सब भइले दुखी।
मिल जुल लूटे गाँव गुमस्ता हो पटवारी सुखी।।

असामी नाँव पटवारी लिखे, गुमस्ता बतलावे।
सुजावल जी जपत करसु, साहेब मारन धावे।।
थोरिका जोते, बहुत हेंगवावे, तेपर ढेला थुरावे।
कातिक में तैयार करावे, फागुन में बोअवावे।।
जइसे लील दुपाता होखे, वोइसे लगावे सोहनी।
मोरहन काटत थोर दुख पावे, दोजी के दुख दोबरी।।

देश भक्ति भा राष्ट्रप्रेम के कवियन में बटोहिया के रचनाकार बाबू रघुवीर नारायण चाहे 'बटोहिया' गीत में चाहे 'भारत भवानी' में एह देश के भूँई आ होखेवाला फसल के गुण गवले बानी–

जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ,
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया!
(बटोहिया)

सूनसान अगम सघन बन गिरिवर,
आनन्द के उड़त निशानी मोरे जननी।
गेहूँ धान जामे रामा, सरसों विपिन फूले
सुख फूले मड़ई पलानी मोरे जननी।
जैति जै जै पुन्यधाम धर्म के अचल भूमि
जैति जै जै भारत भवानी मोरी जननी।
(भारत भवानी)

बड़का खेतिहर भा जमीनदार लोग के खेत में काम करेवाला दलित मजदूर के दुखी हालत के बारे में हीरा डोम के कविता देखीं–

हमनी के राति दिन मेहनत करीले जा
दुइगो रुपयावा दरमाहा में पाइब।
ठाकुरे जे सुख से त घर में सुतल बाड़ें
हमनी के जोति-जोति खेतिया कमाइब।।

अंगरेज राज में किसानी आ किसानन के

दुर्दशा पर मनोरंजन बाबू के लमहर विद्रोही कविता 'फिरंगिया' के पहिला छंद देखीं–

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा, आज
इहे भइल मसान रे फिरंगिया।
अन धन जन बल बुद्धि सब नाश भइल,
कौनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया।
जहँवा थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे
लाखों मन गल्ला और धान रे फिरंगिया।
उहें आज हाय रामा मथवा पर हाथ धरी
बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया।

कवि छांगुर त्रिपाठी 'जीवन' सुराजी लोग के जेल के जिनगी पर एगो कविता लिखलीं। जेल में चक्की चलावल एगो मुहावरा ह। चक्की गिरहथ के एगो औजार ह, जे कविता के आलम्बन बा–

सुराज धुनि बोलS, ए जेल जाँता!
लाल रंग गेहुँआ, सफेद रंग पिसना,
कपट दिल खोलS, ए जेल जाँता!
सुराज धुनि बोलS, ए जेल जाँता!!

देशभक्ति काल में किसानन के समस्या आ संकल्प कवि लोग उठावत रहल बा। महेन्द्र शास्त्री जी खेतिहर मजदूरन के समस्यो उठावत लिखले बानी–

जोतेला, बोवेला, काटेला, दाँवेला,
साँच साँच कह द, ऊ का पावेला ?
ओकरा मुँहे ना आहार बा।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन अपना नाटकन में कविता–गीत के संयोजन कइले बानी। छोटहन किसानन के समस्या पर उहाँ के नजर बा, ओकरा समस्या के आवाज देत लिखत बानी–

सांझ-बिहान के खरची नइखे,
मेहरी मारे तान।
अन्न बिना मोर लइका रोवे,
का करिहें भगवान।।
करजा काढ़ि-काढ़ि खेती कइलीं,
खेतवे सूखल धान।
बेंचि-बेंचि जिमदरवा के देलीं,
सहुआ कहे बेईमान।।

खेती–किसानी में परेशानी के हाल बयान करत रसूल मियाँ के गीत के अंश देखल जा सकत बा–

पत्नी–कहत रसूल, सैंया जइह मति भूल,
गहना गढ़इह बेलीफूल अगहनवा में।
पति–अबहीं बैल ना किनाइल, अबहीं
खेत ना जोताइल,
अबहीं बिआ ना बोआइल,
हमरा आवेला रोआई,
तहरा गहने सूझल बा।

किसान आ किसानी के महत्व बतावत कवि विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' किसान के दुरदसा के चित्रण करत बाड़न आ किसान खातिर सुख के कामना करत बाड़न–

भइया! दुनिया कायम बा किसान से।
साँचे किसान हवन तपसी-तियागी,
मेहनत करेलें जीव जान से।

जेठो में जेकरे के खेते में पइबS,
जब बरिसेले आग आसमान से।
झमकेला भादो जब चमके बिजुलिया,
हटिहें ना तनिको मचान से।

दुनिया के दाता किसाने हवन जा,
पूछS ना पंडित महान से।
गरीब किसान आज भूखे मरत बा,
करजा, गुलामी, लगान से।

होई सुराज तS किसान सुख पइहें,
असरा रहल ई जुगान से।
भारत के शैदा किसान सुख पावस,
बिनवत बानी भगवान से।

दुसरका विश्वयुद्ध के परिणाम से बेहाल आ अकाल के हालत पर श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' के कविता के अंश देखीं जब राशनिंग हो गइल रहे–

तउल लात मरलस ई रासन के घोड़ा।
ना लागल कहीं से सुराजी के कोड़ा।
बिलाइल कहाँ दो चुहानी के चाउर।
भले आज खुद्दी के लपसी बनइह।

हालाकि कई कवि लोग सरेह में लहरात फसलन के सुनरपन के अपना कविता में बन्हले बाटे। देखीं, परमहंस राय के कविता जवना में रब्बी फसलन से मनभावन लागत खेतन के देख के किसान के खुशी के अभिव्यक्ति बा–

चलीं जा आज गाँव के किनार में किछार में।
खेंसारी बूँट मटर से भरल-पूरल बधार में।।
पहिनले बाटे तोरिया बसंती रंग चुनरिया।
गुलाबी रंग मटर फूल सोभेला किनरिया
उचकि-उचकि के तीसी रंग चोलिया लजात बा।
सटल खेसारी नील रंग लहंगवा सोहात बा।।
ई गोर गोर गहुमवा संवरका बूंट संग में।
उतान हो के हिलत देखि नयनवा जुड़ात बा।।

खरीफ फसलन के जाड़ा में कटनी से गाजत किसान के मन के खुशहाली के बरनाका रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के कवितन में मिल जात बा। एह कविता में कटनी करेवाला बनिहारिनो लोग के सुधि कवि लेत बाड़न–

आइल पूस महिना अगहन लवट गइल मुसकात

थर-थर काँपत हाथ-पैर जाड़ा-पाला के पहरा
निकल चलल घर से बनिहारिन ले हँसुआ भिनसहरा
धरत धान के थान अँगुरिया ठिठुरि-ठिठुरि बल खात
आइल पूस महिना...

ढोवत बोझा हिलत बाल के बाज रहल पैजनियाँ
खेतन के लछिमी खेतन से उठि चलली खरिहनियाँ
पड़ल पथारी में लुगरी पर लरिका बा छेरियात
आइल पूस महिना...

तब के शाहाबाद जिला में सिंचाई वास्ते नहर बनल रहे। बाकिर ओकरा खातिर जवन राजस्व देवे के पड़त रहे, ओह हलकानी के हाल कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के कविता में देखल जा सकत बा–

मुअल धान तब पाटल किआरी,
तवनो पर लागल ह चोरकारी।
खेतिया मरइली इजतिया भारी,
खेदले फिरत बाटे मेट।
हाकिम चाहत बा चाउर धनवा,
अन बिनु एने नाचत परनवाँ।
हँकरे करज पोत परोजनवाँ,
पीठिया में सट गइल पेट।
दादा आइल नहरिया के रेट।।

भाग-4
प्रकृति आ भोजपुरी खेती-किसानी कविता

सन 1948 ई. से लेके सन 1977 ई. तक भोजपुरी साहित्य में विविध विधा के विकास होत बा। जहाँ तक काव्य के सवाल बा, प्रबंधकाव्य (महाकाव्य आ खंडकाव्य), गीत, नवगीत, नई कविता (छंदमुक्त) आ गजल वगैरह एह कालावधि में लिखाइल। कथ्य के संगे-संगे शिल्प बदलल। लोकधारा के भोजपुरी काव्य हिंदी कविता में आ रहल परिवर्तन से प्रभावित रहे आ कवि लोग हिंदी के बराबरी में भोजपुरी काव्यधारा के खड़ा करे में कृत संकल्पित। गीतकार लोग उत्तर छायावादी कविलोग के प्रभाव में भोजपुरी में गीत रचना कइल। ई लोग प्रकृति के आलम्बन ले के आपन गीत रचत रहे। एह काल में प्रगतिवादिओ काव्य रचल जात रहल। खेती गृहस्थी प्रकृति पर आधारित होला, एही से सोभाविक रूप में गीतन में खेती किसानी के बात मिलत बा।

मोती बी ए के रचनन में साधारण किसान आ मजदूर परिवार का घर के चित्र देखे लायक बा जे प्रकृति प्रदत्त महुआ के इस्तेमाल से घर के भोजन चलावत बा-

अइसन नसा झोंकलसि कि गदाए लागल पुलुई
पोरे-पोरे मधु से भराये लागल कुरुई
महुआ अइसन ले रेंगरइले,
जरी पुलुई ले कोंचइले
लागल डाढ़ी-डाढ़ी डोलिया कहार सजनी
अबकी आइल महुआ बारी में बहार सजनी

***

सँइया खातिर बारी धनिया महुअरि पकावेली
केहू बनिहारे खातिर तावा पर ततावेली
महुआ बैल प्रेम से खावें, गाड़ी खींचे जोत बनावें
ई गरीबवन के किसमिस अनार सजनी
अबकी आइल महुआबारी में बहार सजनी

फसल अच्छा भइला से किसान तरह-तरह के सपना सजावेला। कई गो सोंचल बात आ जरूरी काम फसल के बले पूरा करे के ओकर उमेद जागेला। जातिगत पेशावालन के ओह फसल में हिस्सा होला, ओकरो आसरा लागल रहेला। मोती बी ए जी ओहू विषय पर लिखले बानी-

खेत-खेत घूमेला तेली-तमोली
नउवा आ धोबिया के निकलल बा टोली
पवनी-पँवरिया चलेलें अगरा के
सुनS तारु लोहरा आ कोंहरा के बोली
भइले गँवार सरदार हो सजनी कटिया के
आइल सुतार

रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' प्रगतिवादी रचनाकार रहीं। आजादी के लड़ाई में उहाँ के रचना त घर-घर गूँजबे कइल, आजादी के बादो जन समस्या के ले के रचनारत रहीं। छोटहन किसान आ मजदूर के साथ जमींदार-साहूकार के अत्याचार पर उहाँ के कविता के बानगी देखल जा सकत बा-

खेतन में मर-मर के उपजवनी कन-कन
हम रहनी फोकट में तू भरल मन-मन
* * *
जइसे-जइसे गिरत गइनी मारत गइल हन-हन
जइसे-जइसे उठत जाइब भागत जइब दन-दन

धरती के असली राजा त किसाने ह जे अपना मेहनत से धरती के, खेतन के हरियर बनवले रहेला। जन-जीवन के असल प्रतिपालक त उहे ह, बाकिर ऊ अचेत बा। प्रभुनाथ मिश्र के कविता ओकरा के जगा रहल बा-

मेहनत से थाकल,
धरती के राजा सुतल अचेत में।
बाइ जगावत जुग कबसे,
ना आइल अबहीं चेत में।
जन-गन-मन के प्रान,
रतन के खान उगल जल-रेत में,
बाटे हँसत भाग,
भारत के, हरियर-हरियर खेत में।

किसानी जीवन का कठिनाई के बहुत नियरे से अनुभव कइले बानी कवि राम जियावन दास बावला जी-

मकई जोन्हरी बजरा अउर उतइला फसिल मरइली
उखिया भी दुखियारी जइसन, दुबुकि-दुबुकि के भइली
भदई फसल विकास न कइलस, मन में बड़ा गलानी
अबकी झूम के बरिसल पानी

भोलानाथ गहमरी सीमा पर लड़ेवाला जवानन के संगे खेतिहर किसान के जयकारा मनावत बाड़न जे खरिहान में अनाज के भांडार भरत बा-

चप्पा-चप्पा धरती पर बा सजग मोर रखवरवा
ओकरे पीछे आज सजग बा दूनों हाथे हरवा
होइहें गाँव-गाँव के धरती पर अब खाली ना खरिहान
जय जय दाता हो किसान !
जय विधाता हो जवान !!

खेती में सोहनी एगो जरूरी प्रक्रिया ह, जवना में फसल के बीचे उग आइल खर-पतवार, मोथा-दूब खुरपी से सोह के निकाल दिआला, जवना से तनि माटियो उलटि-पलटि जाला। जगदीश ओझा 'सुन्दर' के सोहनी गीत से दू गो चित्र देखीं-

रहि रहि खेतवा में झनकेली चुरिया,
सोहनी के अइली बहार !
सगरे सरेहिया में उगली हरियरी,
रहि रहि सनेहिया में सींचेली बदरी,
बेनिया डोलावेली पूरबी बयरिया,
रसवा के छोड़े फुहार। सोहनी के...

नन्ही नन्ही खुरपी के लंबी लंबी बेंटवा,
ननदी भउजिया निरावेली खेतवा,
नई रे उमिरिया लुगरिये में ढाँकल, बतिया
से छलके दुलार। सोहनी के...

उत्तर छायावाद के प्रभाव में कविता करेवाला कवि अनिरुद्ध जे प्रकृतिवादी रहलें। उनकर प्रकृतिवाद खेती किसानी से जुड़ल रहे आ खेती किसानी के श्रम से जुड़ के सौन्दर्य, सुघरपन प्रकट करत रहे। हर ऋतु के वर्णन के साथ ओह ऋतु में होखेवाला कृषि कार्य के चित्रण आ खेती किसानी के विविध रूप- हरवाही, हेंगवाही, रोपनी, कटनी, दउनी, ओसवनी के विविध चित्र अनिरुद्ध के किसान कवि के छवि गढ़त बा। कुछ नमूना देखीं-

कान्हा पर दुनिया के थम्हले आवत बा हरवाहा
गाय भँइसिया हँकले आवत, गँउवा के चरवाहा
* * *
बदरा के सीतल छँहिया गहि गहि बँहिया
नाचत चरवाहा
चुअत पसेना भींजल धरती जोत रहल परती
हरवाहा
* * *
रिमझिम बरसे कारी बदरिया,
कजरी के तान हो, सजनिया रोपे धान

* * *

हालि हालि मिलिजुलि काटेली कटनिया
हँसुआ चलावे हँसी करे महरनिया

* * *

सोना के माटी बा मोती पसेना,
लागे नजर ना महलिया के टोना
भूँसा उड़त सब गँउआ लुटावे,
सोना के लागल पहाड़, गे सजनी

* * *

बैला पिअत सिव माहुर जहरिया,
भरि जाई जउआ गेहुमवा बखरिया।
सोना के सागर मथाइल लछिमिया
चमके रतनवा अपार, दउनी करब त्योहार।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह दँवरी के एगो दृश्य खड़ा कइले बानी, जब खरिहाने रब्बी आ खरीफ फसलन के बैलन के द्वारा दाँवल जात रहल ह–

गँउवा से दूर कतो नाधल दँवरिया प
बैलन के पीछे बनिहार
पुरवा में कबहूँ ना होखेला दँवरिया रे
पछेया में साँसत तोहार
करम के दोष नाहीं देला बनिहरवा रे
बैलन पर गाँठे ऊ सान
ठीक दुपहरिया बहेला पछिमहवा लेई के
अगिनिया के बान

डॉ. जितराम पाठक भोजपुरी में नया भाव बोध के छंदमुक्त कविता लिख के नई कविता धारा चलावेवाला कवि रहीं। किसान के परेशानी के देखे समझे आ ओह के अभिव्यक्त करे के नवचेतना देखीं–

खेत के मुआर छिलातिया/ जइसे छूरा से / कपार के बार छिलाला, / पइनि-अहरा-नहर / नेता लोग के बात लेखा / खाली बा / अकाल के उदन्त भँइसा / चरि गइल फसल, / किसान हाथ मींजता, / अब बेटी के गवना के नियार/ फेरे के परी, / पेटो खातिर / कवनो साहू हाकिम के/ उटकेरे के परी, / धीया के लुगरी/ अबकी अगहने झाँवर हो जाई, / ओकर सोनहुला रंग अवरु झाँवर हो जाई, / दियरी के बाती, / छठि के अघरौटा / बिसुखि गइल/ राकस नियन मुँह बवले / महँगी के काल आइल बा /अनेरे लोग कहत बा अकाल आइल बा।

कविवर जगन्नाथ त अइसे एह काल खंड में गजल के प्रवर्तक मानल जाइले, बाकिर उहाँ का गीत कविता कम नइखीं लिखले। 'पाँख सतरंगी' के कवितन से दू गो बानगी इहाँ देखीं, जवना में खेती किसानी से उहाँ के लगाव झलकत बा–

संगी हर बैल हमार सदा,
संगी खुरुपी हँसुआ कुदार;
लमहर जिनिगी का रस्ता में,
बाटे अतने थाती हमार।
निकसे हियरा से धुन निसदिन,
माटी के जय-जय-कार के।
हम राही आर डँड़ार के।।

* * *

गाँजि-गाँजि पँजिया के कसली जेंवरिया
बोझवा ले मथवा प धइली डहरिया
देखि खरिहनवाँ के हुलसेला मनवाँ
उमड़े सनेहिया अपार
कटनी के आइल बहार

लोकगायिका विन्ध्यवासिनी देवी गीत रचतो रहसु। धनकटनी के बहार उनकर मशहूर गीत ह जे आकाशवाणी से गूँजत रहे–

धनकटनी के बहार अगहनवा में
बोझा बान्हल बाटे धान,
मन गाजत किसान
देखि भरल खरिहान अगहनवा में

वामपंथी लोग के विचार आ सिद्धांत के अनुसार जवना धरती पर जे किसान मजूर अपना मेहनत से अन्न उपजावत बा, ओह धरती पर ओकरे अधिकार होखे के चाहीं, जमींदार के ना। बाकिर अइसन नइखे। मेहनत करेवाला, अन्न उपजावेवाला के हालत खराब बा। कवि गोरख पांडेय एही सवाल के उठवले बाड़न आ हक लेवे के बात करत बाड़न–

जाड़ा गरमी बरखा न जनलीं
गोहूँ ओसवलीं त भूसा बनलीं
काहे बरध सब खेतवा चरलें
हम भइलीं कउड़ी के तीन।
केकरा नावे जमीन।।

खून-पसेना नगरिया लूटल
लखि-लखि धीरज के बन्हवा टूटल
अब हम किसान मजूरा मिलके
हक लेइब चोरन से छीन।
केकरा नावे जमीन।।

धरती पर झुक के धान रोपत किसान का जब आसमान में करिया बादर देखाई देला त ओकरा खुशी के ठेकाना ना रहे, एह दृश्य के समेटले बानी रमेश चंद्र झा अपना कविता में–

धनखेती में झुकल किसानन के हियरा हरिआइल
आँख उठा के कहलस कइसन कठजमुनी करिआइल
रिमझिम रसबुँदिया में भींजल आखर पड़ल परतिया
आसमान पर जा के नाचे लागल जरल धरतिया

बासंतिक काल में फसलन के बहार देख के कवनो विधवा के बिरह बेदना बढ़ जात बा। विप्रलंभ श्रृंगार के आलंबन के रूप में फल-फलहरी आ फसलन के बहार के चरचा मदन प्रसाद जी एह तरह से कइले बानी–

हरियर-हरियर जौ चन्ना सखि हरियर मटर-खेंसारी
सरसों झूमत फूल सहिते,
झूमत रहर बेचारी
जल में जलकुम्भी,
करमी के अलग सजल फुलवारी
फूल फुलाइल बा फुनुगी पर निरखि-निरखि
हम हारीं

किसान परिवार का कबहूँ फुरसत ना रहे, हरदम भिराह, काम ना उसरे। एह बात के अभिव्यक्त कइले बानी गाँव-गँवई के जीवन के गीत लिखेवाला एन्थनी दीपक जी–

दौनी ओसौनी के लागल बा भीरिया
खरिहानी मरद घरे नाच रहल तिरिया
दिन बीते चिटुकी में उसरे ना धंधा
बिसरे ना कौल कहीं, मेहरी के किरिया

बढ़िया से खेती के काम निबट जाला, धान रोपा जाला, धनखेत में पानी लागल रहेला, बैलन का आराम मिल जाला त रामबृक्ष राय 'विधुर' के कविता में लिखलका अस किसान के मन प्रसन्न हो जाला–

बैला बइठल पगुरी गाँठे, गइया करे चराउर
खेत-खेत में कइले बाटे पनिया खूब हिराउर
बछड़ा घुमड़े द्वार-द्वार पर
लउके सभे अघाइल रे

खेत में लहरात फसल के देख के कतना खुशी होला, ई डॉ. लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी के कविता

में देखल जा सकत बा–

तीसी हरियर पहिन चुनरिया,
झुँकि झुँकि झाँके नीली पुतरिया।
सुबरन किरिनिया ओहार ओढ़ावे,
देखि देखि मन माकल।
जउवा-गेहुँवा चँवर डुलावे।
रहिला के छेमिया झुकि झुकि गावे।।
चढ़त बइसाख धनि हँसुली गढ़इबो,
गोरिया अँगनवा बिहँसे लागल।।

सूर्यदेव पाठक पराग जी अपना कवितन में किसानन के दिनचर्या के बरनन करत बानी। देखीं एगो अंश–

घरी भर राते उठि बैला खियाइले,
कन्हवाँ पर हर लेले खेतवा में जाइले
घर भर साथ मिलि करीले बोअनिया
थकलो के रहे नाहीं ध्यान, मोरे भैया हो,
हम हई देस के किसान

डॉ. स्वर्ण किरण आम आदमी के छटपटी, आक्रोश, कुंठा, घुटन वगैरह के परगट करेला खेती-गिरहथी के आलम्बन लिहले बानी–

पिलुआइल सेम, कदुआ / भा कोंहड़ा के सब पात / मुँह फेंकराइल, अँखिया उतरल / कइसन ई उत्पात। / टंगल कंठ /असरा के सिकहर। पानी सूखल जात / काँदो कहाँ कि गाड़ी अँटकल / के मारत बा लात।

निबरखन किसान खातिर हलकानी के कारण हो जाला। ओकर भविष्य अन्हार बुझाए लागेला। पानी बिन धनखेती सूख रहल बा त लोकज संवेदना के कवि हरिराम द्विवेदी के कलम कुहुके लागत बा–

सूख गयल खेतवे में धान
पिया दिन कइसे कटी
आज पतवे पर अटकल परान
सौना भदौना गयल बिन पानी
अधजल में मुरझाइल सगरी किसानी

किसान का आराम कहाँ बा, ठेठुरावत जाड़ा होखे, देह जरत गरमी कि बरखा के बौछार, किसान का त खेत में काम करहीं के पड़ेला। मुफलिस जी लिखले बानी–

आन्ही चले, लुक चले,
तबो हम काम करीं
पानी परे, ओला गिरे
तबो नाहीं घर धरीं
चाहे आवस कवनो तूफान।
हई हम दुखिया किसान।।

बिनय राय (बबुरंग जी) किसान के मेहनत मशक्कत के बारे में कुछ एह प्रकार लिखत बानी–

फरुसा उठाइला, उठाइला कुदरिया
कोड़ि-कोड़ि खेतवा बनाइलां कियरिया
रहि रहि उभरेला देहिं के दरदिया
कबो उगे घाम कबो सरदे सरद बा
देहियां के दुनिया में दरदे दरद बा

नवगीत के सशक्त हस्ताक्षर परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' खेती गिरहथी के विम्ब उठा के जीवन के विसंगतियन के उजागर कइले बानी–

पछेया ललकरले बा चइता खरिहानी में
थिरकत बा नटवर के पाँव
आम के टिकोरा पर सुगना के डीठ
टिसुना अबाटी बा अतुना ना ढीठ
लड़िका बड़ेरा के संग-संग धावेला
दँवरी में नाधल बा गाँव
थिरकत बा नटवर के पाँव

भाग-5
भोजपुरी कविता आ बदहाल खेती-किसानी

सन 1978 ई. से 2000 ई. के बीच भोजपुरी कविता कथ्य आ शिल्प में बदलाव के साथ बिकसित होत रहल आ ओकर स्वर जन सरोकारी रहल। खेतियो-किसानी के लेके कथ्यगत बदलाव जारी रहल। आनंद संधिदूत जी कविता में खेती के आलम्बन ले के जीवन के सच्चाई बयान करत बानी–

मुट्ठी भर बीया के हो गइल तबाही
आसा के खेती में लागल बा लाही
आँखी से आँसू ना गिरल करे ठार

किसान करजा ले के खेती करेला। खेती पूरा ना भइला से, फसल बढ़िया ना भइला से ओकरा पर करजा के भार बढ़ते जाला। एही बात के बयान अशोक द्विवेदी के कविता में देखल जा सकत बा–

बोझा ना कबो हलुकाइल संघतिया,
कबहूँ ना पलखत भेंटाइल।
काँचे कुँआर हर कान्हे चढ़वलीं
बीया आ खाद बदे कर्जा बढ़वलीं
आधा तिहा खेतवा बोआइल संघतिया
बाकिर ना भीरिया ओरिआइल

किसान के विपन्न अवस्था के चित्रण विपिन बिहारी चौधरी के कविता में मिलत बा–

तनवा उघार बा, कमर लंगोटी,
मिलत न दुनू जून बा रोटी।
भूख से बिलुखत सूतल बाड़ें
एने बेटा, ओने बेटी।
ओ बेटा के करुण कहानी
सबके आज बतावे द।
माटी के गीत सुनावे द।।

किसान के विकास खातिर सरकारी घोषणा त होते रहेला, बाकिर किसान के हाल त बदहाले रहत बा। अनिल ओझा नीरद लिखत बाड़न–

जग के खिआई हम रहिला उपासे
जिनगी किसनवन के अबहूँ उदासे
कहे सरकार हमनी आगे बढ़तानी राम!

एही बात के जनवादी कवि रजनीकांत राकेश एह ढंग से कहत बाड़न–

तोहरे कमइया से देस दुनिया खात बाटे
तवनो पर तोहार होखे अपमान रे किसनवा
तोहरे मेहनतिया से ई घरवा भरत बाड़ें
तोहरा के देख नाहीं कुछो मिले रे किसनवा

सोमनाथ ओझा 'सोमेश' निबरखन के कारण

धान के फसल के क्षति पर लिखत बाड़न–

खेतवा में खाड़ धान लोरवा बहावे।
धरती के दुख रोई तोह के सुनावे
राजा इन्दर हो!
ताके आसमान में किसान

गंगा प्रसाद 'अरुण' के निबरखन के ले के चिंता कुछ एही प्रकार के बा, देखीं–

रुसल गोसइयाँ देवा देवी,
उदसल बरखा रानी
का जाने कब ई खेतन में
बरसी सोना चानी

निबरखन के लेके कुमार विरल नूतन कथ्य आ शिल्प के जरिये कहत बाड़न–

बैला ताकत बाटे एगो मुँह दोसरा के
डोभी सूखल जा ता गते गते टोपरा के
मैना बोलल बहुते रो के
कुछो पइबS ना अब बो के
पानी सूखल जा ता गते गते पोखरा के

हरीन्द्र हिमकर जी किसान परिवारन के हरख विसाद के अपना कविता आ नवगीत में जगह देत रहल बानी–

धनखेती में फूटल सोना
रुपनी बइठल बीनत मोना
जाँता से जिनगी लपटाइल
छंद झर रहल घर का कोना क

हरित क्रांति आ सफेद क्रांति बस नारा आ भाषण हो के रह गइल आ जवन पहिले से मिलतो रहे उहो कवनो कंस मामा कि शासक पी गइल। हिमकर जी एगो कविता में एह बात के उठवले बानी–

हरित क्रांति के बोलावे में / पानी के नदी, दूध का नदी में / बान्ह तूर के समा गइल / आ सफेद क्रांति में त / देश का बथानन से, / सगरी गाय-भंईस बिला गइल।
दूध-पानी फरिछावत में / पानी के दूध / आ दूध के पानी / गटागट पी गइल कवनो कंस / मेटा गइल देस के/ सगरी पहचान, / बदल गइल / सबके सब चिन्हासी

कवि कुमार अरुण का खेतन में काम करेवाला, आपन जांगर ठेठावेवाला मनई पसन पड़ेलन आ ऊ एही बात के अपना कविता में विषय बनवले बाड़न–

अगिआइल करकस घाम में / बैलन का खूर से उठल धूर का पाछे-पाछे / माटी का बड़हन-बड़हन चेकन पर / एने-ओने नवत-नेवर होखत / टेढ़ामेढ़ी लाइन के कगरी पर सम्हारत, बे-अगुतइले / आस्ते-आस्ते पोख्ता डेग धरत चलेलन-/ हमरा कमासुत जँगरगर लोग नीमन लागेलन।

वामपंथी विचारधारा के पोढ़ कवि सुरेश कांटक जी मंदिर मस्जिद के झगड़ा का फेरा में ना पड़ के खेती-किसानी के काम करे के सीख देत बाड़न–

हमनी खातिर /हँसुआ-कुदरिया / बड़ा काम के बा गजाधर भाई ! /
बचाईं जा एकरे के / इहे ह हमनी के चारो धाम / मंदिर-महजिद गजाधर भाई, /
डाल२ बीया/ फुलावS मत गोड़-हाथ / टराये द कउअन के / बेंगन के /
टिटिहरी के होखे द उतान /समय के हाथ में / बरियार डंटा बा गजाधर भाई /
आई जरूर सावन / झमाझम बरिसी / गाई नाच-नाच के कजरी/फुलाई सपना /
गोटाई आपन फसल/ चलS उठS नाचS / बछरुन के कान्ह प दे के जुआठ।

जितेन्द्र कुमार जी के चिंता कृषि के मशिनी जुग में प्रवेश के कारण पशु पालन आ खेतिहर मजदूरन के रोजी पर पड़ रहल मार पर बा। एही कथ्य पर एक कविता के दू अंश इहाँ बिचारे लायक बा–

दस बरिस पहिले / गांव में मनराखन साव के/ ट्रैक्टर आइल /
ओही घरी/मामा के दू बैल के खेती टूटल/ दूनों बैल बिकाइल /
तबहीं से दूनों खूंटा उदास भइल।
* * *
पछिला साल मामा के गांव में / हार्वेस्टर से धनकटनी भइल ह /
मामा के उदासी बढ़ गइल बा / मशीन कुल्हि काम करी/
खेत जोती, कटनी करी, ओसवनी करी / गांव के लोग का करी ? /
गांव के गरीबन के जिअल मोस्किल बा।

तीख तेवर के कविता-गीत-गजल लिखेवाला बरमेश्वर सिंह बड़ जोतदारन के इहाँ काम करेवाला खेतिहर मजदूरन के बदतर हालत के बयान कइले बाड़न–

मालिक के खेतवा में भँजलीं कुदरिया
धान-गेहूँ-चनवा से भरलीं अटरिया
रतिया के पहरो पर सुतलीं दुअरिया
हमरा करमवाँ में तबहूँ खेसरिया
जगवा में बँधुआ कहइलीं
भरपेट कबहूँ ना खइलीं

किसानी पर प्राकृतिक आपदा भारी पड़ जाला। करजा काढ़ बीया, खाद, पानी के जोगार करके तैयार फसल आन्ही-पानी, ओला- पत्थर से जब बरबाद हो जाला तब किसान पर का बितेला, उहे जानेला। कमलेश राय जी एही बात के अपना गीत के विषय बनवले बानी–

घिरि-घिरि आवे कारी-कारी रे बदरिया
हाथ जोरि कलपे किसान
हे विधिना खेतवे में पसरल परान
घहरि-घहरि जब चमके बिजुरिया
अल्हरे करेजवा पर चले जइसे छुरिया
आन्ही-पानी संगवा जो परिहें पथरवा
होइहें जजतिया जियान

कन्हैया पांडेय के सवाल किसानी कइला पर बा, काहे से कि ई घाटा के रोजगार बा–

कबहूँ सूखा बाढ़ सतावे,
सबका के कंगाल बनावे।
कई-कई दिन ले फाँक कटाला,
खटलो पर ना अन्न भेंटाला।
केतना जर्जर भइल जवानी,
का करबS हरदेव किसानी।

आषाढ़-सावन वाला खेती बरखा पर निर्भर करेला। समय से जरूरत भर, ना कम ना बेसी बरखा होला त किसान के मन खुशी से भर जाला। हरेराम त्रिपाठी चेतन लिखत बानी–

हिय में कसक जगाइ,
रूप के लोभ उगावे मन-मन में
कृषक-नयन-दीया बनि आइल
बरखा के पहिला पानी

जब बरखा बरस जाला तब सरेह के सुघराई

बढ़ जाला। एह सुघराई के अपना आँखि में जगदीश पंथी उतार लिहले बानी–

कास रहल गदराय मेंड़ पर,
खेते-खेते पानी।
ऊसर बंजर में लहराये
चूनरिया फिर धानी।।

किसान के क्रिया कलाप से ऋतु परिवर्तन के जानल जा सकत बा। वर्षा बीत रहल, शरद आ रहल बा, वंश नारायण सिंह मनज लिख रहल बाड़न–

भरकल बधरिया डहरिया सुखाइलि
साँवर सरेहिया के देहियाँ गोराइलि
हरवा बन्हावे जो किसान, त जनिहS सरद रितु आइल

भाग-6
भोजपुरी खेती-किसानीः समकालीन कविता

सन 2001 ई. से भोजपुरी कविता के समकालीन काल मानल जा सकत बा। एह काल में पिछला काल के कई कवि सक्रिय बाड़न। पिछला कालावधि के लिखल कवितन के प्रकाशन एह कालावधि में संभव भइल बा। कई नया, बाकिर सुधी लिखनिहार लोग एह कालावधि में सोझा आइल बा। एहू कालावधि में सार्वजनिक भइल कवितन में कवि लोग खेती-किसानी से जुड़ल समस्यन के अपना कविता के कथ्य बनवले बाड़न। आसिफ रोहतासवी जी अपना गजलन में घर परिवार से ले के खेती के समस्या तक के विषय बनवले बानी। आज जवना तरह के समस्या पैदा भइल बा ऊ साफगोई से गजल में उहाँ का कहले बानी–

आपुस में टेंसन बा फिर हमरा गाँवे
खेत जरी खरिहान बुझाता बाबूजी

* * *

जाती-पाती, पट्टीदारी, पटवन के पानी खातिर
पुरुब पच्छिम के टोलन में आजो गाँव बँटत होई

* * *

हमरे माटी से उपराजल पर सब मस्ती मउज बा
बाकिर हमरे जिनिगी बीते करजा पइँचा रीन पर

एह कालावधि में गोरख प्रसाद 'मस्ताना' छपित रूप में सोझा अइलें। कुछ पहिले से मंच पर सोहरत मिले लागल रहे। भला उनका नजर से खेती किसानी करेवाला के हालत आ मेहनत कइसे ओट पड़ जाई–

भूख के सूतल दबा के रात भर जे पेट में
जागते हर बैल लेले चल पड़ल उ खेत में
बीज धीरज धरम के धरिया गइल चिरई
चोंच में सूरज दबवले आ गइल चिरई

फसल अच्छा होई, अबकी अच्छा ना भइल त अगिला अच्छा होई, करजा उतरी, एही असरे किसान आपन जान धुनत रहेला। शंभुनाथ उपाध्याय लिखत बानी–

हेंगा कुदारी कूँड़ी बरहा बा माथे
लाठी बा कान्हे ले ले हाथवा के हाथे
लड़े जड़वो से चलेले किसान।
बरहा से हाथवा के रेखा मेटाइल
जिनिगी के सगरी कमइया लुटाइल
तबो खेतवे में बसे परान।
पनिया मे खाड़ भइल रहेले उघारे
करजा के बोझ हटी मन में बिचारे
असो साहू जी के होई भुगतान।

किसान के किसानी बदरा के असरा पर टिकल होला आ हर मौसम में ओकरा सरेह में घाम, बदरी आ जाड़ में तपसेया करे के पड़ेला। एह बात के शिवजी पांडेय 'रसराज' अपना दोहा के जरिये बतवले बाड़ें–

हवा बहल, उड़िया गइल, बदरी रुई समान
तरई गिनते रह गइल, सँउसे रात किसान
तपसी बनल किसान बा, सहि सहि जाड़ा घाम,
खून पसेना देइ के, करे काम निस्काम

किसान के चिन्ता के एक अउर कविता में अभिव्यक्त करत ऊ लिखत बाड़न–

खाद बीया डीजल महँगा बा,
मँहगाइल बा पानी
बदरा के ना चाल बुझाला, करेला मनमानी
खेतिहर सोचेले किसानी कइसे होई भाई जी

कुछ एही तरह के चिंता अवध बिहारी अवधू व्यक्त कर रहल बाड़न–

डीजल के दाम आज छूए आसमानवाँ त
टेकटरवाला करे महँगे जोतनिया
खदरा के दाम सुनि कपरा टनकि जाला
महँगे मिलेला पम्पिंगसेटवा के पनिया
बीआ के बजरिया में अगिया लगल बाटे
दिने दिन बढ़े बनिहरवा के बनिया

छोट जोतदारन आ खेतिहर मजदूरन के हाड़ ठेठवलो के बाद फसल पर हक नइखे बनत, ओकर हकदार दोसर केहू बन जात बा। किसान आ मजूर मजबूर बनल रह जात बा। श्रीभगवान पांडेय निरास एही बात के अपना गीत में जगह देले बानी–

के घामा में देंहि जरावे
जाड़ा गरमी हाड़ ठेठावे
सींच सींच के के लोहू से
माटी में सोना उपजावे
जे सभका के अन्न खियावे
ऊहे पत्तल चाटे
भइया, के बोवे के काटे

कातिक महीना खेती किसानी खातिर बहुत भिड़ाह होला। रब्बी के बावग खातिर खेत के तैयारी। अगता गेहूँ मटर चना के बावगो होला आ खरीफ के कटनियो चलत रहेला। एही सब बात के ले के राम बदन राय जी कातिक महिमा बखान करत बानी–

कातिक किसान क कर्म भूँई
कातिक किसान क रंग भूँई
कातिक गोहूँ कातिक गुलाब
कातिक जिनिगी क जंग भूँई

जब रब्बी तैयार होला, ओकर कटनी लागेला, खेत से खरिहाने बोझा ढोआए लागेला त

किसान मजदूर मजदूरिन के शरीर के सुघराई भावे लागेला। एह बात के अँखियान रामबदन जी कइले बानी–

कहीं लतरी मसुरी चाना बा
गोहूँ काटऽ मनमाना बा
सिर बोझा दिवानी का पीछे
काँवर लिहले दिवाना बा
सिर बोझा गरमी घामा में
गोरिया दुलके दोगामा में
हचके कुल्हा दायाँ बाया
जस अँइजन चले मोकामा में

अपना पहिला कविता संग्रह से सोहरत पावेवाला कवि प्रकाश उदय के कविता हमेशा जनसरोकारी होला, त भला मेहनतकश किसान उनका लेखनी में काहे ना आई। खेतिहर पति–पत्नी के राति में सूते बेर के बतकही ओकरा मेहनती जिनिगी के बयान बा–

आहो–आ से/ रोपनी के रँउदल देहिया /
साँझही निनाला, / तनि जगइहऽ पिया/
जनि छोड़ि के सुतलके सूति जइहऽ पिया/
आ हो–आ–हो / हर के हकासल देहिया/
साँझही निनाला/ तनि जगइहऽ धनी /
जनि छोड़ के सुतल के सूति जइहऽ धनी।

संध्या सिन्हा नारी विमर्श के कवयित्री हई। खेती–किसानी में लागल नारियन के मेहनती जीवन भला उनका कवितन में काहे ना आई–

हवा बसंती / ले उड़ल ओढ़नी । हो
ओसवनी / धरा लजाली/ कृषक साँवरिया/
नाचे हँस के / हँसे खिल के / नयकी
दुल्हिनिया / झरना झरे / रोपनी गावे /
लचक के भउजी / श्रम सजावे।

मनोज भावुक पिछला सदी के अंतिम दशक से भोजपुरी साहित्य सिरिजन में लागल बाड़न। खेती, खेतीहर आ मजूर के बेहाल जिनगी पर उनकर नजर बा। ऊ दोहा में कहत बाड़न–

कृषि प्रधान देश हऽ आपन हिन्दुस्तान।
जहँवा बा सबसे दुखी सबसे विवश किसान॥

धूर फाँक के बड़ भइल बाटे जवन किसान।
ओकरा से का लड़ सकी आँधी आ तूफान॥

भावुक हमरा पास बा बावन बिगहा खेत।
बाकिर कवना काम के जब सब रेते रेत॥

भावुक जी जैविक खेती पर बल देवे वाला गीत लिखले बाड़न जवन प्रचारात्मक बा। ऊ फसल बढ़िया होखे के कामना वाला गीत भी लिखले बाड़न।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के कवितन में खेती किसानी के समस्या जगह–जगह पर उठल बा–

नहर में पानी नइखे बन्हवो सुखाइल
धरती के पनिया पताल में पराइल।
सूखल जाता सगरी इनार हो
रोपनिया कइसे फानीं मितऊ

कनक किशोर जी के हालिया छपल कविता संग्रह 'अन्हरिया–अँजोरिया' में किसान केन्द्रित कुछ दोहा आ कविता छपल बा, जे किसान के त्रासद स्थिति के चित्रण करत बा–

नयका हाइब्रीड बीज / के चक्कर में /
किसान बीज पैदा कइल /
भुला गइल। / खेती बैपार ना बन सकल
/ ना खेतीहर बैपारी /
बाकी कर्ज माथे चढ़ल / क्रैडिट कार्ड /
घरे आ गइल।

एह कालावधि में किसान पर केन्द्रित कवितन के संग्रह लेके आवेवाला कवि बाड़न संजीव कुमार त्यागी। खेती किसानी के महत्व दशार्वेवाली किताब बाटे–'ए सरकार हम किसान हईं'। किसान के वास्तविक स्थिति का बा इनका शीर्षक रचना में मिलत बा–

कहे अन्नदाता सब हमके,
नित–नित नव जसगीत रचावे।
जय किसान भाषण में बोले,
धरती के भगवान बतावे।
नारा भाषण कविताई में,
जे हमरा के पूज्य कहेला,
उहे लोग सोझाँ परला पऽ,
खेतिहर सुनते मुँह बिजुकावे।
डेग–डेग पर होखे वाला,
सनमानित–अपमान हईं हम।
बखरा में अन्हियारी ढोवत...
ए सरकार किसान हईं हम

एह प्रकार से देखीं त लोकवार्ता से ले के समकालीन साहित्य तक कवि लोग खेती किसानी से प्रभावित रहल बाड़ें। लोकगीतन में खेती किसानी करेवाला लोग के बरखन–निबरखन के समस्या बा, इनर देवता से पानी के गोहार बा आ फसल बढ़िया होखे के चिंता बा, सूक्तियन में खेती आ पशु–पालन खातिर सबक शिक्षा बा, बुझउअल में खेती,फसल, अनाज आदि के जरिये बुद्धि परखन के बात बा, त खेती के बात के जरिये मुहावरा से भाषा के व्यंजना शक्ति बढ़ावे के काम भइल बा। संत काव्य परम्परा में खेती गिरहथी के बात के जरिये अपना आध्यात्मिक साधना के दर्शन जन सामान्य तक पहुँचावे के कोशिश बा। राष्ट्रीय धारा के काव्य में खेती आ पशुपालन के नष्ट करे के विदेशी शासकन के कोशिश के खिलाफ आवाज उठवला के साथे, किसान राज बनावे आ किसानी के समस्या उठावल गइल बा। रचनात्मक काल में प्रकृति प्रेम के जरिये खेत, फसल, किसान, खेतिहर मजदूर के रंग सौन्दर्य आ श्रम सौन्दर्य के चित्रण आ विम्ब प्रतीक मिलत बा त विकास काल आ समकालीन काल में खेती किसानी के समस्या, बाढ़, सुखार, खाद–बीज–सिंचाई के समस्या आ तनातनी के बात मिलत बा जे सब अपना अपना समय के अनुसार प्रासंगिक बा। हम हिंदी आ आन भाषा के विद्वान लोग के बतावल चाहत बानी कि जमीन से जुड़ल एह विषय के ऊपर हर नजरिया से विचार जइसे भोजपुरी कविता में भइल बा, आउर भाषा के कवितन में ना मिली। एह आलेख में कुछेक उदाहरण संभव हो सकल बा। जय भोजपुरी।

परिचय–डॉ० मिश्र भोजपुरी कविता, आलोचना, इतिहास के लेखन और सम्पादन के साथ साथ साहित्यिक संस्था के सांगठनिक कार्य में लगभग पैंतालीस बरिस से लागल बानी ।

आवरण कथा

गोपाल अश्क

आधुनिक नेपालीय भोजपुरी गीत-कवितन में रेखांकित खेती-किसानी से प्रभावित जीवन

आधुनिक भोजपुरी गीत कविता कहला से नेपाल भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन के अनुसार पिछलका समय में लिखाइल गीत-कविता बुझाले सन। खेती-किसानी से प्रभावित जीवन कहला से नेपाल के जन-जीवन खेती-किसानी से केतना आ के तरे प्रभावित बा, बुझल जा सकता। प्रस्तुत लेख में गीत-कवितन में प्रयुक्त भाव के आधार बनाके विवेचनात्मक आ वर्णनात्मक विधि अवलंबन करके आधुनिक काल में लिखाइल गीत-कवितन में खेती-किसानी से प्रभावित होके रेखांकित जीवन के निरूपण कइल गइल बा। एह क्रम में गीत-कविता के विधागत परिचय के साथ नेपालीय भोजपुरी गीत-कविता में आधुनिकता के शुरूआत आ प्रारंभिक गीत-कविता-लेखन के सामाजिक आ राजनैतिक वातावरण के चर्चा कइल गइल बा। आधुनिक नेपालीय भोजपुरी गीत-कवितन में खेती-किसानी से प्रभावित होके नीमन-बाउर कैंभास में नजर आइल भोजपुरी भाषी जीवन के उल्लेख करत ई निष्कर्ष निकालल गइल बा कि नेपाल के भोजपुरिया लोग के जीवन अबहियों मुख्य रूप से खेती-किसानी पर आधारित बा आ ओकर सकारात्मक तथा नकारात्मक असर से प्रभावित बा।

कविता के पूर्वीय आ पाश्चात्य विद्वान लोग परिभाषित कइले बाड़ें। ओह विद्वान लोग द्वारा दिहल गइल परिभाषा के बारे में तर्क-वितर्क भी सामने आइल बाड़ें सन। साँच कहल जाय, त कवनो परिभाषा के सर्वसम्मत ढंग से स्वीकारल नइखे गइल, स्वीकारल जाइयो ना सकता। सैद्धांतिक दृष्टि से कविता, आख्यान (कथा आ उपन्यास) नाटक आ निबंध, चार गो विधा मानल जाला। ई विधन में से कविता के अन्य विधन के तुलना में सर्वप्राचीन विधा मानल जाला। संसार के कवनो भी भाषा साहित्य में सबसे ज्यादा समृद्ध आ विकसित विधा कविता विधा ही ह। भोजपुरी साहित्य में भी ई विधा समृद्ध आ संपन्न बा। पूर्वीय साहित्य-शास्त्र में कविता के 'काव्य' शब्द द्वारा परिचित करावल गइल बा आ ई 'काव्य' शब्द समग्र साहित्य के ही अर्थ बोध करइले बा।

संस्कृत के वर्णन करेवाला अर्थ बोध करावेवाला 'कवृ' (कव) धातु में इ+ता प्रत्यय जुड़के बनल कविता शब्द आ उहे धातु में 'य' प्रत्यय जुड़के बनल 'काव्य' शब्द अंग्रेजी के Poetry भा Poem शब्द के भोजपुरी रूपांतर ह (अश्क, २०७९, पृ.सं.९१-९२)। 'कविता' शब्द ना ह, कविता अर्थ ना ह, कविता कवनो अनुभूति ना ह, कविता ऊ रीति भी ना ह, जवन बंधन भा तुकांत में बन्हाइल रहेला। कविता काठ के आगी ह, ऋषि के ध्यान में पिरोअल गइल ध्वनि ह, कविता कवनो संवेदना के उन्मुक्त प्रवाह ह। कविता रसात्मक भा कर्णप्रिय अभिव्यक्ति भर ना ह, कविता ऊ भाव-धारा ह, जवन कान के माध्यम से हृदय के आंदोलित करेला। साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ जी कहले बानी,'वाक्यम रसात्मकम काव्यम।' अर्थात रस के अनुभूति करावेवाला वाणी काव्य ह। एही लेखा पंडितराज जगन्नाथ जी के मत बा, 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द काव्यम' अर्थात सुंदर अर्थ प्रकट करेवाला रचना ही काव्य ह। पूर्वीय साहित्य के एक दोसर विद्वान आचार्य भामह के कहनाम बा, 'कविता शब्द आ अर्थ के उचित मेल ह। यथा- शब्दार्थो सहितौ काव्यम। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार आ आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी आपन लेख 'कविता क्या है' में कविता के जीवन के अनुभूति कहले बानी। महाकवि जयशंकर प्रसादजी 'सत्य के अनुभूति' के कविता मनले बानी । नेपाली साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान मोहनराज शर्मा आपन किताब 'नेपाली साहित्य के संक्षिप्त इतिहास' में कविता के एह लेखा परिभाषित कइले बानी, 'कविता भावात्मक भा बौद्धिक कथ्य के पद्य लयात्मक संरचना ह (श्रेष्ठ आ शर्मा, २०४९, पृ.सं. १९)। वस्तुतः कवि आपन कविता के माध्यम से युग के सत्य के ही दर्शन करावेला। कविता में सत्य, शिव आ सुंदर के अइसन अलौकिक धार प्रवाहित रहेला, जवन सभी लोग के समान रूप से आनंदित करत जाला। कविता समाज के नया चेतना प्रदान करेला, आनंद के सही मार्ग देखावेला आ मानवीय गुण के प्रतिष्ठित करेला। कविता के संबंध हृदय से होला, दिमाग से ना । कविता के तीन गो संरचना पावल जाला-(क)आख्यानात्मक, (ख)नाटकीय आ (ग)प्रगीतात्मक। आख्यानात्मक संरचना भइल कविता में हलका ढंग से कथानक भी रहेला, जइसेः महाकाव्य, खण्डकाव्य आदि। नाटकीय

संरचना युक्त कविता में आकस्मिक मोड़न के प्रधानता नजर आवेला आ प्रगीतात्मक संरचना वाला कविता में एकेगो भाव भा विचार के पुनरावृत्ति पावल जाला' (श्रेष्ठ आ शर्मा, २०४९, पृ.सं. १९)।

गीत आ कविता में अंतर बतावत नेपाली आ भोजपुरी के प्रसिद्ध समालोचक प्रो. डॉ.केशव प्रसाद उपाध्यायजी लिखत बानी, 'कविता में लय के महत्त्व बाटे, लयात्मक कविता लयहीन कविता से बेसी असरदार होखेला। कविता के अपन छंद होखेला। छंद वार्णिक, वर्णमात्रिक आ मात्रिक होखेला। कविता गावल जा सकेला, मुदा ओकर गायन जरूरी नइखे, वाचन चाहे पाठ करके ओकर आनंद लेहल जा सकता। बाकिर गीत गावहीं के खातिर लिखल जाला आउर ओकर संवाद आ मजा गायने से मिलेला। ओही से गीत में लय अनिवार्य रहेला आ लय संगीत के सुर, ताल से बँधाइल रहेला। कविता भाषा के आत्मा ह आ गीत ओकर प्राण। गीत में लय अनिवार्य रहेला त ओमे पद-पदावली के चयन, विन्यास आ संगठन में विशेष ध्यान देहल जरूरी होखेला। कविता में विषय अथवा भाव के अनुरूप पद आ वर्ण के विन्यास कइल जाला। कठोर रस-भाव के अभिव्यक्ति में ओज गुण के आवश्यकता पड़ेला, ओही से ओमे कठोर वर्ण से भरल पद-पदावली सोहाला। कोमल-रसभाव के अभिव्यक्ति में प्रसाद आ माधुर्य गुण के आवश्यकता रहेला। ओही से एह में कोमल वर्ण से भरल सरल आ कान्त पद-पदावली के प्रयोग आवश्यक अउर उचित रहेला (भूमिका, २०५९, गोपाल अश्क के गीत-संग्रह-उ भोर ना भइल)। एह तरे ई कहल जा सकता कि गीत आ कविता काव्य विधा ही हउए सन। कविता अगर कवनो फल ह, त गीत ओह फल के रस ह। कविता के आनंद लेवे खातिर फल के खोंइचा (कविता के ऊपरी आवरण) के हटावे के पड़ी बाकिर गीत के आनंद लेवे खातिर कवनो बाहरी आवरण हटावल जरूरी नइखे। काहेकि गीत में कवनो खास आवरण ना होखे। गीत सीधे रस सरीख होखेला।

आधुनिक नेपालीय भोजपुरी गीत कवितन में रेखांकित खेती-किसानी से प्रभावित जीवन नेपालीय भोजपुरी साहित्य में आधुनिक काल कब से प्रारंभ भइल, एह बात पर विद्वानन के बीच मतैक्य ही रहल बा। नेपाल आ भारत दूनू जगह के विद्वान लोग के विचार में नेपालीय भोजपुरी साहित्य में आधुनिक काल के शुरूआत

ई विश्वास रखल गइल बा कि अभी तक आधुनिक नेपालीय भोजपुरी गीत-कवितन में नजर आइल प्रवृत्तिगत विशेषतन के अध्ययन एह कार्य से अनुसंधानात्मक, प्राज्ञिक आ शैक्षणिक महत्त्व राखी। आधुनिक भोजपुरी गीत-कविता के क्षेत्र में अध्ययन करे के विषय-क्षेत्र बहुत भइलो पर इहाँ अध्ययन के उद्देश्य, प्रकृति आ समय अनुसार खाली आधुनिक काल में लिखाइल भोजपुरी गीत-कवितन में खेती-किसानी से प्रभावित जीवन के अध्ययन कइल गइल बा।

सन १९५१ (वि.सं. २००७) से भइल बा। ई कहुँ यथार्थ बा कि नेपाल में राजनीतिक स्थिरता कबो ना रहे सकल। लगभग हरेक दस वर्ष के बाद नेपाल में राजनीतिक आंदोलन, विद्यार्थी आंदोलन, विद्रोह आदि होत रहल। वि.सं. २००७ साल में नेपाल में प्रजातंत्र के स्थापना त भइल, बाकिर ऊ व्यवस्था दसो वर्ष तक ना चले सकल। वि.सं. २०१७ में राजा महेन्द्र प्रजातंत्र शासन के चीरहरण करके पंचायती प्रजातंत्र नामक व्यवस्था लागू कर दिहलें। वि.सं. २०२८ में नया शिक्षा योजना लागू भइल, जवना अनुसार नेपाल में 'एगो राजा एगो देश, एगो भाषा एगो भेष' नामक क्रूर नीति लागू भइल आ नेपाली के अलावा कवनो दोसर भाषा के संरक्षण आ संवर्धन के बात कइल पूरा ना होखेवाला सपना लेखा हो गइल। खैर, जे होखे, एही प्रतिकूल वातावरण में भोजपुरी दम भरत आगा बढ़त गइल आ कमोबेक साहित्य-सृजना होत गइल। एहीजा हम समयाभाव आ विस्तार भय के कारण ऐतिहासिक विकास क्रम का ओर ना जाके सीधे आधुनिक नेपालीय भोजपुरी गीत-कवितन में रेखांकित खेती-किसानी से प्रभावित जीवन का ओर केंद्रीत हो तानी।

बात ई बा कि नेपाल में आधुनिक भोजपुरी साहित्य-सृजना के प्रारंभ सन १९५१ (वि.सं. २००७) में प्रजातंत्र के स्थापना के साथे होता। राजनीतिक आ सामाजिक आधार पर आधुनिक नेपालीय भोजपुरी साहित्य के चार चरण-(क) पहिलका चरण (सन १९५१-१९६१), दोसरका चरण (सन १९६१-१९७९), तीसरका चरण (१९७९-१९८९), चौथा चरण (१९८९-२००७) आ पाँचवा चरण (२००६ से आज तक) में बाँटल गइल बा (अश्क, २०७९, पृ.सं. ९०)।

वि.सं. २००९ में नेपाल में भोजपुरी के केंद्रीय स्थल वीरगंज में ठाकुरराम कॉलेज (आजकाल्ह-ठाकुरराम बहुमुखी कैम्पस) के स्थापना भइल आ ओह कॉलेज में हिंदी के अध्यापन करावे वास्ते भारत चम्पारण से रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' जी अइनी। ओकरा बाद भोजपुरी साहित्य, आ खास करके काव्य सृजन के परंपरा शुरू हो गइल। एकरा साथे साथ नेपाल में एगो अउरी महत्त्वपूर्ण घटना-'किसान आंदोलन' वि.सं. २००९-२०११ तक के अवधि में घटल। ई राजनैतिक घटना नेपालीय भोजपुरी साहित्य सृजन के सिर-खांड़ खड़ा कर देहल। एह आंदोलन के अगुवा नेता लोग में स्व. हरिहर यादव (वि.सं.१९८५-२०६१) प्रमुख रहनी। उहाँका आपन मातृभाषा भोजपुरी में आपन राजनीतिक विचारधारा आ जनता के आवाज लिखके गाँवे-गाँव प्रचार प्रसार करे लगनी। उहाँ के लिखल भोजपुरी जनवादी गीतन के संग्रह 'मेला के बहार' (२०१०) प्रकाशित भइल। कहे के ई चाहतानी कि नेपालीय भोजपुरी साहित्य सृजन के प्रारंभ किसान आंदोलन के गर्भ से भइल बा आ शुरूआती काव्य लेखन के विषय ही खेती-किसानी, किसान के पीड़ा, व्यथा आदि रहल बा।

गौरतलब बा, स्व. हरिहर यादवजी किसान आंदोलन के अगुवा रहनी आ वामपंथी रहनी। एतने ना, उहाँका कम्यूनिष्ट पार्टी के नेतो रहनी। स्वाभाविक रूप से प्रगतिशीलता उहाँ के गीत-कवितन के भावभूमि रहल। यादवजी मूलतः गीतकार रहनी आ उहाँके गीतन में गरीब किसान के कथा-व्यथा के भाव-धारा प्रवाहित रहल। उहाँका नेपाल के किसान के माली अवस्था के देखके काफी दुखी रहनी आ रहनी चिंतित। उहाँका क्रांतिकारी विचारन के प्रतिबिंब उहाँ के गीतन में भइल बा। उदारहणस्वरूप उहाँ के एकाध गीतन के एकाध गो कड़ी नीचे प्रस्तुत बाः

हँसुआ-हँथौड़ा के चिन्हबऽ किसनवा,
ललका निशानवा ना
ओमे ललका सलाम लेवे मुठिआ के तान
देखके सामंत लोगवा करेलें रोदनवा।
ललका०।।

एही तरे नीचे के गीत के भाव प्रस्तुत बाः

हिस्सा लागी, हिस्सा लागी सपना सुनत रहीं
सेहो विधि अँखिआ देखावले रे की।
नयका कानुनवा में बँटइआ हकवा कायम भइले
सेहो सुनि सामंत डेराए नू रे की।
जेकरा बाटे जादा खेत कोठवा-मकानवा हो
सेहो सुनी अन्न-पानी त्यागे नू रे की।
जनि रोअ जति झँखऽ करऽ ना भोजनिया हो
खाए भर के तोहरो के दिआई नू रे की।
(अश्क, २०७९, पृ.सं. ९७)

बँधुवा-मजदूर बनला से अच्छा बा आपन खेत में काम कइल, कान्ह पर हर लेके चलल। काहेकि केतनो काम-धंधा कइलो पर मालिक महाजन लोग सम्मान के नजर से नइखे देखत, अपमान करत रहता। साधारण पढ़ल-लिखल बाकिर स्वाभिमानी कृषकबाला के मनोभाव के यादवजी आपन नीचे के गीत में एह तरे रेखांकित कइले बानीः

हमरी कहल करऽ, हर खोली घरे चलऽ
चलिके तूँ बन ना किसान हो बलमुआ।
रात-दिन काम करी मालिक-महाजन कही,
तइयो नाहीं जाए कलगुजारी हो बलमुआ।
(अश्क, २०७९, पृ.सं. ९८)

नेपाल कृषि प्रधान देश ह। अबहियों इहाँ के जनजीवन ज्यादातर कृषि, कार्य-व्यापार आ पशु-पालन पर ही आधारित बा। साँच कहल जाय त, किसान आ खेती-किसानी के अभाव में नेपाल आ संपूर्ण नेपाली नागरिक के जीवन ही समाप्त हो जाई। ई भाव केतना जीवंत रूप से चित्रांकित बा, हरिहर यादवजी के नीचे के गीत में देखीं-

सब देवतन में देवता अन्न बा हो भाई
अन्न कहे पानी से लगबऽ गुरु भाई
पर हित करेला परहित खेती पानी पाले जहान
हर-हरिश के जोग से भइया उबजे धान किसान
किसनवे हो भाई सब देवतन में
देवता---------
पर्वत-पहाड़ काटी समतल बनाई
रहे श्मशान जहाँ हीरा उबजाई।
केरा खइहेन ठाकुर जी केरा ना लगाई
रही ना किसान जहिया दुनिया बिलाई।
(सब देवतन)

किसान महात्म अर्थात किसान के जीवन-गाथा गावे के परंपरा इहें से प्रारंभ भइल नजर आवता। शक्तिनाथ वर्मा जी के एगो कविता के एगो अंश प्रस्तुत कइल जाता, जवन नेपाल के भोजपुरी जनजीवन में किसान के का हालात रहल बा, ओकर बयान करता-

हमरा किसानवाँ के खेतवा में सोनवा
उगे संगे लहरा पटोर।
सुतलो में लउकेला एकही सपनवा
कि खाड़ा बानी आखा अगोर।
जेहिरे भनसिया उहे भइले चटनी
रहि कइसे जगवा में मान।
देखते ही देखते किरिन के बछरूआ
चरलस अन्हरिया के धान।
केह के सुनाई कह घरवा के हलिया
कट पट चलेला दुनु शाम।
गोरिया के नाक के नथुनिया बिकइले
सधो कइसे खेतवा के दाम।
(सनेस-सं. दीपनारायण मिश्र, २०३०, पृ.सं. ६३)

ज्यादा कहल जरूरी नइखे, उपर्युक्त गीत के पढ़ला पर ई बात साफ हो जाता कि नेपाल के भोजपुरिया किसान के हालत ठीक-ठाक नइखे। माली हालत बा, गोरिया के नाक के नथुनी बिका गइल बा, खेत बँधक पर बा। खेत बँधकी रखके लिहल रोपया सधावे के कवनो उपाय नइखे। ई त नेपाल किसान के नियति ह। जिनिगी भर कमरतोड़ मेहनत मजदूरी कइला का बादो भर पेट खाए खातिर तरसे के पड़ेला, आंग-माथ तोपे खातिर तड़पे के पड़ेला।

नेपालीय भोजपुरी साहित्य जगत में भीष्म पितामह के नाँव से जानल-मानल जाएवाला पं. दीपनारायण मिश्र जी आपन 'किसान भाई' शीर्षक कविता में किसान के जगावत कहत बानीं कि हे किसान भाई ! अब तूँ उठ जा। उठ जागके खेती किसानी करेके आपन पुरान रीति के छोड़ के नया ढंग के अपनाव, नया ढंग से खेती किसानी करऽ, ना त पीछा रह जइबऽ। खेत के निमन से सिचाई करई, गहीर जोताई करऽ, उन्नत बीज पर ध्यान द। तब जाके पटवन पर व्यवस्था होई, कबो ना सूखाड़ होई, डेहरी बखारी धाने धान से भर जाई। कविता देखीं-

उठ! ना भइल अब बिहान ए किसान भाई
सारी दुनिया जाग गइल सभ के विकास भइल
तुहुँ सुतेल चादर तान ए किसान भाई
युग इ विकास के बा चाहे जेकरा थाम जे जा
रीति स्थिति तोहर सब पुरान ए किसान भाई
प्रगति के युग में भी तु सभ से पाछे रहब
यदि तुहुँ नाहि देब ध्यान ए किसान भाई
नया ढंग से खेती कर, खाद से तु खेत भर
होखे लागी पूरा गेहुँ धान ए किसान भाई
खेत के सिंचाई कर गहिरे जोताई कर
उन्नत बीज पर राख तुहुँ ध्यान ए किसान भाई
पटवन के व्यवस्था होइ कबो नाम सुखाड़ होइ
होइ डेहरी बखारी धाने धान ए किसान भाई/
(अँजुरी के फूल-नेपाल राष्ट्रीय भोजपुरी कविता संग्रह, पृ.सं. २२)

जहाँ एक ओर कवि मिश्रजी किसान लोग के जागे के निहोरा कर रहल बानी, ओहिजाने कवि जगदीश प्रसाद पंकज जी आपन कविता 'प्रणाम! हो किसनवा' में किसान के महिमा गा रहल बानी, देखी-

सबसे सपुत तुहु धरती के ललनवा से,
बेर बेर तोहे प्रणाम हो किसनवा!
जाड़ा गर्मी, वर्षा घाम, हरदम करेल काम,
चले चाहे केतनो तूफान हो किसनवा!
गाण्डीव गदा बा तोहरो हरफार कुदरिया से,
तुहु कर्मवीर बलवान हो किसनवा!
बंजर के खोदी जोती अमृत निकाल तुहू,
धुसर में सबुज उगाव हो किसनवा!
तन के पसीनवा से सिंचेल जमीनवा तू
उपजे हीरा मोती गेंहू धान हो किसनवा!
(छितराईल घुँघुरू, कविता-संग्रह, पृ.सं.६२)

नेपालीय भोजपुरी साहित्य जगत में हास्य व्यंग्यकार का रूप में परिचित कवि मुकुन्द आचार्य जी आपन 'मारीं गोबर में लात' शीर्षक कविता में किसान लोग पर एह तरे के व्यंग्य कइले बानीं, देखीं-

हे भैया !
उत्तम खेती कहल जाला !
जेने फायदा होखे ओनही ढहल जाला !
किसान हईं त गाँजा करी,
जिनगी भर माजा करीं
ठावाँ ठाही पैसा फेंकी
ऊपर से नीचे तक देखीं
के नइखे खात ?
मारीं गोबर में लात !!
(सनेस, पृ.सं. ४)

एही तरे दोसर भोजपुरी हास्य व्यंग्यकार माधव

प्रसाद गौतम जी आपन कविता 'एकर मजा कुछ दोसरे बा' में खेती-किसानी करनिहार गोरी आ ओकर प्राण प्रिये के तस्वीर कुछ एह तरे खींचले बानीं, देखीं-

अगहन महीना
ना ओतना जाड़ा ना बेसी गर्मी
ब्रह्म भूसी मालभोग
बासमति कस्तुरी धान
फरके लभल छितराइल बाल
खेत में चारु ओर गम गम करेला
अइसन में गोरिया के बाँह पकड़
आरी पर घूमे के मिली त
एकर मजा कुछ दोसरे बा ।
.....

खेत में काम करत अपन अपन पिया खातिर
मुड़ी पर भोजन के मोटरी
डाँड़ में घइला मटकावत
जवानी के बोझ से
मधुआइल पतरकी से
मंगला पर इच्छा पुरन
चिरुवा से भर-भर
ठंडा पानी पिए के मिली त
एकर मजा कुछ दोसरे बा।
(झूठ साँच, कविता-संग्रह, पृ.सं.४१)

नेपाल के एगो चर्चित प्रगतिवादी कवि तथा गायक तथा भाषा आयोग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल ठाकुरजी के गीतन में खेती-किसानी आपन सोगहग पहचान के साथ रेखांकित मिलेला। उहाँका आपन एगो गीत में किसान लोग के जीवन बड़ा दुखी बा, कहत गा रहल बानीं-

बड़ा दुःखी भइले किसान हमरा देशवा में
देवी-देवता पूजा माङे,
भक्ता मिआँ मूर्गा माङे ।
बड़ा.....
पंडित कहे करिहऽ गइआ दान हमरा देशवा में ।
बड़ा.....
जौले रहे धान घरे, पबनी सब दम ना धरे
अगिए भउआ बिके सब सामान हमरा देशवा में ।
बड़ा.....
बेंचइत का बेरिआ धान, पुछेके ना मिले दाम
डँड़िआ मारले साहुकार हमरा देशवा में ।
बड़ा.....
किसनवे खिआवे सब के, भूखे रहे उहे दबके
कहवाँ सुतल बा भगवान हमरा देशवा में ।
बड़ा.....
(जनता के गीत गावत रहेम,
भोजपुरी जनगीत-माला, पृ.सं.१४)

नेपाल के खेती किसानी अबहियों बरसाती पानी पर निर्भर बा। नहर में हर समय समुचित पानी के ना रहला से निमन से सिचाई ना हो पावे, जवना चलते समय पर खेती ना हो पावेला। किसान के जिनिगी आकाश से होखेवाला पानी पर आश्रित बा। नेपाली किसान बरखा के मौसम में भी पानी ना बरसत देखके तड़प उठेला, ओकरा आँख में कई तरह के चिंता उमड़ जाला। बेटी के विवाह के चिंता से मरे लागेला। अइसने एगो किसान बाप के आपन बेटी के विवाह के चिंता कइला के भाव के कवि गोपाल अश्क आपन 'रे बदरा, कहाँ गइल पुरजा के जोर' शीर्षक गीत में एह तरे व्यक्त कइलें बानी-

भादो के महीनवा में,
धूरे-धूरा रहिया,
सुनेनीं खाली तोर शोर,
रे बदरा!
कहाँ गइल पुरवा के जोर?

सूख गइले माघा,
सूख गइले हथिया,
सूख गइले सेवाती के ठोर,
रे बदरा !
कब सुखी अँखिया के लोर?

बेटी के उमिरिया,
सारी-सारी रतिया,
देला देहिया झकझोर,
रे बदरा ! कइसे उठी पालकी रे मोर?
(उ भोर ना भइल-गीत संग्रह, पृ.सं.३४)

जहाँ एक ओर कवि अश्क जी किसान बाप के पीड़ा के आपन गीत में व्यक्त करत ई लिखताड़ें कि सावन-भादो के महीना बीते लागल आ बरखा होखे के कवनो संभावना नइखे, रास्ता-पेंड़ा पर धूरा उड़ताड़ें स आ खेती-पाती निमन से ना भइल आ उपजनी निमन से ना भइल त बेटी के विवाह ना हो सकी। बेटी विवाह करे योग्य हो गइल बिया। रात भर चिंता से नींद नइखे पड़त। त दोसरा ओर एगो विवाह योग्य कृषक बाला के मन में उपजल भाव के कवयित्री गजल झा आपन कविता 'आपन वसंत' में कुछ एह तरे व्यक्त करत बाड़ी-

कइसन वसंत ?
कुँवारी पतझर के ना होखो अन्त ?
खेत में फुलाइल पिअर सरसो
हमरा से पूछलस -
तोर हाथ कब पिअर होई ?
हम कहनी-
तूँ बाँच जो ओला से
आ अच्छा दाम बिका जो
तबे नू हमर बाबूजी
बर किनिहन !
आ हम हँस देहनी
मनी, आकाश ओर देखके
सरसो उदास हो गइल
(भोजपुरीःसम्मेलन, नेपालीय भोजपुरी विशेषांक, पृ.सं.३४)

नेपालीय भोजपुरी साहित्य में प्रथम भोजपुरी हाइकु कृतिकार के श्रेय पावेवाला कवि दिनेश गुप्ता जी आपन हाइकु संग्रह 'हिरोशिमा' में किसान आ किसानी के चित्र बड़ा जीवंत तरीका से खींचले बानी, देखीं-

धान के खेती
देखे लायक बाटे
मस्त किसान
(हाइकु सं.४५, पृ.सं.१४)
.....
धान के खेत
जमीन में दरार
पेट में भूख
(हाइकु सं. ८४, पृ.सं. २८)
.....

मेघ खातिर
किसान बा बेचैन
नेता बा मस्त
(हाइकु सं.१४२, पृ.सं.४८)

भोजपुरी के चिरपरिचिति कवि/साहित्यकार राम प्रसाद साहजी आपन एगो कजरी में गावत बानी-

आपन जिनिगिया सँवरी ए सखि
धानी चुनरिया लहरी ए सखि
पियवा लेके अइहें गठरी ए सखि
राह जोहत पावस नियराइल,
हम कहीं जे खेती पछूआइल ।
ताक मुराद संग सजनी ए सखि
धानी.....
खेत बघारी सलर-सलर बा

रहल पलानी पचर-पचर बा
रोपी छवाई बिगड़ी ए सखि
जल्दी रोप सगरी ए सखि
धानी.....
(ए हीरामन सुगा, भोजपुरी छन्दबद्ध गीत संग्रह, पृ.सं. ७)

नेपाल के भोजपुरिया लोग के जीवन कृषि आ पशुपालन पर आधारित बा। भोजपुरिया लोग आपन जिनगी इहे खेती-किसानी करत-करत सेरा देवेला। भोजपुरिया नारीयन के जीवन माटी से शुरू होला आ माटिए में मिल जाला। एह तरे के भाव कवि जंग बहादुर यादव के स्मृति काव्य 'संघतिया' में प्रकट भइल बा। उहाँका आपन मेहरारू के इयाद करे के क्रम में कलपत कहत बानी-

घर गृहस्थी में रहलू सयानी
घर देखऽ खेत देखऽ देखऽ खरिहानी।
जोतनी कोड़नी रोपनी खेतवा के सोहनी।
धान जब पाक जाय, करावऽ कटनी दवनी।।
धान उपजा के भर देत रहलू भखारी
तोहरे इयाद में जिनिगिया बितावत बानी/
(पद संख्या-४, पृ.सं.११)

नेपालीय भोजपुरी साहित्य जगत में उदाइल कुछ नया पीढ़ी के कवि/कवयित्री लोग के कवितन में भी खेती किसानी आ किसान लोग के जीवन संघर्ष के भाव रेखांकित नजर आवता। नया पीढ़ी के सशक्त कवि शिवनंदन जयसवाल जी कविता 'किसान भइया' के कुछ पंक्तियन के देखीं जवना में किसान लोग के प्रति चिंता आ चिंतन रेखांकित बा-

सुना हो किसान भइया!
सुना हो किसान भइया!
करेब ना बियाह जबले बेटी ना शयान भइया!
अपने जबाना में तु पढ़ि लिखि ना पवला,
सगरी उमिरिया खाली खेतिए ले बितवला।
ई नवका जबाना में अनपढ़ के ना काम भइया,
बेटी के पढ़वले पे धरिहा खूब धियान भइया।
(भिन्सहरा, कविता संग्रह, पृ.सं. १२)

एही लेखा नव पीढ़ी के एगो सशक्त कवयित्री मौसमी कुशवाहा के कविता प्रस्तुत कइल जाता, जवना में नेपालीय भोजपुरी गद्य कविता में चित्रांकित भाव आ तेवर देखे के मिली। जइसे-

सरग के परी जइसन जब
सजेला इहाँ के खेत खरिहान
देखि मन होला निहाल....
देख-देख धान गहुँ के बाल !
देखके लागेला जइसे
सुनहरा केश लहरात होखे
ओह उपरिया हरियरका
बुट्टादार घूँघटा का भीतर
सब दिन ला रूप लुकाइल बा ।
अपन सीमा कहियो
भुलाए क ना जानेली,
मान-मर्यादा बिना जीयल
जील ना मानेली,
स्वाभिमानी मधेश हमार.....
(मधेश हमार-मातृभाषा का कविता पृ.सं. १९६)

निष्कर्षः

निष्कर्ष के रूप में एतने कहल मुनासिब होई कि चाहे नेपालीय भोजपुरी काव्य-लेखन के शिल्प आ शैली में भले लाख बदलाव आ गइल बा, बाकिर नेपाल के किसान के जीवन आ ओह जीवन से करत आइल संघर्ष में कवनो खास बदलाव नइखे आइल। आ ई खाली भोजपुरी भाषी किसानन के नियति ना ह, बल्कि नेपाल के संपूर्ण किसानन के नियति ह। चूँकि नेपाल एगो कृषि प्रधान देश ह, आ एकर अस्सी प्रतिशत से ज्यादा नागरिक कृषि आ पशुपालन से आपन जीवनयापन करेला। कृषि कार्य अबहियों परंपरागत ढंग से ही होत दिखाई देला। अपवाद के रूप में कहीं कतो नयापन के दर्शन हो जाए, त दोसर बात बा। नेपालीय भोजपुरी गीत-कवितन में खेती-किसानी आ ओकरा से प्रभावित जीवन के जीवंत वर्णन मिलेला। कहीं श्रृंगार के झलक मिलेला, त कहीं किसान के बेटी विवाह करे के चिंता के प्रकटीकरण भइल मिलेला, कहीं खेती किसानी में जीवन खपा चुकल मेहरारू के इयाद करत किसान के कलपत मन नजर आवेला, त कहीं सभ केहू के पेट भरेवाला किसान ही भूखे मरल के विवशता आ ओकरा प्रति आक्रोश प्रकट भइल नजर आवेला। एह तरे ई कहल जा सकता कि नेपाल के आधुनिक भोजपुरी गीत कवितन में खेती किसानी आ ओसे प्रभावित जीवन के सोगहग चित्र प्रतिविंबित बा। ई त एगो छोट आलेख ह, एह पर समालोचनात्मक ढंग से पूरा किताब लिखल जा सकता। ई काम भविष्य में केहू शोद्यार्थी आ अनुसंधानकर्ता लोग द्वारा हो सकता, अइसन विश्वास कइल जा सकता। अस्तु।

संदर्भ-सूची

अश्क, गोपाल (सन २००३),उ भोर ना भइल (गीत.संग्रह), वीरगंजः श्री मोहनलाल राजपाल ।
.....(वि.सं. २०७९), नेपालीय भोजपुरी साहित्यको इतिहास, काठमांडूः नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान।
गुप्ता, दिनेश (वि.सं.२०७३), हिरोशिमा (भोजपुरी हाइकु-संग्रह), रेशमकोठी, वीरगंजः नेपाल भोजपुरी समाज।
गौतम, माधव प्रसाद (वि.सं.२०५९), झूठ साँच (भोजपुरी गद्य कविता संग्रह), भाटभटेनी,काठमांडूः नीता गौतम दीक्षित।
जयसवाल, शिवनन्दन (सन २०२०), भिन्सहरा (भोजपुरी काव्य-संग्रह), कोटही माई-०६, मर्चवार, रूपंदेही,नेपालःभिन्सहरा सामाजिक संस्था।
ठाकुर, डॉ. गोपाल (सन २०२१), जनता के गीत गावत रहेम (जनगीत संग्रह), पीपरपाती, बाराः चंदेश्वर गुप्ता।
पंकज, जगदीश प्रसाद (सन २०२०), छितराईल घुँघुरू' (कविता संग्रह), बाराः राजीव 'रंजन'।
मिश्र, दीपनारायण (वि.सं.२०३९), अंजुरी के फूल (नेपाल राष्ट्रीय भोजपुरी कविता संकलन), रेशमकोठी,वीरगंज, भोजपुरी पुस्तक माला।
यादव, जंग बहादुर (वि.सं.२०७५), संघतिया (स्मृति काव्य), कलैया, बाराः नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान।
साह, राम प्रसाद (सन २०२२), ए हीरामन सुगा(भोजपुरी छन्दबद्ध गीत संग्रह), कलैया, भोजपुरिया माटी (नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान, बारा)।

पत्र-पत्रिका

सनेस (भोजपुरी सामयिक संकलन) (संपादक- पं. दीपनारायण मिश्र), नव वर्ष अंक, वैशाख २०३० साल, वीरगंज,नेपालःसनेस पत्रिका परिवार ।
सनेस (नेपाल भोजपुरी साहित्य कला परिषद द्वारा २०४६ साल में आयोजित कवि सम्मेलन के) (संपादक-पं. दीपनारायण मिश्र), वीरगंज, नेपालः नेपाल भोजपुरी कला परिषद ।
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (नेपालीय भोजपुरी विशेषांक) (संपादक-पाण्डेय कपिल, सहयोगी सं. गोपाल अश्क), वर्ष ९, अंक २.३, फरवरी-मार्च १९९८), इन्द्रपुरी, पटनामः अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन।
मातृभाषाका कविता (राष्ट्रिय मातृभाषा कविता महोत्सव-२०२१) (संपादक-लक्ष्मी माली आ पद्म राई), काठमांडू,नेपालःनेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान।

परिचय-

नेपाल में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सर्वांगीण संवर्धन आ विकास खातिर अहोरात खटेवाला आ भोजपुरी, नेपाली तथा हिंदी तीनों भाषा में समान अधिकार से साहित्य-सृजना आ प्राज्ञिक कार्य करेवाला भाषाविद्, समालोचक ,पाठ्यपुस्तक लेखक तथा चार दर्जन से ज्यादा कृतियन के रचयिता (जेमे महाकाव्य, खण्डकाव्य,उपन्यास, व्याकरण, शब्दकोश, साहित्येतिहास आ समालोचना शामिल बा) के नाँव ह-गोपाल अश्क (सन १९६२)।

डॉ.गिर्जानन्दसिंह बिसेसर
(अरविन्द)

मॉरीशस के लोक साहित्य औरू खेती-बारी

मॉरीशस में खेती-बारी के कहानी हमनी के इतिहास से जुड़ल बा। इ बंजर देस में खेती-बारी फ्रांसीसी प्रशासन काल में सुरू हो गइल रहल पर अंग्रेजी शासन के दौरान ई जस्ती जोर पकड़लक। गोवरनर लाबूरदोने फ्रांसीसी इस्त इंदिया कोमपेनी के सबसे सक्रीय कर्मठ गोवरनर रहल। ओकर समय में मॉरीशस जोन उ समय इल-दे-फ्रान्स रहल, हैजा काफि कृषि विकास हॉल पर आगे चलके थप पड़ जाला। 1735 में गोवरनर लाबूरदोने कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरत। आने के प्रयास शुरू करेलन पर ई में असफलता मिलल। चाव, गेहूँ औरू मानियोक ब्रेजिल से आनल गइल खेति खातिर। पर खेती बारी कमति फायदेमंद रहल तऽ धेर समय ले नँय चलल।

अंग्रेजी कार्यकाल में शक्कर उद्योग के विकास होल औरू मॉरीशस के चीनी पैदावार बढ़ले गइल। 1826 में 18,970 टन (tons) चीनी निर्यात करल गइल। हमनी के खेती बारी के इतिहास में गुलामी प्रथा के बहुत महत्व बा। गुलामी प्रथा के बंद करला से, खेत में काम करे होला लोग खासकर दास लोग अपन काम छोड़के भाग गइलन जा। ऐसे में मॉरीशस के कृषि क्षेत्र पर बुरा असर पड़ल।

बरतानी शासन जब शुरू होल तऽ हैजा पर शक्कर कोठी के मालिक लोग संगे समझौता करके खेती-बारी के जारी रखे के परियोजना बनल। ऐसने बरतानी इस्त इन्दिया कम्पेनी के सहयोग से भारत से खेत में काम करे होला शर्तबंध मजदूर लोग के आने के सिलसिला शुरू होल। एकर से पहले हैजा परी भारतीय कारिगर लोग रहलन जा पर खेत में काम करे होला लोग के 1934 से आने के शुरू होला।
भारतीय आप्रवासी लोग के आगमन से मॉरीशस में उ लोगन के जीवन के ऐसन अनाकानेक किस्सा बा जान खेती बारी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ल बा। महात्मा गाँधी संस्थान के भोजपुरी लोक संस्कृति विभाग की ओर से जोन शोध कार्य होवेला, ओकर से कुछ किस्सा-कहानी के उदाहरण रखब जा जोन हमनी के लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्सा हऽ।

मॉरीशस के प्रसिद्ध साहित्यकार स्वर्गीय श्री अभिमन्यु अनत के लाल पसीना उपन्यास में उ समय औरू उ घटना के उल्लेख बा जन 1901 में देस में सीरा बीमारी से, खेत में हल चलाय के औरू गन्ना के शक्कर कारखाना में ले जाय होला पशु, खासकर बैल पर बुरा असर पड़ल। बहुत जनावर मर गइल रहल। ऐसे में, एगो कामकड़वा साँज के जब घरे आइल तऽ अपन घर होली के महामारी के बारे में बतावेला औरू अपन गुस्सा उताड़ेला। ओकर लियन बहुते कामकड़वा लोग बोलत रहलन जा कि इ प्रकोप, इ कहड़ क्रूर मालिक लोग पर पड़ल बा। काहेकि उ लोग अपन कामकड़वा लोग से बहुते काम करावत रहलन सऽ, उ लोग पर अत्याचार, शोषण होल रहल। खेत में गन्ना घत्ता होवत रहल, सुखाल जात रहल काहे कि कारखाना ले जाई के जनावर लोग नँय रहल।

ऐसन में उ कामकड़वा के पत्नी बोलेला कि खेत में गन्ना नँय बल्कि उ लोग के महनत, के पसीना सुखत बा। ओतना महनत करके गन्ना उगा के जब फसल होल तऽ उ महनत और परिश्रम के फल हऽ जेके ऐसे सुखाय देय के नँय चहेला छोड़ेके। तब अगला दिन, लगभग सब कामकड़वा लोग अपने लगेलनजा गाड़ी खींचके कारखाना ले जाय औरू उ लोग के सहायता करेके, उ लोग के पत्नी लोग धक्का देवे लनजा। ऐसे में गन्ना

मुल्ला ले भेजल गइल औरू इ लोग के महनत और परिश्रम से चीनी बनेला।

अभिमन्यु अनत जी के उपन्यास में इ घटना से मॉरीशस में भारतीय महिला आप्रवासी लोग के सशक्तिकरन के स्पष्ट उल्लेख होल बा। बहुते हाला, पुरुष कामकड़वा लोग हताश-निराश होके हिम्मत हारेके के कगाड़ में रहलन जा पर उ लोग के पत्नी उ लोग के हौसला देलन जा, उ लोग के शक्ति बनके हिम्मत देवे लन जा। महिला सशक्तिकरन के दौर हैजे से शुरू होला मॉरीशस में। खेती-बारी में कठिन हालत के बावजूद, भारतीय आप्रवासी लोग आपण खून पसीना एक करके जी-जान से महनत करलन जा। उ लोग के वफादारी देख के, बहुते शक्कर कोठी के मालिक लोग अपन कामकड़वा लोग पर अत्याचार करल बंद करलन जा, उ लोग के लैका लोग के शिक्षा के प्रबंध करल गइल औरू हैजा ले धेर कोय के जमीन देवल गइल घर बनायके, खेती बारी करेके।

'लाल पसीना' उपन्यास में खेत में काम करे होला लोग के जीवन के सजीव चित्रण करल गइल बा।

एकर अलावा, शोध कार्य करते समय हैजा के बूजुर्ग लोग के जीवन पर भेंटवार्ता रिकॉर्ड करल गइल बा। एकर में एगो जीवन वृत्त खेती-बारी से जूड़ल बा। एक्रा हमनी 'हसुँआ' नाम देल हँय जा। 'हसुँआ' से खेत में घास काटल जाला, गन्ना में जस्ती पत्ता निकालल जाला। (क्रिओली भाषा में एक्रा 'depailler' बोलल जाला औरू इ शब्द भोजपुरी में भी प्रयोग होला।)

इसेन चाची हमनी के अपन जीवन गाथा सुनाइलन। कम उमीर में ही सादी हो गइल। अपन माँ-बाप के घरे रानी लियन रहलन। सादी करके आइल तऽ सास कबो उनक्रा भला-बूरा बोलत रहल। एक दिन सास उनक्रा रसोईघर से 'हसुँआ' आने के बोललन। बेचारी जब गइल 'हसुँआ' खोजे तऽ बहुते परेशान हो गइल। काहेके उ कब्बो हसुँआ देखले नँय रहल।

खोजत-खोजत जब काफि देरी होल, तऽ सास खीस में आके पतो के खूबे लसरलक।

बहुत बरिस बाद जब चार गो छोटा लैका लोग के पोसेके, उ लोग के पढ़ाई में पैसा खर्च करेके नौबत आइल तऽ घर में बहुत समस्या होय लगल काहेके घर में खाली उनकर पति काम करत रहल। तब चाची इसेन वो के पड़ल जा के काम करेके। खेत में पहलका हाला जब हसुँआ लेलन तऽ उ दिन याद आइल जब इ हसुँआ खातिर उनकर सास उनक्रा केतना भला बुरा सुनँयले रहलन। रो-रो के चाची ऐसन उ हँसुआ के बोलेलनः-

''हसुँआ एगो समय रहल जब तोहरे नँय पहचनला पर बहुते गाली सुनली रहनी। आज तू ही हमर औजार हवे, हमर संगे हवे, हमर साथी हवे।''

दादी इसेन उ हसुँआ के अभी ले सम्भाल के रखले हवन। इ प्रकार मॉरीशस के भोजपुरी लोक जीवन से ऐसन जीवनी मिलेला। एसने पात्र लोग के जीवन पर आधारित महादेवी वर्मा के 'स्मृति की रेखाएँ' लिखल गइल बा। मॉरीशस में भारतीय आप्रवासी लोग के जीवन पर, उ लोग के इतिहास पर ऐसन बहुत 'स्मृति की रेखाएँ' बा।

मॉरीशस में खेती-बारी के इतिहास संगे, हैजा पर भारतीय आप्रवासी कामकड़वा लोग पर शोषण और अत्याचार पर लोक-कथा भी बा। इ सब लोक-कथा पर डॉ. अरविन्द बिसेसर के शोध प्रबंध 2019 में पूरा होल।

पहलका उदाहरण किसन नाम के एगो मजदूर पर आधारित बा। सब मजदूर लियन उ भी अपन मालिक लगे काम करे। एक दिन मकय के खेत में काम करत रहल। ओक्रा एतना काम देवल गइल कि खाय के समय नँय मिलल। तब उ एगो मकय तूर के खाय जाला, उहीं समय गोरा मालिक चलावेला। चाबुक से बहुते मारेला मजदूर के। एतना घायल कर देवेला कि जाके ओके बीच जंगल में छोड़ आवेला। बेचारा किसन चले नँय सकेला औरु हौजे रात बीत जाला। फजिरे लँगड़यते-लँगड़यते वापस आयके सीमा (रास्ता) खोजेला पर जंगल में बिला जाला। तब सोचेला वापस जाय तऽ फिर से क्रूड़ मालिक ओक्रा मारी। उ हैजे जंगल में एगो मरई बनाके रहे लगेला। खाय-पियेके जैसे-तैसे हो जाला। किसन मेहनती रहल। उ हैजे एगो खेत साफ करके सूखल मकई के बिया (बीज) रोपेला औरू खूबे निमन से देख-भाल करेला। चंद महिना बाद, ओकर कारो (खेत) हरियर होला औरू मकई फड़ेला। मजदूर वफादार रहल। सोचेला एतना मकई कोन्ची करी। घूम-घाम के, बहुत समय भटकते-भटकते अपन मालिक के घर पहुँचेला। खुसी-खुसी ओक्रा खबड़ देवेला। मालिक किसान के जिन्दा देखके अचरज में पड़ जाला। मकई के अच्छा फसल के बारे में सुनके, लालची मालिक, किसन संगे

उ जगह पहुँचेला जहाँ मकई के खेती रहल। ओक्रा आश्चर्य होला, कैसे एतना निमन खेती-बारी होल। किसन से पुछेला कि ओक्रा ई मकई के बीज कहाँ से मिलल। किसान भोला रहल। झट से बोलेला कि मालिक के खेती में से मिलल रहल। औरू इही से हैजा खेती बारी होल। अगला दिन मालिक चार-पाँच गो कामकड़वा आनेला औरू सब मकई अपने संगे ले जाला। पर एकर से पहले आदत से मजबूर, किसान के खूब मारेला औरू फिर से जाके जंगल में छोड़ देवेला। इ हाला बहाना बनावेला कि किसान मकई के बीज चोरी करलक। उ दिन के बाद, बहुते समय ले किसान के कानों खबर नँय मिलेला। जब जंगले के साफ करके खेती बारी होला तऽ एगो मड़ई जंगले के दूर पहाड़ के नीचे मिलेला। हौजा के जमीन सफफा रहल। उ जगह के नाम किसन घर रखल गइल-एगो महनती, वफादार किसन के नाम पर जोन मजदूर से किसान बनल।

खेती-बारी और डबल कट पोलिसी (double cut policy)

मॉरीशस में भारतीय आप्रवासी लोग के आनल गल रहल चीनी के खेती बारी खातिर काम करेके। शक्कर उद्योग हैजा के अर्थव्यवस्था के मूल स्तम्भ रहल। फिर भी कामकड़वा लोग पर बहुत अत्याचार के अलावा, सख्त नियम औरू कानून बनावल गइल। एकर में से एगो रहल double cut policy। एकर तेहत जे एगो कामकड़वा एक दिन काम करे नँय आय तऽ ओकर दू दिन के पगाड़ काटल जात रहल। इहे पर आधारित एगो किस्सा बा जेकर बाद एगो जगह के नाम 'मूसे प्यास' अथी ले बा।

एगो मजदूर दिन भर धूप में काम करके घरे आवेला। गन्ना रोपे के समय रहल, इ खातिर फजीरे पाँच बजे से साँज के पाँच बजे ले लगातार काम रहल। उ मजदूर के जोर से बूखाड़ होला, तप से पूरा शरीर आग लियन गरम हो गल रहल। ओकर घर होली बहुते परेशान होल काहेकि एकर से पहले कब्बो ऐसे नँय होल रहल। रात भर उ तप से मजदूर तड़पेला। फजिरे चार बजे उठ के काम करे जायके तैयार होला तऽ ओकर घर होली बोलेला काम करे नँय जाय के। पर मजदूर मजबूर रहेला काहेकि एक दिन नय जाय, उ भी जब गन्ना के खेती होवत रहल तब एक तऽ मालिक के काम करे होला सरदार से मार पड़ी, साथ में दू दिन के पैसा काट देवल जाय। केसनो मजदूर जाला काम करे। घाम तऽ जोर से रहल। पानी पीएके निर्धारित समय रहल। मजदूर के बहुत प्यास लगेला पर परत रहल पानी पियाय होला के इन्तजार करेके। काम करते-करते मजदूर खेत में दूर चल जाला। जब पानी पियाय होला आवेला तऽ दूर चल जाला। जब पानी पियाय होला आवेला तऽ इ नँय जानेला। इ बीच पानी पिये के समय समाप्त हो जला। मजदूर आवेला तऽ देखेला पानी पीयाय होला अपन पानी के टोकड़ी में तनिकुन पानी छोड़ले रहल। उ लगेला पानी पीये। उही समय सरदार आवेला औरू लगेला मजदूर के चाबुक से मारे। बाकि मजदूर लोग सरदार के समझाय खोजेलनजा कि एक्रा तेज बूखाड़ बा, तप से मरल जाता पर चाबूक के बौझार होले गइल। मजदूर बिलकते रहेला 'मूसे प्यास', अर्थात`monsier' (श्रीमान) मुझे प्यास लगी थी। बेचारा मजदूर हौजे मर जाला। उ दिन से उ जगह के नाम 'मूसे प्यास' रखल गइल उ मजबूर मजदूर के याद में जोन double cut policy के शिकार होल।

एसने अत्याचार सहलन जा बहुते मजदूर लोग। 1901 में गाँधी जी मॉरीशस आवेलन तऽ ई सब देख-सुन के मजदूर लोग के आपन लैका लोग के पढ़ाय-लिखाय के प्रोत्साहित करेलन, साथे उ लोग के राजनीति में रूचि देखाय के प्रेरित करेलन। 'गाँधी जी बोले थे' उपन्यास में अभिमन्यु अनत इ बात के रखले हवन। आज उही सीख से खेतिहर के लैका लोग, इ देश के अपन हाथ में लेके, हैजा गिरमिटया से गोवरमेट चलावत हवन जा।

References: -

- Teelock V, Bitter Sugar: Sugar and Slavery in 19th century Maritius (MGI, 1998).
- Beejadhur.A Indians in Mauritius, 1935, Eng Translation: 1995.
- Adamson A, Sugar without slaves (Yale University Press: 1972).
- Carter Manna, 'The Transition from Apprenticeship to Indentured Labourers in Mauritius (London,1987).
- Unnuth. A, 'Laal Pasina', Rajkamal Prakashan (2010).
- Unnuth. A, 'Gandhiji Bole the', Rajkamal Prakashan (2008).
- 'Mauritiuseer Bhojpuri Saahitya'-MGI Publication (2016).
- Selected Folktales of Mauritius-MGI Publication (2017)

परिचय-डॉ. गिर्जानन्दसिंह बिसेसर (अरविन्द)
Head, School of Mauritian & Area studies, MGI, Mauritius.

आवरण कथा

प्रोफेसर (डॉ.) चंद्रेश्वर

हिन्दी कविता में खेती-किसानी

खेती-किसानी आ किसान प हर दौर में कविता के सिरिजना भइल बा। गोस्वामी तुलसीदास के 'कवितावली' में एगो कवित्त बा जेवन सबका जुबान प रहेला-**"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी। जीविका बिहीन लोग, सिद्यमान सोच बस, कहैं एक एकन सो, कहां जाई,का करीं।"** एक जगह 'रामचरितमानस' के किष्किन्धाकाण्ड में एगो चौपाई आइल बा -- **"कृषि निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहि मोह-मद-माना।"** एकरा पहिले कबीर 'कुसल किसानी' के चर्चा अपना एगो पद में कर चुकल रहन। उर्दू शायर-लेखक अली सरदार जाफरी 'कबीर बानी' में ओह पद के संकलन व्याख्या सहित कइले बाड़न। सोगहग पद देखीं सभे-

"गगन घटा घहरानी साधो, गगन घटा घहरानी।
पूरब दिस से उठी है बदरिया, रिमझिम बरसत पानी।
आपन-आपन मेंड़ सम्हारो, बह्यो जात यह पानी।
सूरत-निरत का बेल निहायन, करै खेत निर्वानी।
धान काट मार घर आवे, सोई कुसल किसानी।
दोनों थार बराबर परसैं, जेवें मुनि और ज्ञानी।।"

एह तरह से देखल जाय त मध्यकालीन हिन्दी कवियन के कविता में जगह-जगह गंवई परिवेश आ लोक में खेती-किसानी अवरू किसान चेतना के प्रसंगानुसार अभिव्यक्ति भइल बा। कबीर, जायसी आ सूरदास के काव्य में किसान के अपराजेय जिजीविषा के महसूसल जा सकत बा। हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक प्रोफेसर मैनेजर पांडेय के एगो पुस्तक बा- 'भक्तिकाल और सूरदास का काव्य' जेवना में ऊ सूरदास के काव्य में कृषि-संस्कृति आ किसान-चेतना के अन्वेषित करे के महत्वपूर्ण काम कइले बाड़न। असल बात ई बा कि भारत देश मुख्य रूप से एगो कृषि-सभ्यता आ गांव-केन्द्रित देश रहल बा। एह से एहिजा के हर भाषा आ बोली में,लोक साहित्य में खेती-किसानी के बात आ प्रसंग समाइल बा।

हिन्दी खड़ी बोली में 'किसान' शीर्षक से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के एगो खंड काव्य लोकप्रिय रहल बा। एह में गुप्त जी भारतीय किसान के सामाजिक, आर्थिक दशा के बारे में यथार्थपरक ढंग से लिखले बाड़न। ऊ किसान कविता में लिखत बाड़न-

बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा-सा जल रहा।
है चल रहा सन-सन पवन, तन से पसीना बह रहा ।।

देखो कृषक शोषित, सुखाकर हल तथापि चला रहे।
किस लोभ से इस आंच में, वे निज शरीर जला रहे ।।

घनघोर वर्षा हो रही है, गगन गर्जन कर रहा है।
घर से निकलने को गरज कर, वज्र वर्जन कर रहा है।।
तो भी कृषक मैदान में, करते निरंतर काम हैं।
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम हैं।।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के किसान ठेठ भारतीय किसान हवें, जे हर मौसम के प्रतिकूलता से लड़त-जूझत फसल उगावे के जानेलन, बिना केवनो लालच आ मुनाफा के। एही दौर के एगो दोसर प्रतिनिधि कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के एगो कविता 'कर्मवीर' बहुते लोकप्रिय रहल बा। ई कविता सीधे त किसान प नइखे लिखाइल, बाकिर एकरा के पढ़त बेर किसान कर्मवीर के रूप में जरूर इयाद आवत रही। ओह दौर में कविता यथार्थ के साथ आदर्शवाद आ नैतिकता के जमीन के ले के रचाइल बा। कवि एगो उपदेशको के भूई प ठाढ़ बा। ओह दौर में कवियन के कविता कला में एगो अवरू खूबी दिखाई परत बा कि ओकर सरोकार गंवई लोक जीवन से जुड़ल रहल बा।

मैथिलीशरण गुप्त के समय में बालमुकुंद गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियो किसान जीवन के अभाव आ संघर्ष पर कविता लिखले बा लोग।

छायावादी-प्रगतिशील कवि सुमित्रानंदन पंत के एगो कविता- 'कवि किसान' में कवि के किसान से तुलना कइल गइल बा-

जोतो हे कवि, निज प्रतिभा के
फल से निष्ठुर मानव के अंतर,
चिर जीर्ण विगत की खाद डाल,
जन्मभूमि बनाओ सम सुंदर।
बोओ, फिर जन-मन में बोओ,
तुम ज्योति पंख नव बीज अमर,
जग जीवन के अंकुर हंस-हंस,
भू को हरीतिमा से दें भर।
पृथ्वी से खोद निराओ, कवि,
मिथ्या विश्वासों के तृण कर,
सींचो अमृतोपम वाणी की
धारा से मन भव हो उर्वर।

पंत के एह कविता में कवि आ किसान दूनों के कर्म आ रचना के, उत्पाद के लोक कल्याणकारी बतावल गइल बा। दूनों के सामाजिक जिम्मेदारी तय बा।

विद्रोही कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के कविता 'बादल राग' में किसान अधीर बा बादल राग सुने खातिर-

रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर कांप रहे हैं।
धनी,वज्र गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन मुख ढांप रहे हैं।
जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

पंत-निराला के बाद के उत्तर छायावादी-प्रगतिशील-प्रगतिवादी हिन्दी कवियन में रामधारी सिंह दिनकर, नरेंद्र शर्मा, भगवती चरण वर्मा, बालकृष्ण शर्मा नवीन,शिवमंगल सिंह सुमन, रामेश्वर शुक्ल अंचल, आरसी प्रसाद सिंह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, शील, भवानी प्रसाद मिश्र, रामविलास शर्मा, शंकर शैलेन्द्र, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद के कवितन में गांव अवरू किसान के जीवन-संघर्ष के नीमन अभिव्यक्ति भइल बा। शील के त कविते ना, एगो नाटको 'किसान' शीर्षक से लोकप्रिय रहल बा। एह नाटक के मंचन पृथ्वी थियेटर से क-क बेर भइल रहे, पृथ्वी राज कपूर के निर्देशन में। किसान के जीवटपन आ जुझारूपन प केदारनाथ अग्रवाल के एगो कविता पढ़ीं सभे- 'किसानों का गाना'-

हमारे हाथ में हल है,
हमारे हाथ में बल है,
कि हम बंजर को तोड़ेंगे-
बिना तोड़े न छोड़ेंगे।

कड़ी धरती इधर भी है,
कड़ी धरती उधर भी है,
कि हम उसको विदारेंगे-
न चूकेंगे, न चूकेंगे।
पसीना खूब सींचेंगे,
रुधिर सारा उलीचेंगे,
कि हम मिट्टी भिगोएँगे-
छने आटे-सी माड़ेंगे।

हमें जो कोई टोकेगा,
हमें जो कोई रोकेगा,
कि हम उसको हटाएँगे-
न कुछ कानून मानेंगे।

हम अपना बीज बोएँगे,
हम अपना प्राण होमेंगे,
कि आजादी उगाना है-
गुलामी को मिटाना है।

एगो दोसर कविता में किसान आ श्रमिक वर्ग के अपराजेयता पऽ जन कवि केदारनाथ अग्रवाल लिखत बाड़न-

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है
जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है
जो रवि के रथ का घोड़ा है
वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा।

जो जीवन की आग जला कर आग बना है
फौलादी पंजे फैलाए नाग बना है
जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है
जो युग के रथ का घोड़ा है
वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा।

हिन्दी के प्रगतिशील काव्य धारा में केदारनाथ अग्रवाल के कविता में बुन्देलखण्ड के लोक जीवन के गाढ़ आ चटक रंग लउकत बा त नागार्जुन में मिथिला आ त्रिलोचन में अवध के लोक जीवन आ संस्कृति के गाढ़ रंग आ सरोकार झलकत बा। एह कवियन के कविता में किसान के परिवर्तनकारी ताकत बतावल गइल बा।

एगो आपन कविता में त्रिलोचन लिखत बाड़न-

बिगुल बजाओ और बढ़ चलो,
यह सम्मुख मैदान पड़ा है।
मानवता के मुक्तिदूत तुम,
कौन तुम्हारे साथ अड़ा है।
यह संघर्ष काल आया है,
आयी जय यात्रा की बेला,
तुम नूतन समाज के स्रष्टा,
पग जीवन में ध्वनि गर्जन का।

एह दौर के कवियन में एगो नयकी आशा, नवका निर्माण के सपना आ परिवर्तन के भाव साफ-साफ परिलक्षित कइल जा सकत बा। कवियन के कविता समय सापेक्ष आ आपन युग से जुड़ल होला। एही से हिन्दी कवि मुक्तिबोध ओकरा के 'कालयात्री' कहले बाड़न। सन १९१७ में सोवियत क्रांति, सन १९४७ में भारत देश के आजादी आ सन १९४९ में चीनी क्रांति के ओह दौर में ई प्रभाव सहज-स्वाभाविक रहे। समय बदलला के साथ कवियन के कवितो में बदलाव होत गइल बा। जनकवि नागार्जुन के मन सोलहो आना एगो मिथिलांचल के गांव के साधारण किसान के मन रहल बा। ऊ आपन गांव के पगडंडी के धूल के 'चंदनवर्णी' कहत बाड़न। ऊ देश-दुनिया घूम के जब आपन गंवई लोक में प्रवेश करत बाड़न त उन्हुकर हुलास आ उमंग देखत बनत बा। ऊ मैदान में गहुंम के पाकल बाली वाला बोझा के ढेर देखत बाड़न त खुशी से झूम उठत बाड़न आ ओकरा के सोना के समुन्दर से बिम्बित करत एगो कविता लिखत बाड़न-'सोनिया समंदर'। ऊ लिखत बाड़न -

"सोनिया समंदर सामने लहराता है/जहां तक नजर जाती है/सोनिया समंदर/बिछा है मैदान में सोना ही सोना/गेहूं की पकी फसलें तैयार हैं/बुला रही हैं खेतिहरों को- "ले चलो हमें खलिहान में/ घर की लक्ष्मी के हवाले करो/ले चलो यहां से/बुला रही हैं गेहूं की फसलें/ अपने-अपने कृषकों को।"

असल में आजादी के बाद से निरंतर आपन देश भारत में विकास के नाम प गांव, किसान, गरीब आ गांधी के विचारधारा के उपेक्षा होत आइल बा। बाद के हिन्दी कविता में ना त मैथिलीशरण गुप्त वाला स्थूल आदर्शात्मक आख्यान मिली, ना नैतिक उपदेश। ओकरा में प्रगतिवादी-साम्यवादी आंदोलन के आशा, उम्मीद आ सपना जरूर मिली। बाकी प्रयोगवादी आ नयी कविता के दौर में कवि केदारनाथ सिंह के कविता में अपना तरह से गांव, किसान, कमजोर आ गांधी के ले के बहुत महीन आ कलात्मक ढंग से एगो विमर्श ठाढ़ करे के प्रयास भइल बा। केदारनाथ सिंह बलिया जनपद के चकिया गांव के हवन। ई भोजपुरी अंचल के एगो मुख्य केंद्र ह। केदारनाथ सिंह के कविताई में एह अंचल के माटी के सुबास महसूसल जा सकत बा। ऊ आपन एगो कविता 'रास्ता' में बहुत महीन आ कलात्मक ढंग से एगो विमर्श ठाढ़ कइले बाड़न। एह कविता में शहर से गांव जाए वाला

तीन जन कुछ दूर पगडंडी प चलि के रास्ता भूल जात बा लोग। ओह लोग के रास्ता एगो बूढ़ किसान आ गाय के सहयोग से पता चलत बा। किसान ओहिजा ठाढ़ बा जेहवां सूरज डूब रहल बाड़न। तीनों शहरी जन ओह बूढ़ किसान से दूरे से पूछत बा लोग त ऊ एगो गाय के तरफ ढेला फेंकत बा आ ऊ चल देत बिया। ओकरा पीछे-पीछे ऊ चल देत बा लोग-

"अब दृश्य बिल्कुल साफ था/अब हमारे सामने गाय थी/किसान था/रास्ता था/ सिर्फ. हमीं भूल गए थे/जाना किधर है!"

एह कविता के निहितार्थ जेवन व्यंजना से जुड़ल बा, ऊ ई कि हमनी के देश में रास्ता भा समाधान कृषि आ ग्रामीण संस्कृति से निकली, शहरी संस्कृति से ना। कवि केदारनाथ सिंह के पास नयी आ समकालीन कविता के एगो अद्भुत किस्सागोई वाला जादुई शिल्प बा। ई शिल्प आपन कहन के ले के जेतने सादगी भरल बा, ओतने आपन अंतर्वस्तु में गूढ़ार्थ के छुपवले बा। ई अनायास नइखे कि कवि केदारनाथ सिंह आपन एगो कविता में अपना के किसान के बेटा कहले बाड़न-

"फिर नक़्शा जैसे कोई किला हो/मैं उसमें घुसा/ एक किसान का बेटा मैं/सुबह से शाम तक/भटकता रहा नक़्शे में/मैं वहां घूमा गड़ेरियों के पीछे-पीछे/और नदियों की यादाश्त में/मैं वहां लेटा रहा।"

बहरहाल, हिन्दी में सन१८५७ के सिपाही विद्रोह से ले के सन १९६७ के नक्सल आंदोलन तक किसान आंदोलन के क्रम चलल बा आ ऊ आजु तक जारी बा; बाकिर किसानन के सुदिन ना आइल। किसान आंदोलन आ किसान जीवन पर सीधे नयी कविता, अकविता आ समकालीन कविता के दौर में हिन्दी में कविता लेखन कम भइल बा। हिन्दी के अपेक्षा बोलियन में गीत ज्यादा लिखाइल बा। एकर मुख्य कारण ई रहल बा कि हिन्दी में कवि कर्म अधिकांशतः शहरी अभिजन संस्कृति के हिस्सा बनत गइल बा। बावजूद एह सब के हिन्दी में साठोत्तरी पीढ़ी में धूमिल आ विजेन्द्र के कविता में किसान जीवन के संघर्ष, अभाव आ तेवर के, गुस्सा आ बेचैनी के, एगो किसानी संस्कृति के गहिरारे असर के देखल जा सकत बा। कवि धूमिल आपन एगो कविता 'समाजवाद थर-थर कांपता है' में लिखत बाड़न-

"जमाखोर गेहूं पर बैठ कर अन्न के अभाव का/राग अलापता है/एक तिजोरी कच्ची नींद लेने की जम्हाइयां लेती हैं/और किसान के मुंह पर कंछा पानी भर जाता है/ अनाज के बालियों की याद/कहां है हथियार/तहखाने में उकड़ू बैठा समाजवाद थर-थर कांपता है/कैस्त्रो की दाढ़ी में झांकता है/प्रधानमंत्री का एक पका हुआ बाल।"

सन १९७० में लिखाइल उपरोक्त कविता में धूमिल सोवियत संघ के संशोधनवाद के विरोध कइले बाड़न आ समाजवाद के झूठ के सामने ले आइल बाड़न। ऊ एगो दोसर कविता 'आत्मीय सम्बन्ध' में लिखत बाड़न-

"मैंने उन्हें कीचड़ से पानी निथारकर/पीते हुए देखा है/ मैंने उन्हें गोबर में से अनाज/ निकाल कर खाते हुए देखा है/भूख और अन्न का आत्मीय सम्बन्ध/मैंने इतने पास से देखा है कि/आंखें भर आई हैं।"

धूमिल के काव्य में अइसन बिम्ब आपन तीखापन आ करुणा के साथ कई जगह देखाई परेला। एगो कविता- 'किसानः एक दृश्य' में ऊ लिखत बाड़न-

"वह पूरे सीवान से बड़ा है/खेतों को हरियाली सौंपकर/बांस के डंडे को ठोड़ी से लगाए हुए/एकदम सीधा खड़ा है/उसने अपना चेहरा उछालकर फेंक दिया है/और खेतों को हरा किया है।"

१९६५-६८ के दौर में लालबहादुर शास्त्री आ इंदिरा गांधी के शासन काल के समय में भारत में हरित क्रांति के शुरूआत भइल रहे। नेहरू जी के शासन काल के अंतिम दौर में देश के भीतर खाद्यान्न संकट पएदा भइल रहे आ ओकरे बाद हरित क्रांति के तत्कालीन सरकार जरूरत महसूस कइले रहे। हरित क्रांति के ले के गरीब किसान के जीवन में जेवन विसंगति पएदा भइली स, ओकरो प धूमिल 'हरित क्रांति' शीर्षक से तीन गो कविता लिखले बाड़न। असल में ऊ एगो किसान बाप के बेटा रहलन आ गांव में रहि के बहुते करीब से खेती-बारी अवरू किसानी के मरम देखले रहलन। उन्हुका मये काव्य में, ओकरा अंतर्वस्तु में किसान के फिकिर, तकलीफ, तनाव, आक्रोश, द्वंद्व आ उजबुजाहट के महसूसल जा सकता।

हिन्दी कवि विजेंद्र लगभग धूमिल के समकालीन कवि रहल बाड़े। अगर धूमिल के काव्य के केंद्र में एगो ठेठ पुरबिया किसान देखाई परी त विजेन्द्र के काव्य में ब्रज मंडल आ ओकरा से सटल राजस्थान के किसान के जीवन के जीवटपन आ जुझारूपन देखाई परी। विजेन्द्र किसान के 'लोकनायक' के दरजा देत 'लोकनायक' कविता में लिखले बाड़न-

"अन्न ही बल है, ऊर्जा है,
सूर्य के ताप का
हवा के वेग का
जल की लहर का
अग्नि के तेज का
कृषक के प्राण का
अन्न ही ईश्वर है
कण प्रति कण में
वही है गति
जो उगाता है खेत को कमा कर
वही है नायक लोक का।"

धूमिल के बाद सन १९७० के बाद के कवियन में आलोक धन्वा आ गोरख पाण्डेय के कविता में गरीब किसान अवरू खेतिहर मजदूर के विद्रोही तेवर देखल जा सकेला। आलोक धन्वा आपन मशहूर कविता 'गोली दागो पोस्टर' में लिखले बाड़न-

जिस जमीन पर
मैं अभी बैठकर लिख रहा हूँ
जिस जमीन पर मैं चलता हूँ
जिस जमीन को मैं जोतता हूँ
जिस जमीन में बीज बोता हूँ और
जिस जमीन से अन्न निकालकर मैं
गोदामों तक ढोता हूँ
उस जमीन के लिए गोली दागने का अधिकार
मुझे है या उन दोगले जमींदारों को जो पूरे देश को
सूदखोर का कुत्ता बना देना चाहते हैं।

यह कविता नहीं है
यह गोली दागने की समझ है
जो तमाम कलम चलाने वालों को
तमाम हल चलाने वालों से मिल रही है।

एही तरह से गोरख पाण्डेय आपन एगो लमहर कविता 'उठो मेरे देश!' में लिखले बाड़न-

"हिंसक हो उठो/मेरे गरीब किसान-मजदूर देश/मेरी वंचित ममता/मेरे लुटे हुए प्राण/मेरी निर्वासित आत्मा/मेरी अपमानित कविता/हिंसक हो उठो।"

सन १९८०-९० के बाद से लेके आजु तक के जेवन नवहा-पुरान कवियन के पीढ़ी बा, उन्हुका लोग के कवितो में खेती-किसानी अवरू गंवई लोक जीवन से दूरी बढ़ते गइल बा। हिन्दी कविता पऽ शहरी संस्कृति आ मिजाज के कवि लोग हावी बा। गांव प आ किसान प लिखल पिछड़ापन मानल जात बा।

हिन्दी में सन २०१४-१५ में कविता प एगो बहस चलल रहे- 'लांग नाइनटीज' के लेके। 'वागर्थ' पत्रिका में। ई भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता से निकले वाली मासिक साहित्यिक पत्रिका ह। ओह घरी एकर संपादक रहलन नवां दशक के एगो कवि एकांत श्रीवास्तव। एह में कहल गइल कि नब्बे के दशक में जेवन कवि कविता लिखत रहे लोग अबहियों ऊहे समकालीन कविता के परिदृश्य प देखाई परत बा लोग अवरू सामाजिक-आर्थिक स्थितियन में भा वैश्विक स्थितियन में केवनो बिसेस बदलाव नइखे आइल। ई एगो नवां दशक के कवि के पहल पऽ फर्जी बहस ठाढ़ भइल रहे। असल में हिन्दी में नवां दशक (१९८० के बाद) के कवि लोग जेवन गांव के लोक से जुड़े के कोशिश कइले रहे ओह लोग प कवि केदारनाथ सिंह के काव्य शैली के प्रभाव रहे। ओह लोग के कविता में भोजपुरी के शब्दन के प्रयोग त भइल रहे बाकी गंवई जीवन के, खेती-किसानी के संघर्ष आ यथार्थ मुखरित ना भइल रहे। एह लोग के कविता में लोक जीवन के शब्दन के छौंक-बघार रहे, वर्तमान सच्चाई कम। ई लोग भोजपुरी लोकगीतन के शब्दावली आ मुहावरो के अपनवले रहे। सही वैचारिकी आ दिशा-दृष्टि के अभाव में कवियन के एह पीढ़ी के कवियन के काव्य यात्रा लगभग स्थगित हो गइल। एह में से कुछ कवि सत्ता के परिक्रमा करे में लागि गइल बा लोग त कुछ कवि सधुवाए लागल बा लोग।

बहरहाल, नवां दशक के एगो कवि कृष्ण कल्पित के हम चर्चा कइल चाहब जे थोरिका लीक से हटि के लिखेलन। ऊ आपन एगो कविता में लिखत बाड़न-

एक नकली किसान
एक नकली मुख्यमंत्री के सामने
एक नकली पेड़ से लटककर मर गया
और नकली पुलिस और नकली जनता
देखती रही
सब नकली थे
लेकिन मृत्यु असली थी।

नवां दशक के हिन्दी कवियन में किसान चेतना आ गांव के परिवेश पऽ एगो अगहर कवि अष्टभुजा शुक्ल के कविता देखीं- "चैत के बादल"

मुँह अन्हारे/सन्न मारे/गाँव में माया पसारे/
कहाँ से उपरा गये/भड़ुए, अधी ये चैत के बादल!
बालियों से झुकी-झपकी-पकी/धरती सम्पदा का
गेहूँआई आंचल/इनकी कृपा पर छोड़ कर आश्वस्त होना
भूल होगी/इनका, कौन थाया, क्या ठिकाना ?/बिदबिदाएंगे/या पाथर छरछराएंगे
छिनगाएँगे पल्लव/बालियों से अन्न झारेंगे
या करेंगे कुदिन/पशु-परानी के लिए पितकोप
रोग फैलाएँगे/बौर लसियाएंगे/लगने नहीं देंगे टिकोरे
उखमजी व्यवहार से/माघ में/जब सींचना था/तब नहीं लौके/जब बयाना हो गई घर की मसूर
जब फसल पक कर हुई तैयार/तब फूँकने खलिहान
आये हैं/राशि की राशि सड़ाने, गड़गड़ाने
चौधराहट दिखाने/चैत के
इन गीदड़रोएँ बादलों को देख कर
याद आते हैं/भाद्रपद के वे घने काले मतंगों की तरह
मेल्हते, एंडते, मुड़ियाए चले जाते
सघन-घन, पनिगर और बतधर
खन-खन बदलते रंग/चैत के
इन नाटकी, मोघी, छछन्नी बादलों को देख कर
याद आते हैं/वर्ष-वर्षों से तृषित
चातकों को/दो बूँद पानी/हाथ से अपने पिलाते
शरद के शुभ्राभ्र वे सितकेश/पितृव्य जैसे
स्नेह से भीगे नयन, करुना अयन
भरे परसंताप से/ये मिटाने पर उतारू
गरल जैसा जल उगलने को विकल।

एने हाले में एगो कविता के संकलन छपल बा- 'हिन्दी कविता में किसान'। एकर संपादक बाड़न नीरज कुमार मिश्र आ अमरजीत कौंके। एकरा में १०० से बेसी हिन्दी कवियन के कविता संकलित बाड़ी स। हिन्दी में किसान प छिटपुट कविता लिखेवाला कवियन में अरुण कमल, उदय प्रकाश, नरेंद्र जैन, रमाशंकर यादव 'विद्रोही', शंभु बादल, कौशल किशोर, कैलाश मनहर, सवाई सिंह शेखावत, जीवन सिंह, शैलेन्द्र शांत, बुद्धि लाल पाल, भारत यायावर,शरद बिल्लौरे, मदन कश्यप, हरिश्चंद्र पाण्डे, देवीप्रसाद मिश्र, सविता सिंह, मिथिलेश श्रीवास्तव, एकांत श्रीवास्तव, दिनेश कुशवाह, बद्री नारायण, चंद्रेश्वर, निलय उपाध्याय, शैलेय, जितेन्द्र श्रीवास्तव, विनोद पदरज, श्रीप्रकाश शुक्ल, संतोष चतुर्वेदी, कुमार मुकुल,राकेश रंजन, भास्कर चौधरी, बलभद्र, देवेन्द्र आर्य, प्रभात, हरे प्रकाश उपाध्याय, कुमार वीरेंद्र, बसंत त्रिपाठी, श्रीविलास सिंह,विजय सिंह, महेश पुनेठा, सूर्य प्रकाश जीनगर, कुमार बिन्दु, जसिंता केरकेट्टा,विहाग वैभव, अनुज लुगुन, हुकुम ठाकुर, शंकरानन्द, कुमार बिन्दु, चंद्र, बच्चा लाल उन्मेष,गोलेन्द्र पटेल, अंजुम शर्मा, संदीप निर्भय, अनुराग अनंत, राकेश कबीर, भानुप्रकाश रघुवंशी, हरेराम सिंह, मिथिलेश कुमार राय आदि के नाम गिनावल जा सकेला।

पाद टिप्पणी: 'भोजपुरी जंक्शन' के संपादक आ भोजपुरी के सुपरिचित कवि-गीतकार आ गजलगो भाई मनोज भावुक के अचानके फोन आइल, भोर में कि एगो लेख लिखे के बा- हिन्दी कविता में खेती-किसानी, भोजपुरी जंक्शन के 'खेती-बारी विशेषांक' खातिर। हम उनका के ना, ना कह सकनी। उनका चुनौती के स्वीकार कर लिहनी। ई लेख कम समय में लिखाइल बा त जाहिर बा कि एह में बहुत कुछ छूट गइल होई। ढेर कवियन के नाम चर्चा आ सूची से बाहर रहि गइल होई। एह चर्चा से बाहर रहि गइल सब कवियन से क्षमा चाहब।

परिचय- बक्सर, बिहार में जनमल आ लगभग साढ़े चार दशक से लेखन में सक्रिय चंद्रेश्वर जी के अब तक हिन्दी-भोजपुरी में आठ गो पुस्तक प्रकशित बाड़ी स। यूपी, बलरामपुर के एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज से हिन्दी के प्रोफेसर आ अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्ति के बाद आजकल लखनऊ में रहि के लेखन कार्य कर रहल बानी।

इरशाद खान 'सिकन्दर'

हिंदी-उर्दू गजल में खेती-किसानी

बात जदि बिसेस रूप से हिंदी/उर्दू साहित्य के कइल जाव त एह विषय पर कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक के पहाड़ खड़ा हो जाई। बलुक उर्दू में त लगभग सौ बरिस पहिले 'किसान' अउरी 'जमींदार और किसान' नाम से पत्रिका भी छपत रहे। हमरा विशवास बा कि एकरे अलावा भी बहुत पत्रिका/अखबार छपत रहल होई या आज भी छपत होई जेकर जानकारी हमरा लगे नइखे।

ई बात तऽ जगजाहिर बाटे कि भारत एगो कृषि प्रधान देस बा। तऽ जवना देस में जवन चीज के प्रमुखता रही ओकर असर ओह देस के कला-संस्कृति ही ना बलुक मनुष्य के आचरन पर भी पड़ल स्वाभाविक बा। तऽ एह में कवनो आश्चर्य के बात नइखे कि 'भारत के या भारत में, रहे वाला लगभग हर रचनाकार/ कलाकार, कबो ना कबो कम चाहे अधिका गाँव-गिराँव, बाग-बगइचा, खेती-किसानी, ताल-पोखरी, पुरुवा-पछुवा, बाढ़-सूखा, बियाज-मजूरी से संबंधित रचनाकरम करते आइल बा। चाहे ऊ कवनो बोली भाषा भऽ क्षेत्र के होखे।

बात जदि बिसेस रूप से हिंदी/उर्दू साहित्य के कइल जाव त एह विषय पर कविता कहानी उपन्यास नाटक के पहाड़ खड़ा हो जाई। बलुक उर्दू में त लगभग सौ बरिस पहिले 'किसान' अउरी 'जमींदार और किसान' नाम से पत्रिका भी छपत रहे। हमरा विशवास बा कि एकरे अलावा भी बहुत पत्रिका/अखबार छपत रहल होई या आज भी छपत होई जेकर जानकारी हमरा लगे नइखे।

हम एह घरी 'हिंदी-उर्दू गजल में खेती किसानी' विषय पर लिखे बइठल बानी लेकिन दिमाग में एतना कुछ चल रहल बा कि विषयांतर हो जाए के खतरा बनि गइल हऽ जइसे कि त्रिलोकी नाथ उपाध्याय जी के कई गो भोजपुरी रचना रफीक शादानी साहब के अवधी गीत/गजल महाकवि घाघ के कविता अउरी कहावत-

खेती करै बनिज को धावे
ऐसा डूबै थाह न पावै

रामसरूप जी के लिखल 'कम्युनिज्म और किसान', रामनारायण त्रिपाठी 'मित्र' जी के कवितावली 'किसान-सन्देश', परम आदरणीय मैथिलीशरण गुप्त जी के लिखल "किसान", मोहम्मद हैदर हसन 'नश्तर' जी के लिखल उर्दू नाटक 'प्रेमी किसान' श्री रमाशंकर यादव 'विद्रोही' जी के कविता 'नयी खेती'-

मैं किसान हूँ
आसमान में धान बो रहा हूँ
कुछ लोग कह रहे हैं
कि पगले आसमान में धान नहीं जमता
मैं कहता हूँ कि
गेगले-घोघले

अगर जमीन पर भगवान जम सकता है
तो आसमान में धान भी जम सकता है
और अब तो
दोनों में एक होकर रहेगा–
या तो जमीन से भगवान उखड़ेगा
या आसमान में धान जमेगा

अवतार सिंह "पाश", आलोक धन्वा, राजेश जोशी, अष्टभुजा शुक्ल, गोरख पाण्डेय माने कि केकर-केकर नाम लीं अऽ केकर छोड़ीं। जदी हम एह में अझुरा गइनीं तऽ निकलल मोश्किल बा तऽ समझदारी एही में बा कि विषय के तरफ लवटल जाव। अऽ संपादक मनोज भावुक जी विषय देले बानी कि "हिंदी उर्दू गजल में खेती-किसानी"।

तऽ भाई लोग, कृषि के अरबी में जिराअत, फारसी में काश्तकारी अऽ अपना हिन्दुस्तानी में खेती-बाड़ी कहल जाला। एही तरे किसान के फारसी में दहकान या दहकाँ कहल जाला। 'गजल' अरबी फारसी के रूट से चलत-चलत हिन्दवी, हिंदी, दकनी, रेख्ता, उर्दू तक चहुँपल विधा बाटे। जइसन कि रउरा लोग जानते होखब कि हिन्दवी, हिंदी, दकनी, रेख्ता सब के सब एके भाषा के अलग-अलग नाम बा जवन कि सबसे अंत में उर्दू नाम से प्रसिद्ध भइल अउरी आज ले कायम बा। अब हिंदी अऽ उर्दू दू गो अलग-अलग भाषा कइसे बनल एकरा खातिर फोर्ट विलियम कालेज के इतिहास रउरा लोग पढ़ सकऽतानीं।

कृषि के अरबी में जिराअत, फारसी में काश्तकारी अऽ अपना हिन्दुस्तानी में खेती-बाड़ी कहल जाला। एही तरे किसान के फारसी में दहकान या दहकाँ कहल जाला। 'गजल' अरबी फारसी के रूट से चलत-चलत हिन्दवी, हिंदी, दकनी, रेख्ता, उर्दू तक चहुँपल विधा बाटे। जइसन कि रउरा लोग जानते होखब कि हिन्दवी, हिंदी, दकनी, रेख्ता सब के सब एके भाषा के अलग-अलग नाम बा जवन कि सबसे अंत में उर्दू नाम से प्रसिद्ध भइल अउरी आज ले कायम बा। अब हिंदी अऽ उर्दू दू गो अलग-अलग भाषा कइसे बनल एकरा खातिर फोर्ट विलियम कालेज के इतिहास रउरा लोग पढ़ सकऽतानीं।

गजल के आकर्षण ही कुछ अइसन बा कि एकरा मोह से आज हिन्दुस्तान के शायद ही कवनो बोली-भाषा बांचल होई।

कवनो समय गजल केवल बादशाह नवाब, अमीर-उमरा अऽ तवायफ के महफिल के शान रहे। शायद एही से गजल के विषय भी आम आदमी से बहुत दूर रहे लेकिन जब गजल जइसन दमदार विधा आम आदमी अऽ खेती किसानी के बात के अपना भीतर समेटलस तऽ निश्चित रूप से न केवल गजल के विषय के विस्तार मिलल बलुक बात में अउरी ओजन पैदा हो गइल। अब एहिजा एगो बात कहल बहुत जरुरी बा कि कुछ लोग कहेला गजल बहुत सीमित विधा बाटे, तऽ हमरा विचार में ई उहे लोग कहेला जेकर अभ्यास कमजोर बा, गजल सीमित विधा ना, कठिन साधना हऽ। अऽ जे केहू भी एह विद्या के साध लेवेला ऊ गजल में कवनो विषय के पिरो सकेला, शरत खाली एके गो बा कि दुनिया जहान के बात होई लेकिन गजल के जुबान में। हाँ, ई बात जरूर बा कि गजल कवनो किसिम के अभद्रता बर्दाश ना करेले चाहे ऊ व्याकरण या भाषा संबंधित अभद्रता होखे चाहे वैचारिक या सामाजिक। आईं कुछ शेर के माध्यम से खेती-किसानी के बात पढ़ल अ समझल जाव-

खेती-किसानी के बात गजल के जुबान में कइसे कइल जाला ई बात जाने खातिर खुदा-ए-सुखन माने कि मीर तकी मीर साहब के लगे चले के पड़ी।

वो तुख़्म-ए-सोख़्ता थे हम कि सर-सब्जी न की हासिल
मिलाया खाक में दाना नमत हसरत से दहकाँ को
मीर तकी मीर

तुख़्म-ए-सोख़्ता-जला हुआ झुलसा हुआ बीज सरसब्जी- हरियाली, दाना-अनाज, नमत-अनुरूपता, दहकाँ-किसान

अब खुदे देखीं सभे कि कइसे मीर साहब अपना अउरी अपना महबूब के बात कर रहल बाड़ें लेकिन उपमा अइसन कि फसिल के दशा अउरी किसान के मनोदशा दूनो के चित्रण हो रहल बा। एही के कहल जाला गजल के जुबान अर्थात सजल-संवरल, मँझल, सुन्दर अलंकृत भाषा-

अब एगो शेर मिर्जा गालिब साहब के देखीं-

कारगाहे-हस्ती में लाला, दाग-सामाँ है
बर्के-खिर्मने-राहत खूने-गर्मे-दहकाँ है
मिर्जा गालिब

कारगाहे-हस्ती- जीवन की कर्मभूमि, लाला-लाल रंग का फूल, दाग-सामाँ- घाव देने का साधन, बर्के-खिर्मने-राहत- सुख-चैन के खलिहान पर गिरने वाली बिजली, खूने-गर्मे-दहकाँ- किसान का गर्म खून

एह शेर में पूरा के पूरा दर्शन के भाव बाटे लेकिन

उपमा अऽ प्रतीक रउरा लोग देखते बानी।

जिस खेत से दहकाँ को मयस्सर नहीं रोजी
उस खेत के हर खोशा-ए-गंदुम को जला दो
अल्लामा इकबाल

खोशा-ए-गंदुम- गेहूँ की बाली

उपरोक्त पंक्ति अल्लामा इकबाल साहब के नज्म 'फरमाने-खुदा' से बा जवना में किसान के दुर्दशा पर आक्रोश प्रकट कइल गइल बा।

अब हम बिना बेसी बतकही के खेती-किसानी के उपमा या समस्या से जुड़ल कुछ अइसन शेर रउरा लोगिन के पढ़वावे के चाहऽतानी जवना के समझल उपरोक्त शेर के मोकाबले आसान बा कम से कम भाषाई स्तर पर।

वो गाँव का इक जईफ दहकाँ सड़क के बनने पे क्यूँ खफा था
जब उसके बच्चे जो शहर जाकर कभी न लौटे तो लोग समझे
अहमद सलमान

जईफ दहकाँ- बूढ़ा किसान

बारिशें जाड़े की और तन्हा बहुत मेरा किसान
जिस्म और इकलौता कम्बल भीगता है साथ-साथ
परवीन शाकिर

तमाम फसलें उजड़ चुकी हैं न हल बचा है न बैल बाकी
किसान गिरवी रखा हुआ है लगान पानी में बह रहा है
शकील आजमी

हलाल रिज्क का मतलब किसान से पूछो
पसीना बन के बदन से लहू निकलता है
आदिल रशीद

वो असीरे-हुस्ने-बयान हूँ मैं जबान का वो किसान हूँ
कि जमीन मुझको जहाँ दिखी वहीं इक खयाल को बो दिया
एहतेशामुल हक सिद्दीकी

असीरे-हुस्ने-बयान- आकर्षक वाचन शैली से बँधा हुआ

मुहताज दाने-दाने को यारो किसान है
हाकिम को है पड़ी हुई अपने लगान की
अजीमुद्दीन साहिल

मिलती हैं कितनी रोटियाँ मेहनत की धूप में
पूछे कोई ये खेत में जा कर किसान से
सर्वत जैदी भोपाली

मशीन बोना है जिनका पेशा उन्हें जमीं बेच दी है तुमने
किसान होकर खुद अपनी मिट्टी पलीद करने की ठान ली है
ऐनुद्दीन आजिम

गंदुम की बालियों से बहुत रौशनी हुई
इस रौशनी से कर्ज न उतरा किसान का
अहमद फाखिर

गंदुम- गेहूँ

न मिल सका कहीं ढूँढे से भी निशान मिरा
तमाम रात भटकता रहा किसान मिरा
नश्तर खानकाही

एह कड़ी में उत्तर प्रदेश के बलरामपुर निवासी स्वर्गीय शायर पद्मश्री बेकल उत्साही जी के चर्चा एह से बेहद जरूरी बा काहे कि उनकर समग्र रचना संसार गाँव से जुड़ल रहे। उदाहरण स्वरुप उनकर शेर देखीं-

अब तो गेहूँ न धान बोते हैं
अपनी किस्मत किसान बोते हैं

गाँव की खेतियाँ उजाड़ के हम
शहर जाकर मकान बोते हैं

बेकल साहब के गजल माटी के गजल रहे अउरी उनकर पढ़े के अंदाज बहुत मधुर, उनकर एगो प्रसिद्ध गजल रहे-

जबसे तुम जवान हो गए
शहर भर की जान हो गए

एही गजल के एगो शेर में तनी हई रंग देखीं-

गाँव में गजल को देखकर
गीत सब किसान हो गए

एतने भर ना, बेकल साहब अपना किताब के नाम भी एकदम गँवई अंदाज में धरत रहन- जइसे कि 'गजल साँवरी, 'मोती उगे धान के खेत', 'पुरवाइयाँ' इत्यादि-

एह लेख के विषय अइसन बा कि एहपर कबो लेख पूरा ना हो सकेला। एगो बात लिखाई तऽ चारि गो छुट जाई। अब जइसे कि इयाद आवऽता कि जोश मलीहाबादी साहब के नज्म 'किसान', कैफी आजमी साहब के नज्म 'किसान', साहिर लुधियानवी साहब के नज्म 'जागीर' पर चर्चा बाकिए रह गइल लेकिन हम इहो जानऽतानी कि जदी एह पर चर्चा शुरू होई तऽ फिर एकरा बादो कुछ ना कुछ इयाद आवते रही। एही से हम अपना एगो शेर के साथे एह लेख के एहिजा अधूरा छोड़ऽतानी।

ईंट उगती देख अपने खेत में
रो पड़ा है आज दिल किसान का

परिचय- गजल संग्रह 'दूसरा इश्क', 'आँसुओं का **तर्जुमा**' अउर "जौन एलिया का जिन" (प्रसिद्ध शायर जौन एलिया के त्रासद जीवन पर केन्द्रित) से चर्चा में आइल इरशाद खान सिकन्दर संत कबीर नगर (उ.प्र.) के रहनिहार हईं आ उर्दू, हिंदी, भोजपुरी तीनों भाषा में अनवरत सृजन कर रहल बानी।

आलेख

डॉ.विनोद कुमार मिश्र

किसान जीवन के सजग पहरुआ रमाकांत द्विवेदी 'रमता'

भोजपुरी भाषी जनता के आय के स्रोत खेती-किसानी बा। भोजपुरी क्षेत्र में आय के दूसर कवनो साधन के विकास नइखे भइल। ओह क्षेत्र में कवनो बहुराष्ट्रीय कंपनी के शाखा नइखे खुलल, ना ही आय के दूसर कवनो संसाधन बा। इहे कारण बा कि आज भी एह क्षेत्र में बसे वाला सामान्य लोगन के आय के पहिलका स्रोत कृषि ही बा। एही के प्रभाव बा कि भोजपुरी के लोक साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास में किसानी संस्कृति के धमक बनल बा। भारत के आजाद होखला के बाद देश में एगो उमंग के भाव फइलल रहे। सब ओरी आशा के किरन लउके लागल। भोजपुरी के कवि भी एह किरन के प्रभाव से दूर ना रहे लोग। उहाँ सभे के मन में आपन दुख से मुक्ति के एगो सपना जागल जवना में शोषण से मुक्त समाज रहे, गाँव में कवनो अत्याचार आ दुख ना रहे। ओह समय के कवि लोगन में रमाकांत द्विवेदी 'रमता' के नाव प्रमुख बा।

भाषा, साहित्य अउर संस्कृति कवनों समाज के जाने के पहिलका माध्यम हऽ। गाँव में साधारन व्यक्ति भी एह बात के खूब बढ़िया से जानेला कि केहू के बारे में कवनों धारणा बनावे से पहिले ओकर भाषा आ भूषा जानल जरूरी बा। कवनो समाज के आदमी जब अपना भाषा में केहू से बोलेला-बतियावेला त ओह बातचीत में खलिहे दुनों जने के बात ना होला बल्कि उनकर पूरा समाज आ संस्कृति के संवाद होला। एह बात के समाज भाषावैज्ञानिक लोग खूब नीमन ढंग से बतइले बा लोग कि कवनो भाषा पर ओह समाज के गहरा प्रभाव होला। इहे कारण बा कि भाषा के बारे में एगो लोकोक्ति प्रचलित बा कि कोस-कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी। ई बदलाव भाषा के स्वाभाविक गुन हऽ आ भोजपुरी भाषा एह के अपवाद ना हऽ।

व्यक्ति आ समाज के अभिव्यक्ति के सबसे मजबूत माध्यम भाषा हऽ। प्रत्येक भाषा-भाषी समाज अपना-अपना भाषा में आपन दुख-सुख के अभिव्यक्त करेला। ई अभिव्यक्ति कबो साहित्यिक विधा के माध्यम से होला त कबो मौखिक रूप से ही लोक में होखेला। मूल-तत्व उ जीवन-राग बा जवन कवनो समाज के अभिव्यक्ति के खातिर प्रेरित करेला। एह जीवन-राग में अनेक भाव अउरी रस बा जवना के आस्वादन से पढ़े वाला लोग में हिलोर पैदा होला। एह बात पर ध्यान दिहला के जरूरत बा कि अलग-अलग भाषा बोले वाला लोगन के जीवन-राग भी अलग-अलग होला, आ उहे जीवन-राग उनका भाषा के साहित्य में सबसे अधिक मात्रा में मिलेला। मिसाल के तौर पर भोजपुरी भाषा के साहित्य में देखल जा सकेला। भोजपुरी भाषा जवना भू-भाग में बोलल जाला ओह क्षेत्र से सबसे अधिक पलायन भइल बा, अभी भी हो रहल बा। उ चाहें आंतरिक पलायन होखे आ चाहें बाहरी। पलायन खातिर उ सरापल क्षेत्र हो गइल बा। एह पलायन के प्रभाव भोजपुरी भाषा के साहित्य में एकदम सोझा-सोझी दीखेला। भिखारी ठाकुर जी एह के प्रमाण बानी। उहाँ के सुविख्यात एगो गीत बा-पियवा गइलन कलकातावा ए सजनी। तूरि दिहलन पति-पत्नी-नातावा ए सजनी। भिखारी ठाकुर जी के एह गीत में पलायन के दरद खूबे नीमन ढंग से अभिव्यक्त भइल बा।

भोजपुरी भाषी जनता के आय के स्रोत खेती-किसानी बा। भोजपुरी क्षेत्र में आय के दूसर कवनो साधन के विकास नइखे भइल। ओह क्षेत्र में कवनो बहुराष्ट्रीय कंपनी के शाखा नइखे खुलल, ना ही आय के दूसर कवनो संसाधन बा। इहे कारण बा कि आज भी एह क्षेत्र में बसे वाला सामान्य लोगन के आय के पहिलका स्रोत कृषि ही बा। एही के प्रभाव बा कि भोजपुरी के लोक साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास में किसानी संस्कृति के धमक बनल बा। भारत के आजाद होखला के बाद देश में एगो उमंग के भाव फइलल रहे। सब ओरी आशा के किरन लउके लागल। भोजपुरी

के कवि भी एह किरन के प्रभाव से दूर ना रहे लोग। उहाँ सभे के मन में आपन दुख से मुक्ति के एगो सपना जागल जवना में शोषण से मुक्त समाज रहे, गाँव में कवनो अत्याचार आ दुख ना रहे। ओह समय के कवि लोगन में रमाकांत द्विवेदी 'रमता' के नाव प्रमुख बा। उहाँ के एगो बहुते नीमन कविता लिखनी 'अइसन गाँव बना दे' –

अइसन गाँव बना दे, जहाँ अत्याचार ना रहे।
जहाँ सपनों में जालिम जमींदार ना रहे।
सबके मिले भर पेट दाना,
सब के रहे के ठेकाना,
कोई बस्तर बिना लंगटे- उघार ना रहे।
सभे करे मिल-जुल काम,
पावे पूरा श्रम के दाम,
कोई केहू के कमाई लूटनिहार ना रहे।
सभे करे सब के मान, गावे एकता के गान,
कोई केहू के कुबोली बोलनिहार ना रहे।

एह पद के ध्यान से पढ़ल जाऊ त पता चली कि कवि के ई पद लिखला के पीछे का मंतव्य बा। गाँव जेतना सुंदर दीखेला ओतने शोषण के केंद्र भी होला। एह बात के उल्लेख डॉ. भीमराव अंबेडकर जी भी बार-बार कइले बानी। उहाँ के गाँव संबंधी विचार रहे कि, "गाँव पारिवेशिकता का प्रतीक है और शहर सारभौमिकता का। गाँव मनुष्य को गुलामी में जकड़ कर रखता है। वह अज्ञान का प्रतीक है। इसके बनिस्बत शहर में स्वतन्त्रता और मुक्ति की गारंटी है। शहर में मनुष्य की चेतना व्यापक होती है।" (आधुनिकता के आईने में दलित, पृ.सं. – 135)

गाँव के किसानी जीवन से अटूट संबंध बा। भारत के गाँव के देश भी कहल गइल बा। किसानी जीवन सही ढंग से गाँव में ही दिखाई पड़ेला। भोजपुरी क्षेत्र में रहे वाला किसान लोगन के सामाजिक स्थिति ठीक नइखे। एहिजा 'सीमांत किसान' अउर 'किसान मजदूर' लोगन के संख्या बेसी बा। किसान मजदूर लोग त दूनो समय खाना खाए खातिर भी बेहाल रहे लोग। मेहनत आ मजूरी के कवनो हिसाब ना रहे लेकिन ओह से अर्जित होखे वाला धन चाहें मुद्रा बहुत कम होखे। एह बात के चिंता भोजपुरी समाज के कवि लोग के इहाँ मौजूद बा। लोक के कंठ में बसे वाला कवि रमाकांत द्विवेदी 'रमता' किसानन के हड्डी गला देबे वाला मेहनत के कायल हईं। इहाँ के एगो पद में लिखले बानी –

भोजपुरी भाषा में लिखे वाला कवि लोग के चेतना में सामाजिक हलचल के बहुते प्रभाव बा। उहाँ सभे के लिखल कविता में ओह समय के इतिहास अंकित बा। किसान जीवन पर लिखे खातिर उहाँ सभे के खलिहे रजिस्टर काला करे के जरूरत नइखे। भोजपुरी में लिखे वाला ढेर कवि लोग के जरी किसान जीवन के भोगल अनुभव बा। इहे कारन बा कि उहाँ सब के कविता, पढ़े वाला लोगन के अपना में बान्हि लेला। उहाँ सब के पक्षधरता आज भी हमनी के रास्ता देखावत बा। रमता जी एह तरह से रास्ता देखावे वाला लोगन में सबसे आगे बानी।

जहवाँ न उजहल खगड़ा-धमोइया,
ओही खेते उपजेला धान।
ओही खेते गेहूँ-बूँट-रहर-मटरन-जव,
ओही खेते गड़ेला मचान।
छिछिलेदर फूँटिया सियरवो ना पूछे,
बांस नियन मकई के थान।
जेकर पसेना बूंन मोती झरि लावेला,
सभे के जियावेला किसान॥

कवि के विचार बा कि किसान के मेहनत के कवनो मोल नइखे। जवन खेत बंजर होखे ओहू में किसान आपन मेहनत से खूब अनाज उगावेला। उनकर मेहनत से बंजर खेत भी लहलहाए लागेला। ओह लोगन के मेहनत के सुखद परिणाम ई होला कि बंजर खेत में भी धान, गेहूँ, बूट, रहर, मटर अउर जव जइसन अनाज पैदा होखे लागेला। रमता जी के अनुभव संसार बहुत लमहर-चाकर बा। उहाँ के एह बात के अनुभव बा कि मकई के खेत में हमेशा सियार के बसेड़ होखेला। सियारन के बसेड़ से मकई के खेत के नुकसान होला। लेकिन एह प्रसंग में उहाँ के सियार के आ मकई के खेत के विशेष रिश्ता बतावत बानी। कवि के कहनाम बा कि किसान के मेहनत से मकई के फसल खूब नीमन भइल बा। मकई के थान बहुत बरियार लागल बा, उ अइसन लागल बा कि ओकर मोटाई के तुलना कवि बाँस से करत बा। एही कारन से मकई के फसल भी बढ़िया भइल बा। पैदवार एतना अधिक भइल बा कि ओकरा के खात-खात सियार के मन भरि गइल बा। एही कारण सियार अब ओह मकई अउर फूट (कंकड़ी के एगो प्रजाति) के ओरि देखत भी नइखे, जवन ओकर सबसे प्रिय लेहन हऽ। एतना बढ़िया पैदावार होखे के मूल कारन किसान के मेहनत बा। इहे किसान पूरा विश्व के जीवनदाता बा लेकिन अइसन जीवनदाता के आपन जीवन बहुत कष्टप्रद बा। 'रमता जी' किसानन के दुर्गम जीवन के सुंदर ढंग से आपन कविता में उतरले बानी –

हँसुआ-खुरुपिया-कुदारी-हर-हेंगा लेके,
दिन में करेला घमसान।
ठेहा पर चूकामूका बइठेला गँड़ासी लेके,
जसही होखेला मुँह लुकान॥
मँस-डँस, पिलुआ-पताई के ना फिकिर करे,
छनकल राखेला बथान।
पिछिली पहर लोही लागेले पहिलकी,
ओही राति जागेला किसान॥

ऊपर जवना किसान-जीवन के बारे में कवि लिखले बानी उ सभे भोजपुरिया भाषी किसान के आपन कहानी बुझात बा। कविता के विषय में बार-बार ई कहल गइल बा कि उ बिंब के माध्यम से समझ में आवेले। रमता जी के काव्य में बिंब के अचूक प्रयोग बा। उहाँ के किसानी किसानी जीवन के केतना गहराई से समझले बानी एह के प्रमाण ई बा कि प्रत्येक किसान के जीवन में 'गो-दान' के आ चाहें गाई/भईस रखे के इच्छा प्रबल होला। किसान के जरी गाई/भईस जरूर रहेले। ओह जानवर के खाए खातिर चरी/हरियरी के इंतजाम किसान करेला। गाई/भईस के खाए वाला चरी/हरियरी काट-काट के छोट आकार में कइल जाला, तब जाके काटल हरियरी के जानवर के खाए के दिहल जाला। पहिले चरी जवना विधि से काटल जात रहे ओह में गाँड़ासी आ ठेहा के जरूरत पड़े, जवना के सुंदर प्रसंग एह कविता में आइल बा। कविता में आइल प्रसंग एह बात के भी सूचक बा कि कवि दूर से खड़ा होके ओह जीवन के नइखे देखत बल्कि अपना अनुभूत सत्य के उजागर करत बा।

भारत के समाज में ही किसान के दशा अइसन बा, ई सोचल गलत होई। भारत के बाहर भी किसान के दशा एह से अलग नइखे। वैश्विक स्तर पर किसान जीवन पर लिखे वाला चर्चित उपन्यासकार के नाम बाल्जाक हऽ। उहाँ के

एगो उपन्यास लिखनी जवन हिंदी में अनुदित होके 'किसान' नाम से प्रकाशित भइल बा। एह उपन्यास में उहाँ के किसान लोग के जीवन में होखे वाला दुख आ ओह दुख के कारन के बारे में लिखले बानी। उहाँ के विचार बा कि, "छोटे किसान की त्रासदी यह है कि वह सामंती शोषण से मुक्त होकर पूंजीवादी शोषण के जाल में फँस गया है। ... सवाल भू-स्वामित्व की सामंती व्यवस्था का नहीं है। सामंती भूस्वामी की जगह पूंजीवादी फौजी जनरल या ऑपेरा गायिका के आ जाने से आम किसान की स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता। किसान की खून-पसीने की कमाई के मुख्य अपहर्ता सामने नहीं होते। पर किसानों का रोजमर्रे के जीवन में जिन बिचौलियों से साबका पड़ता है, उनकी स्थिति अपरिवर्तित रहती है।" (किसान-बाल्जाक, पृ. सं. – 28) फ्रांस के लेखक बाल्जाक किसान के जइसन स्थिति के बारे में बतावत बानी ओह से अलग भारत के किसान के स्थिति नइखे। भारत के किसान भी ओह दुख के झेल रहल बा। ओह दुख के एगो दृश्य रमता जी के इहाँ उपस्थित बा –

जेकरा धरमे बसे शहर-बजरिया,
दिने दिन बढ़ती प शान
जेकरा धरमे अनमन रंग चीजवा से चमचम चमके दोकान
जेकरा धरमे झारि लामी-लामी धोतिया
आदमी कहावे बबुआन
कवनि कमाई राम, आजु चूकि गइलीं कि
गंवई में दुखिया किसान

कवि किसान के स्थिति के एकदम साफ कऽ देले बा कि मेहनत किसान करत बा आ ओकर मेहनत के मलाई केहू अउरी चाभत बा। जी-जान लगा के, घाम, बरखा, पाला आ सीत सहि के किसान फसल पैदा करत बा लेकिन ओह फसल के मोल ठीक नइखे मिलत। एहि फसल के किसान से कम दाम में हथिया के दूसर लोग बड़े-बड़े महल-अटारी खड़ा कई लेले बा, खूब चमकौवा आ लमहर धोती झमकावत बा बाकिर किसान के ना त बेरा से खाए के मिलत बा आ ना पहिने के कपड़ा मिलत बा। रमता जी के कविता शोषण करे के तरीके के एक बार में उघार देले। उहाँ के जरी ओह शोषित किसान के अनुभव बा जवना के धरती-पुत्र होखे के खिताब मिलल बा। जेकरा दुख के कवनो आदि-अंत नइखे। अपना एगो कविता में उहाँ के 'मजदूर किसान'/ 'सीमांत किसान' आ भूस्वामी या जमीदार किसान के बीच में मौजूद अंतर के ठीक ढंग से व्यक्त कइले बानी। कविता के नाम 'भू दान' हऽ –

एने सुबहित सतुआ दूलम,
ओने उड़े मलाई,
एने सपना फटही कामरि,
ओने गरम रजाई,
बाबू कहते जनम सिराइल,
बाबू कूर-कसाई,
फाटऽ धरती!
इहाँ अबरुआ के मेहरि भउजाई,

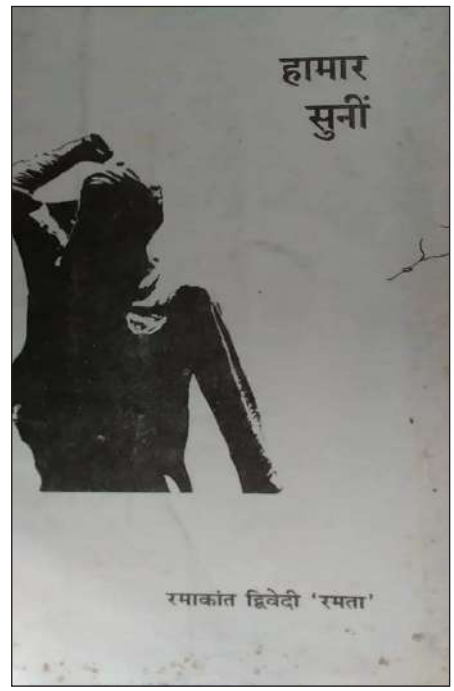

दूगो वर्ग के एकही सोझा रखी के दुनो के यथार्थ वर्णन रमता जी के आपन निजी शैली हऽ। उहाँ के एगो साधनहीन वर्ग (मजदूर किसान) के सामने साधन सम्पन्न वर्ग (जमीदार किसान) के खड़ा कई देले बानी। दुनो वर्ग के घर में बने वाला खाना, पहिने-ओढ़े वाला कपड़ा आ स्वभाव के बिना लाग-लपेट के उजागर कइले बानी। इहाँ के वर्णन कवनो हवा-हवाई बात ना हऽ। एह के ठोस प्रमाण मौजूद बा। राधाकमल मुखर्जी के नाम इतिहास के बढ़िया जानकारी रखे वाला लोगन में शामिल बा। उहाँ के एगो किताब लिखले बानी 'लैंड प्राबलम्स ऑफ इंडिया'। एहि किताब में उहाँ के खेतिहर मजदूर भा मजदूर किसान के स्थिति के चर्चा कइले बानी। उहाँ के विचार बा कि, "The lowest depth of serfdom is touched by the kamies of Bihar, bond servants who, in return for a loan received, bind themselves to perform whatever menial services are required of them by masters in lieu of the interest due to the loan." मुखर्जी जी के कहे के माने ई बा कि खेतिहर मजदूर भा मजदूर किसान के रूप में काम करे वाला लोगन के एगो समूह बा – कामिया। ई लोग जमीदार आ भूस्वामी से कर्ज लेला लोग लेकिन कर्ज देबे वाला आदमी ओह कर्ज से ज्यादा सूद बढ़ा देला। जाहिर बा कि मजदूर किसान उ सूद कहाँ से चुकाई? अइसन स्थिति में उ मजदूर किसान कर्ज देबे वाला आदमी के बेगार (बिना पइसा के खलिहे खाना पर रहे वाला नौकर) बन जाला। उहे बेगार जब अपना जमीदार के भोजन आ कपड़ा से अपना कपड़ा आ भोजन के मिलान करे ला त उहे मिलान रमता जी के आवाज बने ला।

एह पूरा विश्लेषण से एगो बात साफ हो गइल बा कि भोजपुरी भाषा में लिखे वाला कवि लोग के चेतना में सामाजिक हलचल के बहुते प्रभाव बा। उहाँ सभे के लिखल कविता में ओह समय के इतिहास अंकित बा। किसान जीवन पर लिखे खातिर उहाँ सभे के खलिहे रजिस्टर काला करे के जरूरत नइखे। भोजपुरी में लिखे वाला ढेर कवि लोग के जरी किसान जीवन के भोगल अनुभव बा। इहे कारन बा कि उहाँ सब के कविता, पढ़े वाला लोगन के अपना में बान्हि लेला। उहाँ सब के पक्षधरता आज भी हमनी के रास्ता देखावत बा। रमता जी एह तरह से रास्ता देखावे वाला लोगन मे सबसे आगे बानी। रमता जी के कविता के माध्यम से भोजपुरी समाज अपना पुरखा-पुरनिया के दुख-दर्द के आ उहाँ सब के संघर्ष के बारे में जान सकेला। उहाँ सब के संघर्ष के कारन ही ओह समाज में स्वामी सहजानंद सरस्वती जी लेखा किसान के अगहरिया जनमल। रमता जी के पढ़ला के माने अपना समाज के संघर्ष के परंपरा के बहुत नजदीक से जानल बा।

परिचय- प्रो. विनोद कुमार मिश्र, संप्रति आचार्य एवं अध्यक्ष,हिंदी विभाग त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय,अगरतला। भारत अउर मॉरीशस सरकार के द्विपक्षीय अंतरराष्ट्रीय संस्था 'विश्व हिंदी सचिवालय' मॉरीशस के महासचिव (राजनयिक) के पद पर पांच बरिस ले कार्यरत।

आलेख

कनक किशोर

पेशा से शिक्षक, मन से किसान : बलभद्र के पहचान

पीठ पर दुख के गठरी लदले किसान मात्र एगो चरित्र ना ह। ऊ देश के आत्मा ह। ऊ देश के नायक ह। अइसन नायक जे आपन कमजोर कान्ह पर देश के गाड़ी बिना पहिया के खींचे के ताकत रखेला। भले ओह अन्नदाता के पेट में अन्न के दाना ना होखे। किसान खाली एगो मनई ना होखे, ऊ एगो संस्कृति ह जेह में गाँव बा,खेत-बधार बा, गाय-बैल बा, खरिहान बा, बाबा के दलान बा, दइया के अँगना बा, मकई बीच मचान बा, सातु आ पिसान बा, धरती आसमान बा, गोजी आ गमछा बा,पांजा आ बोझा बा, मौसम के मार बा, जानवर के बथान बा।

किसान के जीवन पहाड़ी बरसाती नदी जइसन ह जेकरा में पानी बरसाते में दिखाई देला बाकिर ठहरे ना, जवना गति से आवेला ओही गति से निकल जाला। एह नदियन के नव महीना अगिला बरसात के इंतजार में बितेला। एह नदियन के केहू पिता हिमालय बनके नइखे खड़ा ना कवनो भागीरथ तपस्या कर राह देले बाड़े। एहनी के आपन राह अपने बनावत आगे बढ़े के प्रयास में जिंदा बाड़ी स बाकिर ओहके जिंदा कहल उचित ना होई। इहे हाल किसान के बा। सुख-दुख रूपी पानी जिनिगी में बा ओकरा बाकिर सुख क्षणिक आ दुख स्थायी। ना ओकर केहू माई-बाप, ना केहू भागीरथ। अगर केहू भागीरथ बन किसान के सामने आवेला त ऊ किसान के छले खातिर। ओकर दुख बाँटे खातिर ना, अपना स्वार्थ में। पीठ पर दुख के गठरी लदले किसान मात्र एगो चरित्र ना ह। ऊ देश के आत्मा ह। ऊ देश के नायक ह। अइसन नायक जे आपन कमजोर कन्धन पर देश के गाड़ी बिना पहिया के खींचे के ताकत रखेला। भले ओह अन्नदाता के पेट में अन्न के दाना ना होखे। किसान खाली एगो मनई ना होखे, ऊ एगो संस्कृति ह जेह में गाँव बा,खेत -बधार बा, गाय-बैल बा, खरिहान बा, बाबा के दलान बा, दइया के अँगना बा, मकई बीच मचान बा, सातु आ पिसान बा, धरती आसमान बा,गोजी आ गमछा बा,पांजा आ बोझा बा, मौसम के मार बा, जानवर के बथान बा। सब के बावजूद इहे कहल उचित होई कि किसान एह धरती के हाड़-मांस के बनल ऊ जीव ह जेकर जिनिगी व्यथा से भरल रहेला तबो कठोर से कठोर प्रतिकूल स्थितियो में साहस आ कर्मठता के बल पर आगे बढ़त रहे के जज्बा राखेला। जहाँ व्यथा रही ओहिजा कवि के नजर जइबे करी आ काव्य के धारा फूटबे करी। कवि अपना नजरिया से किसान के अलग-अलग रूप निरेखेला आ ओहके शब्द में बान्हेला। बाकिर बलभद्र, एगो प्रवीण कवि, के किसान एगो पुरान फाटल किताब के जिल्द जस दिखाई पड़ल जेकरा फटलका में से झांकत किसान के आँखि बाहर के ओरि देखत कुछ कहल चाहत बा। जेकरा के केहू रूक के सुनल नइखे चाहत। भागम भाग में समय केकरा पासे बा। बलभद्र नजदीक रह के ओह आँखिन के रूक के देखबे ना कइले पढ़बो कइले,समझबो कइले आ समझले-पढ़ले त खूब लिखबो कइले किसान आ किसान संस्कृति पर। कवनो चीज पर लिखे खातिर अनुभूति आ विचार दूनो के जरूरत होला। ई दूनो के संगे प्रवीणतो बा त बलभद्र के कलम से कुछ विशेष के उम्मीद रखल पाठक के गलत ना कहल जा सके। प्रवीण विशेषन हम नइखी देले। कुछ नया पुरान भोजपुरी साहित्यकार के देल विशेषन ह 'प्रवीण' भा 'चालाक' बलभद्र के बारे में। बलभद्र के साहित्य से गुजरला के बाद एकर प्रमाणो मिल जाला कि नवाजल गइल उक्त दूनो विशेषन गलत नइखे। बाकिर समाज में ऊ दूनो शब्द के अर्थ गलतो लेला लोग आ ई निर्भर करेला बोले वाला के टोन आ भाषा पर, लिखलका में ना बुझाय। अइसे बता दीं बलभद्र एगो किसान पूत हवन आ किसान पूत बचपने में सयान हो जाला आ बूढ़ जस सोचे लागेला त स्वभाविक बा ओकर सयान जस प्रवीण भइल। खैर छोड़ी आवल जाव किसान कवि के कुछ कवितन पर बात कइल जाव आ इहे एह आलेख के मकसदो बा।

'कब कहलीं हम' बलभद्र के पहिला कविता संग्रह ह। एह संकलन में खाली किसान पर लिखल कविता के संकलित नइखे कइल गइल बाकिर संकलित अनेक कवितन में किसान आ किसान संस्कृति आपन मजबूत उपस्थिति दर्ज कइले बा, उहो खाली कलेवर में ना बलुक आपन विविधता में। ओह में गाँव-गिरान-किसान-मजदूर पर खूब बात कइल गइल बा। ई सब किसान संस्कृति के अंग ह बाकिर हम संग्रह के ओह कवितन पर बात एहिजा करब जे किसान आ किसान कर्म से सीधे मुखातिब बा। एगो कविता बा एह संकलन में 'अबेर होइ जाई'। ऊ रेल यात्री के बेर-बेर चेन पुलिंग के समस्या से संबंधित बा। ढेर-ढेर चिंता कवि के बा ओह चेन पुलिंग से बाकिर ओहू में किसान के समस्या नइखे भुलात आ कहत बा कि-

'गइया दुआर खूँटा अन्हके बछरुआ
घरवा बेहाल कवनो नाही रे पहरुआ
नेहिया टँगाइ के बँड़ेर होइ जाई
ठाँवे-ठाँवे रोकब अबेर होइ जाई।'

'घरी छने आवे जे बिजुरिया' गाँव में बिजली के समस्या संबन्धित कविता ह। बिजुरी के आँख मिचौली के खेल से गाँव के आत्मा किसान कइसे प्रभावित ना होखी। कवि के आँखि से ऊ छुप नइखे पावत आ कह रहल बा कि –

'बिजुरी जे बबुआ के बाबू देखे लपकि सिवान चले हो
रामा अँखियन उमड़े सपनवा त मुँह उजियार भइले हो
पनिया जे पहुंचेला खेतवा पहुँचियो ना पावेला हो
रामा छुअलसि जम्हवा बिजुरिया त कइसे के नइया चले हो
आरी-आरी बबुआ के बाबू त काहे माथे हाथ धरे हो
रामा जाँगर फूलेला तोहरे हाथ त गँउवा गोहार करे हो।'

एक देने ई कविता बिजुरी से परेसानी बखान करत बा त दूसर ओरि किसान के जिनिगी के गाथा गा रहल बा। इहे नू किसान के जिनिगी ह। समय सपना देखावेला त मन हरियरा जाला बाकिर सपना पूरे के दिन नियराला त बिजुरिया जाले तसहीं समय सपनवा के कवनो ना कवनो कारण से बिला देला आ किसान पासे माथे हाथ धरे के बइठ जाला। किसान के जिनिगी दुख के गठरी ह। बारह मास में बारह गो दुख बा ओकरा तबो जीवट देखत बनेला ओकर ई बात सुन के कि –

'हम त काँट-कूस चलवइया
हमरा गम काथी के बा
हम त ताल-तूल बन्हवइया
हमरा गम काथी के बा।'
(हमरा गम काथी के बा से)

किसानी के बात होखे आ रोपनी कबरिया के बात ना होखे त किसान गाथा कइसे पूरा होखी। बलभद्र के 'उछाह से' कविता के पढ़ि रउवा पहुंच जाइब ओह बधार में जहाँ भेंट होखी रोपे खातिर तइयार खेत, ओह में उठत पानी के हिलकोरा, रोपनी, कबरिया, रोपनी के गीत, आपसी हँसी-मजाक के साथ-साथ टभकल आ टुभकल से।
टभकल देखीं –

निहुर-निहुर रोपत रही धान रामकिसुन बो/ छउकत-छितराइल पनबदरा के बीच से/ पलखत पवते उझिलत रहन घाम/खउआइल मन से सुरुज महराज/बीया के बोझा पहुंचावत/ थकबक भइल रहलें रामकिसुन।

खेत में उठत पानी के हिलकोरा देखीं –

'कब कहलीं हम' बलभद्र के पहिला कविता संग्रह ह। एह संकलन में खाली किसान पर लिखल कविता के संकलित नइखे कइल गइल बाकिर संकलित अनेक कवितन में किसान आ किसान संस्कृति आपन मजबूत उपस्थिति दर्ज कइले बा, उहो खाली कलेवर में ना बलुक आपन विविधता में। ओह में गाँव-गिरान-किसान-मजदूर पर खूब बात कइल गइल बा। ई सब किसान संस्कृति के अंग ह बाकिर हम संग्रह के ओह कवितन पर बात एहिजा करब जे किसान आ किसान कर्म से सीधे मुखातिब बा।

माथा डोलावत पानी के अकुलाइल हिलकोरा/एने-ओने, कहे-सुने के फेरा में/ लड़ि मरत रहे आरि-मेंड़ से/ बिलाइयो जात रहे बिचहीं में कबो-कबो।

आपस के हँसी-ठिठोली, टुभकल देखत बनत बा एह कविता में –

कि रोपते-रोपत रामकिसुन बो के हाथ में/परल एगो अझुराह आँटी जब/ बोललीं लागहि बात कि/ "अँटिया बन्हले बाड़ऽ/ कि अपना बहिनिया के जूड़ा!"।

रामकिसुन के जबाब देखीं –

घुमावत होखस जइसे धरती-आकाश/ घुमाके फेंकले आँटी छपाक से/ धान रोपत अपना धनिया के ठीक पाछा/ कि उछड़ल रहे छिटिका उछाह से।

कविता के अंत कवि बधार में उठत रोपनी गीत के सुर बतावत कह रहल बा कि –

ओने बधार के ओह कोन से/पुरवइया के लहर पर/ मधुर एगो सुर के संगे-साथे दसहन सुर/ एक होके/छुए लागल रहे सँउसे बधार के मन।

इहां कवि के शब्दन पर, ओकर सूक्ष्म आ प्रवीण दृष्टि पर ध्यान देवे के जरूरत बा। भले कवि पेसा से शिक्षक होखे दिल से किसान बा ना त किसान संस्कृति के अतना महिन आ गझिन बुनावट में शब्द के बान्हल संभव ना रहे। कविता के आखर-आखर कविता से बाहर निकाल किसान के सामने खड़ा करे में सफल रहल बा, जे कवि के प्रवीणता के प्रमाणित करत बा। किसान मेहनती होला। ओकर मेहनत देखि ढेर लोगिन के के कहे सुरूजो बाबा लजा जालन। कविता में एह बात के कवि बड़ी सुनर ढंग से रखले बा–

माथ के गमछा से पोंछ के पसेना/खइनी बनवले/खइनी जमा के/माथ प बान्ह के फेरु से गमछा/बैलन के टिटकरले फेरु से जसहईं/माथ प/आग उगिलत सूरुज/ लजा गइले।

रबी कट जाला त खेत उदास हो जाला। बिखरल-बहकत नजर आवेला। बाकिर जरूरी होला ओकर खाली रहल ई किसान जानेला। ओह उदासी में एगो हँसी छुपल रहल, हित छुपल रहेला। कवि के शब्द ई देखि का कह रहल बा–

रब्बी कटला के बाद के खेत हवे स/ बाबा के बोली में 'सुस्तात'
अइसहूँ भला सुस्ताला केहू !/हँ जी, हँ/ रब्बी कटला के बाद के खेत हवे स/ सृजन के ताप बटोरत।
(सृजन के ताप बटोरत से)

एगो कहावत ह कि ' ... दुश्मन खोजे दांव' ओसहीं कवि बलभद्र खोजले दांव कि कहवाँ किसान भा किसानी के जगह देख घुसा दीं। 'काका के गइला के बाद' में काका के कहानी बतावत किसान के मौसम वैज्ञानिक बता देनीं आ बातो सोरह आना सांच ह।

'आसमान में बदरी कबो झमरी, भा करो खूब झापस/फुहिआई भा फाटी, भा घमरस बरखी/ कबो दिन-दिन भ सुरुज के सँवास ना लागी कि झांकी/ त आँख प तरहथी के ओट से, जब कवनो मौसम विज्ञानी/ थाही कि कबले निबहर हो पाई आकाश/ काका के आई इयाद।'

बाबा के बहाने किसान कर्म आ ओकर विशेषज्ञता के बात रखत कवि कह रहल बाड़े –

'ऊ जानत रहले हर-हेंगा/ दवँरी, ओसवनी, मोट, रेहँट/ आर-गोहट/ करहा-नारी/ खाद-बीया के पकिया रहे आँट /बीया छींटे त काहे के होखे जे पालट/रोआँ से जानि जासि बैलन के सुभाव।'

किसान के दरद केहू ना बूझे। बड़का किसान टोपरा के जोमे आन्हर हो जाला। ओकरा छोटका किसान के घाव पर नीमक छींटत तनिको दया ना आवे। 'फेनु डँटइहें' कविता में जंगी बाबू आ रामकिसुन के कहानी ओहि सपर के बखान कर रहल बा। **"दस कट्ठा कठुली..झँटुली../ दस कट्ठा खातिर/ नास देलस सउँसे टोपरा।"** जंगी बाबू के संवाद टोपरा के जोम बपरावत बा। टोपरा वाला भिरी कट्ठा वाला ना बोले बाकिर मन व्यथित हो जाला आ ऊ सोचेला कि – **"करहा का केहू के कपार प जाला/ जियका त सभकर बरोबर/ दस बिगहा चाहे दह धुर/सभकर त दोसरे में जाला/थोर भा ढेर।"**

खेत के दुख किसान के दुख होला। रामकिसुन के आँखि के ओह दुख के कवि के शब्द में देखीं–

'ठाँवही ताकत रहे उनकर खेत/ पसेनाइल रामकिसुन/ तकलें अपना खेत के ओर/ भितरे-भीतर दरद एगो अँइठत रहे देह/ छोट टोपरी के दरद/ छोटहन आदमी के दरद।'

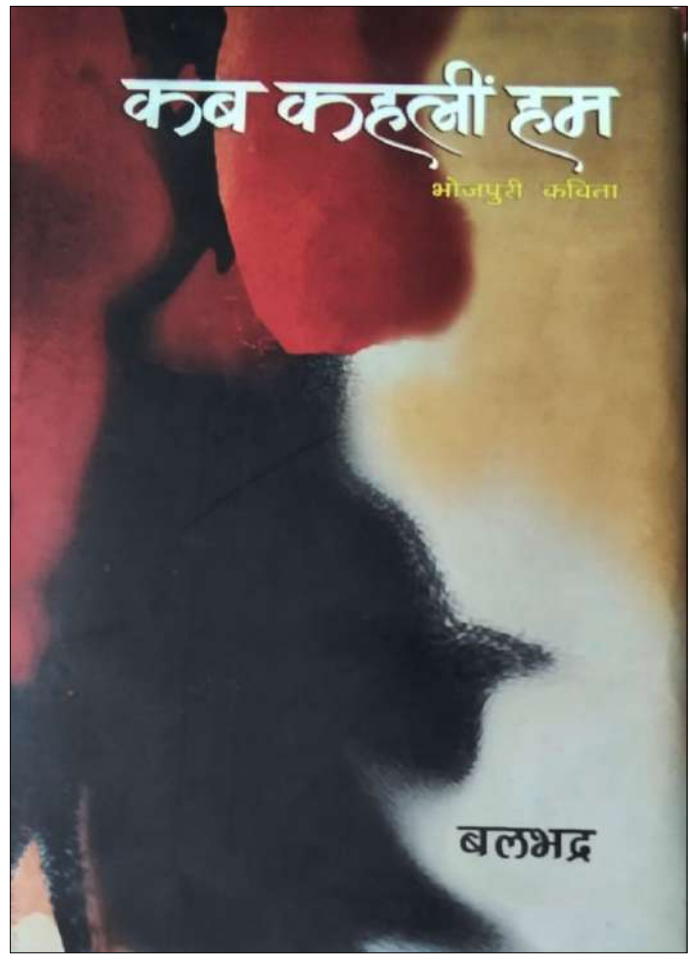

एह संकलन में 'जाड़ा से' नाम से दूगो कविता बा। दूनो में से कवनो में किसान भा मजदूर, गरीब भा भिखारी के जाड़ से बचावे के बात नइखे। बात बा जाड़ के गते-गते आवे के आ गते-गते जाये के। उहो मनई के भलाई खातिर ना धान गेहूं के भलाई खातिर, किसान के भलाई खातिर। कविता के कथ्य नया अंदाजे के नइखे बलुक कवि के सूक्ष्म अनुभूतियन के तरास के अइसे रखल गइल बा कि कवि के नजर के कतनो दाद दिआई कम होखी। कवि एक जगह जाड़ से निहोरा कर रहल बा कि–

'बाकिर का, कि तनी रूकि के आवऽ/जल्दी जनि मचावऽ/मुँह के लाली रखऽ/देखऽ, पूरा अबहीं फूटल नइखन स धान/ बाल कुल्हि नइखन स आइल बहरी/एकनी के तनी मोका द/फूटे के/गँवे-गँवे झूके के/ दूध के चाउर में बदले के।'

ओहिजे दूसरी ओरि जल्दी ना जाये के, तनी रूके के निहोरा कर रहल बाड़न –

'जा मत जल्दी/देखऽ, गेहुम-जौ के बाल/मद्धिम हवा में झूमत पाहि के पाहि/बाड़न स अबहीं काँच कोमल/ दाना अबहू नइखन स सुतरल/ कवनो कवनो में पिच्च से निकलि आवत बा दूध/जे आपन समेट लेबऽ बोरिया-बिस्तर/ हो जाई भारी जुलुम/दाना ना हो पइहन स पोठ/ गरमी आ हाहा से बचावऽ/ तनी रूकऽ।'

ई दूनो कविता अद्भुत बा। भाषा देखीं,भाव देखीं, कथ्य देखीं। गजब के किसान कविता। जल्दी ना भेंटाई। ई समझ, प्रवीणता, प्रवाह कहवाँ भेंटाई बलभद्र के किसान कविता छोड़ि के। भाषा के कलाकारी नइखे। भाव आ अनुभूति के सरल सहज रूप से रखल गइल बा। ई दूसरा जगह ना भेंटाई।

लहलहात फसल देखि किसाने ना अगराला,धरतियो झूमेला आपन सिंगार देखि–

'आल्हर-अल्हेर कुल्हि थानन के देख-देख/ धरती/हुलस आ अनेसा से/आकास के कइलस हथजोरी/अरज-गरज दसो दिसान से/आपन मान बुझवइया किसान से/एक-एक थान अब अपना/जोम में आ गइल/आ धरतियो/ झालर मारत थानन के बीचे-नीचे।' (तेजले तेजाइल ना से)

'के पतियाई' बलभद्र के एगो छोट कविता –

'बरखा में भींजत/ हवा संगे झूमत/ एह हरियर पलाश के देख के/के पतियाई/ कि दहक एगो बाटे/ एह पलाश में/लुकाइल।'

एह कविता में पलाश के जगहा किसान रखि देला पर किसान के जिनिगी एह छोट कविता में समा जाई। कविता के मरम बूझब त किसान के आंतर के दहक लउक जाई।

'कब कहलीं हम' में संकलित किसान संस्कृति संबंधित कवितन में कल्पना आ तार्किकता के समावेस कम बा। आँखिन देखल वास्तविकता से भरल बा जेकरा में किसान जिनिगी आ किसान कर्म से परिचय करावे के अद्भुत क्षमता बा। अनुभव आ विचार के समन्वय कवि बलभद्र के कवितन से गुजरला पर ई स्पष्ट बुझाता कि कवि के माटी आ किसानी के गहिर समझ बा जे कवितन में जगह-जगह फरत-फुलात नजर आवत बा। जहाँ तक भाषा के बात बा लोक प्रचलित ठेठ भोजपुरी के उपयोग रचना के मिठास बढ़ा रहल बा। साथे गाँव के बिला रहल लोक शब्दन के संजोए के एगो सुनर प्रयास कइल गइल बा एह कवितन के माध्यम से। किसान आ गाँव के कवि लोक आ माटी के भाषा में ना लिखी त गाँव आ किसान प कइसे लिखी। किताब पढ़े जोग एगो बढ़िया किताब जे शुरू से अंत ले पाठक के बान्हि के रखत बा आ किसान संस्कृति से रूबरू करावत बा। ई किताब कविता के रूप में गाँव आ किसान के रेखाचित्र ह जे भोजपुरिया अंचल के गाँव आ किसान के सामने ला खड़ा करे में सफल बा।

परिचय- कनक किशोर भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के सेवक। भोजपुरी साहित्य के समर्पित व्यक्तित्व जेकरा संपादन में भोजपुरी के अनेक विधन पर काम करे के प्रयास हो रहल बा।

आलेख

प्रो. जयकान्त सिंह 'जय'

खेती-किसानी के अजगूत कहानी

पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी बिहार के बात कइल जाव त ई पूर्वांचल भोजपुरी भाषा-भाषी मैदानी भू-भाग मुख्य रूप से गंगा, गंडक, सोन, सरजुग आदि कई नदियन से सींचल उपजाऊ इलाका ह। एह इलाका के खेती-किसानी बरसात के पानी आ नदी सब पर निर्भर होला। ई इलाका खेती-किसानी के दिसाईं उर्वर-उपजाऊ भइला के बादो कबो अतिवृष्टि त कबो अनावृष्टि के चलते दहार आ सुखाड़ से हलकान होत रहल। तबहूँ अंगरेजन के आवे का पहिले इहाँ के खेतिहर-किसान अपना पशुपालन आधारित खेती-किसानी आ छोट-बड़ घरेलू उद्योग के सहारे स्वावलंबी खुशहाल जीवन जीअत रहलें।

भोजपुरी लोकजीवन के आधार ह खेती-किसानी। एकरा पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक ताना-बाना के रीढ़ ह खेती-किसानी। वैदिक काल से लेके अंगरेजन के कानून बेवस्था भारत पर जबरन लदाय तक इहाँ के हर तंत्र के आधार रहे खेती-किसानी। जवना में देस के एह पूर्वांचल भोजपुरी भाषी इलाका, जवना के आर्यन के मूल भूमि कहल जाला, के कवनो सानी ना रहे। वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल आ पौराणिक काल के बात छोड़ीं, अठारहवीं सदी तक एह क्षेत्र के हर घर-परिवार पशुपालन आ खेती-किसानी के जरिए सुखी आ स्वावलंबी जीवन जीअत रहे। हरवाहा-चरवाहा के हरवाही-चरवाही के बदौलत समाज आ देस के अर्थ बेवस्था के मजबूती दुनिया में चर्चा के विषय रहे। तरह-तरह के कृषि आधारित उद्योग गाँवा-गाँईं फइलल रहे। गाँव कवनो मामला में नगर पर आश्रित ना रहे। बल्कि, नगर-राज्य के जरूरत गाँव के खेतिहर-किसान पूरा करत रहलें।

पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी बिहार के बात कइल जाव त ई पूर्वांचल भोजपुरी भाषा-भाषी मैदानी भू-भाग मुख्य रूप से गंगा, गंडक, सोन, सरजुग आदि कई नदियन से सींचल उपजाऊ इलाका ह। एह इलाका के खेती-किसानी बरसात के पानी आ नदी सब पर निर्भर होला। ई इलाका खेती-किसानी के दिसाईं उर्वर-उपजाऊ भइला के बादो कबो अतिवृष्टि त कबो अनावृष्टि के चलते दहार आ सुखाड़ से हलकान होत रहल। तबहूँ अंगरेजन के आवे का पहिले इहाँ के खेतिहर-किसान अपना पशुपालन आधारित खेती-किसानी आ छोट-बड़ घरेलू उद्योग के सहारे स्वावलंबी खुशहाल जीवन जीअत रहलें। जवना घरी एह देस आ इलाका में सन १७७१-१७७२ ई. के आस पास विदेसी ईस्ट इंडिया कंपनी आपन जड़ जमावत रहे, ओह घरी एह इलाका में पशुपालन आ खेती-किसानी आधारित कई घरेलू उद्योग आ खास करके सूती वस्त्र उद्योग के बाढ़ रहे। हर बुनकर के घर कार्यशाला (वर्कशॉप) रहे। एह उद्योगन से गाँव-जवार के एगो लमहर आबादी सुखी जीवन जीअत रहे। ऊ अपना आमदनी के खेती में लगा के अधिका से अधिका आय पैदा कर लेत रहे।

फ्रांसिस बुकानन के अनुसार १८वीं सदी के आरंभ में पच्छिमी बिहार के खाली भोजपुर (शाहाबाद) जिला में एक लाख साठ हजार मेहरारू लोग सूत काटे के रोजगार करत रहे। खाली एह जिला के सात हजार से अधिका बुनकर के घर में छव लाख बेयालीस हजार के सलाना उत्पादन होत रहे। बाकिर अंगरेजन कुटिल नीति के चलते सन १८१९ ई. आवत-आवत ई सब सूती वस्त्र उद्योग बंद होखे लागल। (Diwakar R.R. Bihar Thoough the Ages, jaiswal Research Institute Patna- 1959, Page - 766-79)

सन १८६० ई. आवत-आवत भोजपुरी भाषा-भाषी इलाका सहित बिहार के पशुपालन आ खेती आधारित ऊनी उद्योग, सूती आ मिश्रित वस्त्र उद्योग, हथकरघा आदि खतम हो गइल आ बाजार में अंगरेजी कपड़ा आवे लागल। किसानन पर जोर-जुलुम बढ़े लागल। किसानन के उपजाऊ जमीन पर अंगरेज अफीम आ नील के खेती करवावल चालू कइलें। अफीम आ नील के खेती आधारित उद्योग बाँच गइल, जवना के मालिक खुद अंगरेज रहलें। धीरे-धीरे किसान मजदूर बने खातिर मजबूर होत गइलें। खेती-किसानी के दयनीय दशा से इहाँ का किसानन के आर्थिक हालत लचर होत गइल आ लोग बाहर पलायन खातिर मजबूर होत गइलें। एह औपनिवेशिक सत्ता के विकास माडल के चलते किसान मजदूर बनके बाहर जा के मजदूरी करे खातिर लाचार होत गइलें। खेती का जमीन के मालिक जमींदार होत गइलें। जमींदार आ ओकरा आदमियन के अत्याचार किसान लोग पर बढ़त गइल। जवना प्रांत के किसान अपना खेती खातिर आधुनिक मशीनन के इस्तेमाल करत रहलें उनकर आय त कुछ ठीक रहे, बाकिर इहाँ के परम्परागत खेती घाटा देत रहे आ दोसरे किसानन पर लगान बढ़त बोझ ओकर कमर तूड़त रहे। किसान के आपन हैसियत खतम होत जात रहे। ऊ रैयत होत गइलें। जमींदार के रूप में औपनिवेशिक राज्य सत्ता एगो अइसन संवेदनहीन क्रूर बिचौलिया बनवलस, जवन आम भारतीय किसान आ औपनिवेशिक राज्य सत्ता के बीच के एगो कड़ी के काम कइल। जमींदार अपना ताकत आ हनक के जोर पर किसानन के मजबूर करके अधिका से अधिका राजस्व उगाहे लगलें। एह जमींदारी प्रथा के लागू होखते इहाँ के खेती-किसानी खतम होखे लागल। स्वावलंबी आ आत्मनिर्भर गाँव के स्वतंत्र आ स्वायत्त सत्ता गवें-गवें समाप्त होत गइल। औपनिवेशिक राजनीतिक अर्थतंत्र के नयका कर बेवस्था खेती-किसानी खातिर काल बन गइल। मनमाना कर के दर तय होखे लागल। कर का डर से किसान का जमीन के उपज बढ़ावे के हिम्मत ना होखे।

औपनिवेशिक शासन काल में खेती-किसानी के दुर्दसा पर आपन बात राखत पटना के कलक्टर, गया के कमिश्नर आदि के बयान जाने जुगुत बा। पटना का कलक्टर के अनुसार सात बीघा जमीन जोते वाला किसान एक बखत पेट भर खा सकत रहे। पटना के

भोजपुरी के तमाम लोकगीत, लोककथा, लोक नृत्य, लोकनाटक, लोकोक्ति आदि के मुख्य विषय किसान-किसानी, खेतिहर-खेती आ मजदूर-मजदूरी ही रहल बा। राहुल सांकृत्यायन के नाटक 'जोंक', भिखारी ठाकुर के नाटक 'बिदेसिया', विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त के कहानी 'केहू से कहब मत', रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'बिंदिया' आदि कवनो ना कवनो रूप में खेती-किसानी आ किसान-खेतिहर के अपना रचना के विषय बनवले बाड़न। भोजपुरी क्षेत्र के पलायन के समस्या के मूल में बा खेती-किसानी के दयनीय राम कहानी।

कमिश्नर मिस्टर ट्रायनबी के अनुसार पाँच बीघा जमीन वाला किसान साल में १२५/- रुपइया के अनाज उपराजे, जवना में २३/- रुपइया सरकारी कर चुकावे में लाग जाए आ १०२/- रुपइया में छव-छव सदस्य वाला किसान परिवार का सालो भर गुजारा करेके पड़त रहे। इहाँ कहे के अभिप्राय ई बा कि अंगरेजी सरकार भारत के स्वावलंबी आ आत्मनिर्भर गाँव का खेती-किसानी आधारित अर्थ बेवस्था के तहस नहस करके भारत के कंगाल आ कमजोर बनावे के योजना पर काम करत गइलें आ देस का दुर्भाग्य से उनका एह दिसाईं सफलतो मिलत गइल। किसान खेती-किसानी से दूर होके मजदूर होत गइलें। परिवार के परवरिस खातिर मजबूरी में मजदूर रूप में दोसरा परदेस भा देस के जाए ला बाध्य होत गइलें। एही वजह से उनइसवीं-बीसवीं सदी से लेके आज तक आर्थिक तंगी से जूझत भोजपुरी भाषा-भाषी इलाका के जनता जीवन के असली मजा से दूर मजदूर बन के देस-दुनिया में धक्का खात आ रहल बाड़ें। जवना के अभिव्यक्ति से भोजपुरी के लोके साहित्य ना आधुनिको साहित्य भरल-पड़ल बा।

जब किसान खेती-किसानी खातिर स्वतंत्र रहलें। राज्य सत्ता आ राज्य बेवस्था के हस्तक्षेप ना रहे। तब ले किसान आ उनका परिवार आ पड़ोस वाला गाँव-जवार अपना खेती- किसानी के बदौलत सुखी आ स्वावलंबी रहे। एही पशुपालन आधारित खेती आ खेती आधारित उद्योग के विकास आ विस्तार खातिर जगे-जगे पशु आ खेती आधारित उपज आउर उद्योग से उत्पादित सामग्री कीन-बिक्री ला मेला लागत रहे। सोनपुर के मेला एकर एगो नीमन उदाहरन रहल बा। पहिले खेती-किसानी जीवन-व्यापार के उत्तम साधन रहे। खेती-किसानी के उपज से बेवसाय के मध्यम पेशा मानल जात रहे। खेती करेवाला आ बेवसायी लोग किहाँ चाकरी करेवाला लोग के अधम में गिनती होखे आ जे एह सबमें कवनो लायक ना होखे ऊ आपन जिनिगी एह लोग के बीचे भीख माँग के काट लेवे, जेकरा के सबसे निकृष्ट मानल जात रहे। एही तथ्य के भोजपुरी के लोकोक्ति में कहल गइल-

'उत्तम खेती, मध्यम बान, अधम चाकरी भीख निदान।' बाकिर अंगरेजी राज में खेती-किसानी से जुड़ल खेतिहर-किसान के अइसन पातर दिन हो गइल कि भोजपुरी लोक में एगो दोसर लोकोक्ति प्रचलित हो गइल- **'तब के खेती राज रजावे, अब के खेती भीख मँगावे।'**

एक ओर जब रघुवीर नारायण आपन भोजपुरी राष्ट्रीय गीत 'बटोहिया' लिखलें त भारत के कृषि के तहस नहस करके देस के कंगाल बनावे वाला धूर्त अंगरेजन के भारत छोड़ के जाए वाला राही-बटोही बतावत एह तमाम बदहाली के बावजूद भारतीय किसान के धैर्य आ अपना लहलहात धान के फसल पर निहाल होके सुखी होखे का एहसास के बार-बार देखे खातिर कहत बाड़ें-

'जाहु जाहु भइया रे बटोही हिंद देखि आउ जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया।'

बाकिर जइसे-जइसे दिन बीतत जात रहे। अंगरेजन के कुनेत आ कुदृष्टि के चलते देस के किसान आ किसानी दयनीय हालत में पहुँचत जात रहे। एही कारुणिक अवस्था के उजागर करत महान स्वतंत्रता सेनानी 'फिरंगिया' जइसन अमर गीति काव्य के रचयिता प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा अपना गीत में लिखे खातिर मजबूर हो गइल रहलें-

'अन्न धन जन बल बुद्धि सब नास भइल, कौनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया।
जहँवा थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे, लाखो मन गल्ला और धान रे फिरंगिया।
उहें आज हाय रामा! मथवा पर हाथ धरि, बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया।'

जमींदारी प्रथा के चलते किसान आ किसानी के दुर्दिन आ गइल। अंगरेजन के चलावल ई प्रथा भारतीय समाज के भीतर शोषक आ शोषित दूगो वर्ग पैदा कर दिहल। मध्यम कोटि के किसान के हालत बिगड़त गइल। ऊ किसान से मजदूर बनत चल गइलें आ जमींदार सब आ ओकनी के लगुआ-भगुआ जोंक नीयन किसान से खेतिहर मजदूर सबके खून चूसल चालू कर दिहलें। जवना के उजागर करत आचार्य महेंद्र शास्त्री अपना 'इहे बाबू भइया' रचना में लिखलें-

'कमइया हमार चाट जाता, इहे बाबू-भइया।।
जेकरा आगा जोंकों फीका, अइसन ई कसइया।
दूहल जाता खूनो जेकर, अइसन हमनी गइया।
अंडा-बच्चा मरद-मेहर दिन दिन भर खटइया।
तेहू पर ना पेट भरे, चूस लेता चइंया।।'

भोजपुरी के तमाम लोकगीत, लोककथा, लोक नृत्य, लोकनाटक, लोकोक्ति आदि के मुख्य विषय किसान-किसानी, खेतिहर-खेती आ मजदूर-मजदूरी ही रहल बा। राहुल सांकृत्यायन के नाटक 'जोंक', भिखारी ठाकुर के नाटक 'बिदेसिया', विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त के कहानी 'केहू से कहब मत', रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'बिंदिया' आदि कवनो ना कवनो रूप में खेती-किसानी आ किसान-खेतिहर के अपना रचना के विषय बनवले बाड़न। भोजपुरी क्षेत्र के पलायन के समस्या के मूल में बा खेती-किसानी के दयनीय राम कहानी।

भोजपुरी के साहित्य के अध्ययन से ई तथ्य उभरेला के भारत के आत्मा गाँव में बसेला आ गाँव में बसे वाला परिवार आ पड़ोस के

भोजपुरी के साहित्य के अध्ययन से ई तथ्य उभरेला के भारत के आत्मा गाँव में बसेला आ गाँव में बसे वाला परिवार आ पड़ोस के स्वावलंबी जीवन सामूहिक आ सामुदायिक सहयोग पर टिकल होला। जवना के रीढ़ होला खेती-किसानी। कृषि आधारित गँवई जीवन का विकास के मूल में आपसी सहयोग, सहमति, सद्भाव, समरसता, सामाजिकता, सामुदायिकता, सहकारिता आदि रहे। जइसे-जइसे खेती-किसानी कमजोर होत गइल ओइसे-ओइसे गाँव कमजोर होत गइल। गाँव के परिवार आ पड़ोस बिखरत चल गइल। जीवन खातिर जरूरी संसाधन के जुटावे के जोगाड़ में मजबूरन मजदूर बनल गँवई मनई कल कारखाना में काम पावे आ मजदूरी अरजे खातिर शहर धरत गइल।

स्वावलंबी जीवन सामूहिक आ सामुदायिक सहयोग पर टिकल होला। जवना के रीढ़ होला खेती-किसानी। काल्ह तक गँवई समाज के जीवनोपयोगी हर सामग्री के उत्पादन के मुख्य आधार कृषि, पशुपालन आ दूनों के सहयोग पर आधारित कुटीर उद्योग रहे। जवन गँवई अर्थ-बेवस्था के मुख्य अंग रहे। नगदी फसल, खाद्य संस्करण आ लघु उद्योग भी गाँव का आय के बढ़ावत रहे। गाँव के जीवन बहुते सहज-सरल आ स्वाभाविक रहे। कृषि आधारित गँवई जीवन का विकास के मूल में आपसी सहयोग, सहमति, सद्भाव, समरसता, सामाजिकता, सामुदायिकता, सहकारिता आदि रहे। जइसे-जइसे खेती-किसानी कमजोर होत गइल ओइसे-ओइसे गाँव कमजोर होत गइल। गाँव के परिवार आ पड़ोस बिखरत चल गइल। जीवन खातिर जरूरी संसाधन के जुटावे के जोगाड़ में मजबूरन मजदूर बनल गँवई मनई कल कारखाना में काम पावे आ मजदूरी अरजे खातिर शहर धरत गइल। खेती-किसानी पर एकर कुप्रभाव अधिक पड़ल। बाहरी बीआ, रासायनिक खाद, ट्रेक्टर के जोताई आ दमकल का पटवन के महँगाई, दहार-सुखाड़ के मार आदि आर्थिक रूप से तंग किसान के जीअल दुलम कर दिहलस। बिखरत परिवार, बढ़त जनसंख्या, आसमान छुअत महँगाई, रेलवे, सड़क, पुल, कल कारखाना के बाढ़ से खेत जुगुत जमीन घटत चल गइल। आज खेती-किसानी में लागल परिवार में जदि एक-दू सवांग बाहरी कमासुत बाड़ें आ आपुस में सहमति बनल बा तब त ऊ परिवार जरूरत पड़ला पर खेती में दू पइसा लगा के दाब-उलार सह सकेला, आ ना त खेती कइल आम किसान का बस के बात नइखे।

भारत में हरित क्रांति के जनक एम. एस. स्वामीनाथन के अनुसार भविष्य ओही देस के बा जहाँ अनाज बा, ओकर ना जेकरा पाले बन्दूक बा। कृषि जोग जमीन गाँव के सम्पत्ति ह। आगे उहे समाज भा देस खुशहाल रह पाई जहँवा, गाँव, गाँव के खेती-किसानी आ उपजाऊ जमीन, जल, जंगल, जानवर आदि पर आधारित संतुलित पर्यावरण बाँचल बा। आज एह गँवई जीवन आ पर्यावरण पर हर ओर से खतरा बा। डॉ. प्रभुनाथ सिंह के कविता 'कहाँ गइल मोर गाँव रे' के कुछ बानगी देखीं। सब कुछ साफ-साफ झलके लागी-

'बोल रे नेता! बोल रे हाकिम!
कहाँ गइल मोर गाँव रे,
चेंवड़ा में छउकत दुपहरिया,
बुढ़वा बर के छाँव रे।
पनघट से रूसल पनिहारिन,
धनक गइल सब गाछी।
गाय, बयल बिनु खूँटा रोवे,
चीक का घर में बाछी।
हरवाहा चरवाहा के अब बूत रहल बा नाँव रे।'

परिचय- प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह जय भोजपुरी विभाग, लंगट सिंह कालेज, बी. आर. अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार), महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना (बिहार)

छठ विशेष

दिनेश पाण्डेय

छठ पूजा आ एकर कृषि-संदर्भ

देव शब्द के मूल 'दिव' धातु ह जेकर अर्थ दिव्य के व्यक्त करेवाली, शास्त्रन में व्यक्त इन्द्रियवृति ह[1]। ए में भासमान सृष्टि के अलावे ज्ञान के विषय के तात्पर्य शामिल बा। आकाश ठौर के देवता में सुरुज के प्रमुख जगह ह। वैदिक साहित्य में प्रजा के जनक आ पोसक होखे से सुरुज के **'विश्वपति'**[2] के संज्ञा दिहल गइल बा। सुरुज सभकर उत्पादक हवें–**"नूनं जनाः सूर्येण प्रसूताः"**[3]। देवाराधन देवशक्ति के पोषण, बढ़ोतरी आ अनुकूलता पावे के मकसद से संबंधित ह जेकरा पीछे पुष्टि प्राप्त देवता के अनुग्रह से भौतिक, आत्मिक विकास आ जगत कल्याण के भावना मुख्य ह। व्रत शब्द 'वरण' अर्थ वाली 'वृ' धातु से निष्पन्न ह (व्रियते इति व्रतम) जेकर सिद्धि संकल्प भा इच्छा से होला। एह शब्द में प्रयोगविधि, आदेश, आज्ञापालन, कर्तव्य, धार्मिक आ नैतिक आचार, उपासना, पवित्र संकल्प आ संयम के अर्थबोध बा। अरविंद व्रत के संज्ञात्मक इकाई के बेवहार वैदिक अर्थ में कइले बाड़े जेकर आशय 'सत्य के क्रिया' ह। निसंगता, निरहंकारिता, आंतरिक उन्नति, शांति, सरधा के विकास, आरोग्यता, प्राण के पूरापन आ चित्त के चिकनाई के पावना व्रत के परोजन हवें। छठ बरत (व्रत) कोटि के त्योहार ह जेकर

संगतिः-

1. देवा दीव्यतेद्योतनार्थस्य शास्त्रोद्भासिता इन्द्रिय वृत्तयः - छांदोग्य 2.1 के ब्याख्या में शंकर
2. ऋक 1,164.1
3. ऋक 7,63.4

महत्व अनुशासन, प्राकृतिक नियम के कठोर अनुपालन आ भावशुद्धि के अंगीकार का ओजह से आम उत्सवधर्मी त्योहारन के तुलना में बहुत अधिक बा।

कातिक अँजोरिया पख के छठवीं तिथि के बिहार, झारखंड, प० बंगाल, उत्तर प्रदेश, नेपाल के तराई क्षेत्र में प्रमुखता से मनावल जाए वाला छठ, छइठ, छठी पूजा, रनबे माय (मिथिला), डाला छठ भा सूर्य षष्ठी सुरुज के उपासना के परब ह। प्रवासन के चलते देश के अन्य भाग में आ कइयक देशन में एकर फैलाव भइल बा। आन समय में एही के समरूप ललही छठ, चैती छठ, बैसक्खा छठ, अगहनिया छठ मनावल जालें। लोकपर्व छठ, जुग के अंतराल में किंचित बदलाव का संगे, वैदिक काल से चलत आइल सूयोर्पासना के विकसित रूप ह। वैदिक साहित्य में सूर्य, उषा के पूजन के उल्लेख मिलेला, एकरा अलावे विष्णुपुराण, भागवत महापुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण आदि में सूर्यषष्ठी व्रत के जिकिर भइल बा। षष्ठी के बिगरल रूप छठी ह, एही से छठ शब्द बनल।

असल में छठ एकल देवोपासना के परब ना बलु ई शक्ति उपासन के छठवाँ रूप कात्यायनी का संगहूँ जुरल बा। छठ के संबंध में कइयक कथा बाड़ी सँ-

- कतिकी अँजोरिया पख के छठी तिथि के रामराज्य के स्थापना के दिन राम आ सीता सुरुजदेव के उपासना कइले रहलें।
- सोहाग आ पति-प्रेम के पावना खातिर अत्रि-पत्नी अनुसूया एह बरत के आरंभ कइली-

कृतानुसूर्यया ह्येषा अत्रिपत्न्या विधानतः।
सौभाग्यं पति प्रेमातितया लब्धं यथेच्छया।।

- महाभारत काल में कर्ण सुरुजदेव के उपासक रहन। उनुका प सुरुज के किरपा रहे।
- परिजन लोग के आरोग्य आ दीरघ उमिर के कामना से द्रौपदी द्वारा नियमित रूप से सुरुज के पूजा करे के उल्लेख बा।
- राजा प्रियवद के संतान-कामना के पूर्ति खातिर महर्षि कश्यप के करावल पुत्रेष्टि यज्ञ के हवि के असर से रानी मालिनी के पुत्र जनमल बाकिर मूअल। पुत्र के शव लेके श्मशान में मरे प उतारू प्रियवद के ब्रह्माजी के मानस-कन्या देवसेना के सलाह प छठ के अनुष्ठान से इच्छा पूरल। एह कथा में प्रकृति पूजा के साफ संकेत बा। प्रकृति सृष्टि के विस्तार (प्रकृष्ट कृति) ह। प्रकृति देवी के प्रधान अंश के 'देवसेना' कहल जाला जवन सभसे सरेख मातृका हई। प्रकृति के छठा अंश होखे से इनकर एक नाँव षष्ठी ह- **"षष्ठांशा प्रकृतेर्याच सा च षष्ठी प्रकृतिता।"**[5] शक्ति-उपासना में एही देवी के एक नाँव कात्यायनी ह जिनकर पूजा नवरात के छठी तिथि के होला।
- एक कथा में छठी मैया के सुरुजदेव के बहिन आ ब्रह्मा जी के मानस पुत्री कहल गइल बा। सृष्टि-रचना के समय ब्रह्मा जी आपन देह के दू हिस्सा में बाँट दिहलें। उनकर दाहिना हिस्सा से पुरुष और बाएँ हिस्सा से प्रकृति के जनम होखल। फेरु प्रकृति अपना के छव भाग में बँटली। ईहे छठवाँ हिस्सा षष्ठी (छठी) हई।
- ब्रह्म आ भागवत पुराण के अनुसार देवसेना कश्यप-अदिति की मानस पुत्री हई। देवसेना जनमतुआ शिशु के पास रह के छव दिन तक रक्षा करेली एही से इनका के छठ माता कहल जाला। देवसेना सुरुज भगवान के बहिन आ कार्तिकेय-पत्नी हई। इनके नाँव कौशिकी ह। छठ के रात में कोसी भरे के परम्परा के पीछे कौशिकी के पूजन-अरचन के भाव बा।

छठ पूजा में सादगी, पवित्रता आ लोकपक्ष महत्व के बा। भारतीय संस्कृति में व्रत त्योहार के संबंध आत्मिक आ सामाजिक संचेतना के विकास, लोकरंजना के अतिरिक्त मुख्य रूप से प्रकृति से जुड़ाव, ऋतु-परिवर्तन, कृषि-काज आ ते से अरजित उपलब्धि के उमंग से गहिरे जुरल बा। छठ पूजन प्रकृति आ तेकर उपादान सुरुज, जल, वायु आ अग्नि के समर्पित परब ह। एकर संबंध कृषि-सभ्यता के विकासो से बा। कुआर-कातिक के महीना शरद ऋतु के ह एकरा बाद शीत सक्रिय हो जाला। छठ के समय खगोलीय स्थिति में काफी बदलाव आ जाला जवना में विभिन्न कारन से सुरूज से धरती तक पहुँचे वाली परावैगनी किरिन के अधिकता होला। खरीफ फसिल के पाके आ रबी फसिल के बोअनी के समय ईहे ह। ऊखि के कटाई-पेराई आ रस-गुर के परिलब्धि के मौसम ईहे ह। केरा पाके, अमरस डम्हके, सुथनी-सकरकन, सिंघाड़ा पोढ़ाए, मुरई बइठे, लौकी फरे के मौसम ईहे ह, बरखा के बिधंस के बाद घर-बार, खोरी-कूचा, नदी-पोखर के सफाई आ बनाव-सँवार के मौसम ईहे ह। पाकल बाँस से सूप, टोकरी आदि आ तलछटी चिक्कन माटी से बरतन आ अनेक उपयोगी कलात्मक सिरिजन के उपयुक्त समय ईहे ह। समृद्धि के बढ़ोतरी से मन के तिरपित भइले आभार परगट करे खातिर प्रकृति के मुख्य प्रेरक सुरुजदेव के आगू समर्पित होखे के समय ईहे ह, विनय के सामूहिक निनाद गूँजे के समय ईहे ह।

छठ परब के जुड़ाव खेती-बारी से बा, एह बात के तसदीक विनय के सुर समेटले एहि अवसर प गावल जाए वाला लोकगीतन के बारीक अनुशीलन से हो सकेला। विनय में आराध्य के प्रति अनुराग आ अरपन के अलावे विनयी के निजी सुख-दुख, हरख-बिखाद आदि जिनिगी के विभिन्न परिस्थिति आ पहलू के परगटन होला। अगरचे सविता परगट देवता हवें आ उचित उपासना से सभ चाहना के पूर्ति में समरथ हवें **-'किं किं न सविता सूते काले सम्यगुपासित'**[6]- त ए में पुत्र, वित्त आ लोक तीनों 'एषणा' के पूर्ति के तात्पर्य शामिल बा। नीमन करम के मानक त खैर अपना जगह हइए बा बाकिर करमफल में ढेर-ढेर बाधा ह। सारा जीव-जगत प्रकृति देवी के संतान ह, त ए में आपन प्राप्य के

5-ब्रह्मवैवर्त पुराण, खंड 43/46
6-स्कन्दपुराण, काशी खण्ड 9/47

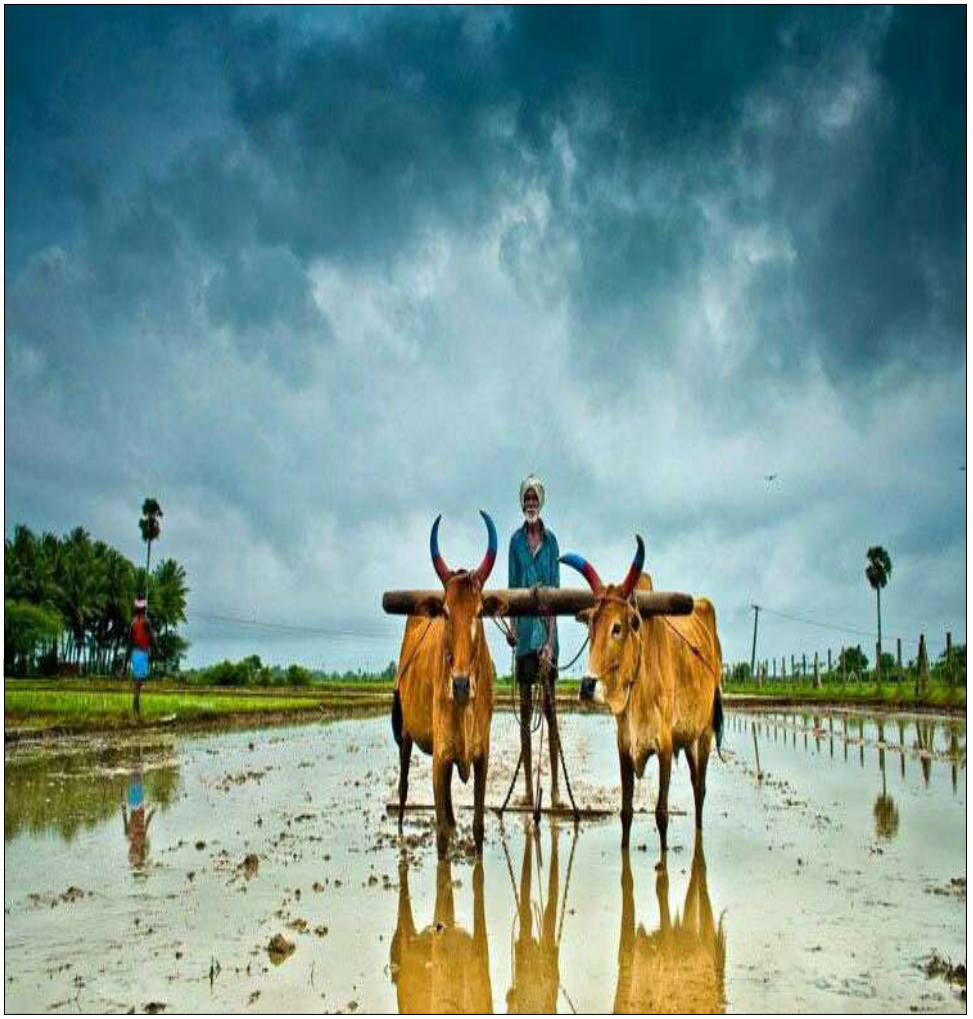

पावना आ तेकर रच्छन कइसे होखी? जैजात के रच्छा के सवाल बा–

"नदिया के तीरे-तीरे बोअलीं में राई,
छठी माई के मिरिगा चरिय चरि जाई।
बान्हीं ए छठी मइया! आपन मिरिगवा,
मरिहें कवन भइया धनुही चढ़ाई।"

घवद-के-घवद केरा फरल बा, सुग्गा मेंड़राता। कहीं भला, साधु के नवान्न ना, चोर के दँवरी? मन संकल्पित बा, पहिला फर सुरुजदेव के अरपन कइल जाई। ... आरे सुगवा! तोहे धनुख से मार घालबि। मुरुछा के गिर जइबे–

"केरवा जे फरेला घवद से ओपरि सुग्गा मेंड़राय।
मारिबों रे सुगवा धनुख से, सुग्गा गिरे मुरछाय।"

कामना के अंत नइखे बाकिर हिंहाँ अफरात के दरकार नइखे, बस ओतिने कि खुद के अभाव महसूस ना होखे आ 'साधु न भूखा जाय'। नइहरे-ससुरे बम-बम रहे। एक सुघर घरुआरिन बदे अउ कवन सुख? सुरुचिपूर्ण गिरहस्ती के अइसन आदर्श के कामना कहाँ भेंटी?-

ससुरा में माँगिले अन-धन लछिमी,
जनम-जनम अहिवात,
छठी मइया! दरसन दीहीं ना अपार।
घोड़वा चढ़न के बेटा माँगिले,
गोड़वा लगन के पतोह,
छठी मइया! दरसन दीहीं ना अपार।
रुनुकी-झुनुकी बेटी माँगिले,
पढ़ल पंडितवा दामाद,
छठी मइया! दरसन दीहीं ना अपार।

कबो-कबो सब इच्छा के अनुरूप ना होखे त का कइल जाव, केकरा से गिला-शिकवा? आपने करम में कवनों खोट होखी बाकिर का मजाल कि आस्था में जवो भर छीजन होखे। एक छठ गीत के भाव–

"अजोधा में चँगेरी बुनल जाला, पता ना कवने ऐगुन से मिलत नइखे। सुरुजदेव, उगीं। बड़ी देर होखल। रउरे उगे से दुनियाँ अँजोर होला आ अस्त होखे से अन्हार। सखी, जाने काहे सुरुजदेव उगत नइखीं।

अजोधा में गहूँ बिकाला। जाने कवने ऐगुन से मिलत नइखे। अउ ए सखी! हई सुरुजदेव काहे नइखीं उगत?"

सभकुछ इच्छा के मोताबिक भइल। समृद्धि बरखता। मन में मनोरथ के उफान नइखे। बखार भरल बा आ आँगन में दोहरी दौरी सँइतल बा, ए छठी माई! तू हमरे घर अइहऽ। माई के दिलासा मन में घुमड़ रहल बा–

"जइबों में जइबों कवन देई के अँगना।
दोहरी दउरिया भरल बाड़े अँगना।।"

एक गीत में स्त्री के पुत्रेषणा साफ उजागर बा– **"काहे लागी पूजेलू तूहूँ देवल-घरवा हे, काहे लागी / करेलू छठ बरतिया हे, काहे लागी / अन-धन सोनवाँ लागी पूजीं देवल-घरवा हे, बेटा लागी / कइलीं छठ के बरतिया हे, बेटा लागी।"**

बात साफ बा कि छठ के जुड़ाव कृषि संस्कृति से बहुत गहिरोर बा।

परिचय–सुनगुन (भोजपुरी काव्य संग्रह) से चर्चा में आइल दिनेश पाण्डेय जी हिन्दी-भोजपुरी के श्रेष्ठ रचनाकार हईं।

शशि कांत मिश्र

महोगनी के माया, माथा पे नोट के छाया !

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम महोगनी खातिर बहुत बढ़िया बा। दोमट माटी में महोगनी के गाछ सना सना के भागेला। पीएच वैल्यू छ सात के बीच रहे त बहुत बढ़िया। महोगनी के ऊंचाई साठ सत्तर फीट तक पहुंच जाला। गाछ पर पत्तई आ डाल कम होला। त रउवा महोगनी के नीचे दोसरो फसल ले सकत बानी। अदरक, हल्दी, ओल जइसन फसल जे छांव में होला, ओकर खेती रउवा आराम से महोगनी के नीचे कई सकत बानी।

कौन बनेगा करोड़पति के सवाल बड़ा उल्टा पुल्टा होला। जवाब खोजे में दिमाग हिल जाला लेकिन अगर केहू रउवा से पूछे कि किसान कइसे करोड़पति बन सकत बा त ओकर बड़ा आसान जवाब बा–महोगनी के खेती कइके! सांच पूछीं त मोट कमाई करे खातिर महोगनी से बढ़िया गाछ कुछु और नइखे।

महोगनी के गाछ रउवा आपन खेत के अरिया, अरिया लगा सकत बानी। खेत खाली होखे चाहें सीजनल खेती ना करे के मन होखे त फेन रउवा पूरो खेत में महोगनी लगा सकत बानी। एक गाछ से दोसर गाछ के बीच के दूरी सात से आठ फीट के बीच रखब। पौधा लगावे से पहिले थल्ला बढ़िया से तइयार करे के चाहीं। भर हाथ लंबा–चौड़ा आ ओतने गहिरा। थल्ला में वर्मी कम्पोस्ट चाहें गोबर के खाद के इस्तेमाल करीं।

ज्यादातर लोग महोगनी, शीशम, सखुआ जइसन गाछ लगवला के बाद ओकरा सेवा ना करेलन। ऊ लोग के लागेला कि इ सब गाछ अपने मन से बढ़ जाई। आधा बात सहियो बा। ई सब गाछ बिना सेवा के भी तइयार हो

जाला लेकिन फेन ओकरा में टाइम दुगुना तीन गुना लाग जाला। कायदे से महोगनी के थल्ला में हर साल कम से कम दू बार कम्पोस्ट डाले के चाहीं। जब तक गाछ पूरा तरह से जड़ ना पकड़े तब तक ओकरा में पानी पटावे के भी इंतजाम करे के चाहीं। चार पांच साल के बाद पानी के जरूरत बस गर्मी में रहेला।

गाछ लगावे के समय दू तीन साल पुरान होखे त बहुत बढ़िया। एकरा से कम उमिर के गाछ के लगावे में रिस्क बहुत ज्यादा होला। गाछ रउवा कौनो बढ़िया नर्सरी से ले सकत बानी। हर जिला के उद्यान विभाग भी किसान भाई लोग के महोगनी देला। रउवा उहां से भी गाछ ले सकत बानी। महोगनी लगावे के सबसे सही समय बरसात ह। वइसे अगर पानी पटावे के व्यवस्था होखे त फेन रउवा महोगनी फरवरी-मार्च में भी लगा सकत बानी। महोगनी में कीट-फतिंगा के जादा खतरा ना होला लेकिन थल्ला के साफ-सफाई करत रहे के चाहीं। ओकरा से गाछ के प्रॉपर वृद्धि होला।

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम महोगनी खातिर बहुत बढ़िया बा। दोमट माटी में महोगनी के गाछ सना सना के भागेला। पीएच वैल्यू छ सात के बीच रहे त बहुत बढ़िया। महोगनी के ऊंचाई साठ सत्तर फीट तक पहुंच जाला। गाछ पर पत्तई आ डाल कम होला। त रउवा महोगनी के नीचे दोसरो फसल ले सकत बानी। अदरक, हल्दी, ओल जइसन फसल जे छांकरे में होला, ओकर खेती रउवा आराम से महोगनी के नीचे कई सकत बानी।

महोगनी के सबसे बड़ खासियत इ ह कि एकर पत्तई आ छाल से लेके तना, फर तक सब बिकाला आ उहो कौनो कम भाव पे ना। एकर फर के कीमत हजार रूपया किलो तक पहुंच जाला। महोगनी के पत्तई के खासियत ह कि ओकरा के मीस के रउवा घर के कौनो कोना में रख दिहीं। मच्छर राम ओकर गंध पावते उड़नछू हो जइहें। कीट-फतिंगा के भी इहे हाल बा। एही से कीटनाशक बनावे वाली कंपनी के बीच महोगनी के पत्ता, छाल आ फर के जबरदस्त डिमांड ह।

महोगनी के असली कमाई होला ओकर तैयार तना से। महोगनी के गाछ असल माने में तैयार होला पच्चीस से तीस साल पे। ओ समय एकर कीमत तीस चालीस हजार तक पहुंच जाला। असल में महोगनी के गाछ बहुते मजबूत होला आ ओकर पचास जगह यूज होला।

महोगनी के सबसे बड़ खासियत इ ह कि एकर पत्तई आ छाल से लेके तना, फर तक सब बिकाला आ उहो कौनो कम भाव में ना। एकर फर के कीमत हजार रूपया किलो तक पहुंच जाला। कीटनाशक बनावे वाली कंपनी के बीच महोगनी के पत्ता, छाल आ फर के जबरदस्त डिमांड ह। महोगनी के असली कमाई होला ओकर तैयार तना से। महोगनी के गाछ असल माने में तैयार होला पच्चीस से तीस साल में। ओह समय एकर कीमत तीस चालीस हजार तक पहुंच जाला।

महोगनी के खेती में बस एकही प्रॉब्लम बा। एकर खेती में थोड़ा धैर्य रखे के पड़ी। दोसर खेती में तीन-चार महीना से कमाई शुरू हो जाला लेकिन महोगनी से कमाई होखे में पांच-सात साल लाग जाला। लेकिन इहो बा कि एक बार महोगनी से कमाई शुरू हो गइल त फेन ओकरा पसंगा में कौनो दोसर फसल ना अइहें। महोगनी के फेड़ त मोट पइसा देबे करी, ओकर पत्ता, छाल, फर सब रउवा के धनवान बनावे में जुट जाई।

परिचय- किसानी आ कलम शशि कांत मिसिर के रग में खून बनके के बहत बा। अठारह साल टीवी पत्रकारिता कइला के साथे तीन गो उपन्यास-नॉन रेजिडेंट बिहारी, वैलेंटाइन बाबा आ मीडिया लाइफ लिख चुकल बानी। फिलहाल मायानगरी मुंबई में सिनेमा-सीरियल खातिर लिखत बानी आ कर्मनगरी कटिहार में मॉडर्न किसानी करत बानी।

शशि कांत मिश्र

खेत में सफेद चंदन घर में नोट के सुगंध!

चंदन के लकड़ी दुनिया के सबसे महंग लकड़ी में से एक होला। एतना महंग कि पूरा दुनिया में एकर दबा के तस्करी होला। आपन देशे में एकर खेती पर कई तरह के बैन रहल ह लेकिन साल 2017 से सरकार एकर खेती के परमिशन दे देले बिया, एगो बड़ शर्त के साथ। शर्त इ बा कि रउआ आपन चंदन के खरीद बिक्री सरकार के जरिए ही करब। सरकार के एह शर्त के बावजूद सफेद चंदन के खेती में भरपूर कमाई के स्कोप बा। सफेद चंदन के खेती से पहिले रउआ एकर जानकारी पटवारी आ डीएफओ के भी दे देब।

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। इ भजन सुनले बानी? ना सुनले होखब त सुन लेब। बहुत बढ़िया भजन ह। भजन के बोल त और लाजवाब। भजन के पहिला लाइन पर गौर करब। प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। प्रभु जी के श्रेष्ठ बतावे खातिर उपमा का खोजल गइल? चंदन। चंदन काहें? काहें कि चंदन आपन गुण धर्म के वजह से श्रेष्ठ होला।

इ त भइल चंदन के गुण धर्म के बात, माल पानी के बात भी बूझ लीं। चंदन के लकड़ी दुनिया के सबसे महंग लकड़ी में से एक होला। एतना महंग कि पूरा दुनिया में एकर दबा के तस्करी होला। आपन देशे में एकर खेती पर कई तरह के बैन रहल ह लेकिन साल 2017 से सरकार एकर खेती के परमिशन दे देले बिया, एगो बड़ शर्त के साथ। शर्त इ बा कि रउआ आपन चंदन के खरीद बिक्री सरकार के जरिए ही करब। सरकार के एह शर्त के बावजूद सफेद चंदन के खेती में भरपूर कमाई के स्कोप बा। सफेद चंदन के खेती से पहिले रउआ एकर जानकारी पटवारी आ डीएफओ के भी दे देब।

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम में लाल चंदन जादे सक्सेसफुल नइखे लेकिन सफेद चंदन खातिर जइसन मौसम आ माटी चाहीं, ऊ आपन भोजपुरिया बेल्ट में मौजूद बा। सफेद चंदन लाल, दोमट माटी में खूब बढ़िया होला। वइसे इ बलुआही माटी छोड़के हर तरह के माटी में हो सकेला। बस कम्पोस्ट के बढ़िया इंतजाम रखे के पड़ी। वर्मी कम्पोस्ट, गोबर के खाद, घेघुआ आ दोसर खर-पतवार के खाद में एकर गाछ के बढ़िया विकास होला लेकिन जादे पानी एकर दुश्मन ह। जड़ में पानी जमा भइल ना कि चंदन बाबू ऊपर गइलन। एही से नेमा खेत में सफेद चंदन भूलाइयो के ना लगावे के चाहीं।

सफेद चंदन के गाछ रउआ आपन इलाका के बढ़िया नर्सरी से ले सकत बानी। जिला उद्यान विभाग भी कभी-कभी एकर गाछ किसान भाई लोग के देला। गाछ दू तीन साल पुराने लेब। ओकरा से कम उमिर के गाछ के मरे के खतरा होला। गाछ लगावे से पहिले थल्ला के बढ़िया से तैयार कइ लेब। खर-पतवार के नामो निशान ना होखे के चाहीं। आधा माटी, आधा कम्पोस्ट के मिक्सर बनाई के ओकरा के तीन चार दिन धूप देखा देब। ओकरा बाद गाछ लगाइब। पानी बस ओतने जेतना में नमी रहे। सफेद चंदन के गाछ के बगल में दोसरो गाछ लगावे के पड़ेला। असल में सफेद चंदन दोसरे गाछ के सपोर्ट से डेवलप होला। ओकर जड़ दोसर गाछ के जड़ के जरिए खाद पानी लेला।

एक गाछ से दोसर गाछ के बीच के दूरी करीब चौदह-पंद्रह फीट रखब। गाछ के खाली रउआ आपन खेत के बाउंड्रीयो पर लगा सकत बानी, मन करे त पूरा खेत में भी लगा सकत बानी। गाछ के बढ़िया से सेवा सुश्रुषा करब त गाछ बारह तेरह साल में तैयार हो जाई। इ बीच के समय में रउआ खाली खेत में ओइसन फसल ले सकत बानी जे छाया में होला। जइसे ओल, हल्दी, अदरक।

सफेद चंदन के लकड़ी आ पाउडर बहुत महंगा बिकाला। फिलहाल एकर रेट तीस हजार रूपया किलो के आसपास बा। एगो तैयार गाछ से दस से बारह किलो पाउडर मिल जाला। इ रेट से रउआ जोड़ के देखब त एक एकड़ से आराम से दस से बारह लाख के कमाई हो जाई। बाकी कमाई के बहुत कुछ ओ समय के रेट आ रउआ फसल के उत्पादन आ क्वालिटी पर निर्भर करत बा।

जहां तक सफेद चंदन से कमाई के बात बा त असली कमाई होई गाछ के पूरा तरह से तैयार भइला के बाद। रउआ के बता चुकल बानी कि सफेद चंदन के लकड़ी आ पाउडर बहुत महंगा बिकाला। फिलहाल एकर रेट तीस हजार रूपया किलो के आसपास बा। एगो तैयार गाछ से दस से बारह किलो पाउडर मिल जाला। इ रेट से रउआ जोड़ के देखब त एक एकड़ से आराम से दस से बारह लाख के कमाई हो जाई। बाकी कमाई के बहुत कुछ ओ समय के रेट आ रउआ फसल के उत्पादन आ क्वालिटी पर निर्भर करत बा।

परिचय- किसानी आ कलम शशि कांत मिसिर के रग में खून बनके के बहत बा। अठारह साल टीवी पत्रकारिता कइला के साथे तीन गो उपन्यास-नॉन रेजिडेंट बिहारी, वैलेंटाइन बाबा आ मीडिया लाइफ लिख चुकल बानी। फिलहाल मायानगरी मुंबई में सिनेमा-सीरियल खातिर लिखत बानी आ कर्मनगरी कटिहार में मॉडर्न किसानी करत बानी।

विविधा

डॉ. मंजरी पाण्डेय

गोबर गोबर जनि कहऽ

अब गोबर गोबर नइखें जेंहिंगा माई बड़ा छोहास त अपना दुलरुआ क कपारे हाथ फेरके कहे "ई हमार बाबू गोबर गणेस" हवें। लोग बागो ई कह देवेला "गोबर गणेसे हवऽ का? कबो ईहो कहेला लोग-दिमाग नइखे? गोबरे भरल बा का? त दोसरे ओरी बियाह सादी भा कथा पुरान कउनो मंगल कारज होखस। चउका पुराला त गवाए लागेला-" गाइ के गोबर अंगना लिपाई.....गोबरा लिपाई गजमोती चउका पुराई.....।

ईहे गोबरे के गउरा गनेस पूजा पाठ में पहिले बइठावल जालें प्रथम पूज्य जे बाने। सोच के देखी कतना विरोधाभास बा "गोबर गनेस" कहला मतलब डम्प, बेवकूफ, बा एकदम सोझ, जेकरा कुछु बुझास ना। त ओहि खानी लोगबाग ईहो कहेला जे "दिमाग नइखे? गोबरे भरल बा का? एसे बूझल जाव कि डम्प, बुरबक खानी कुछ ना बुझास अइसन दिमाग। बाकी ईहो त अर्थ लगावल जा सकेला कि बड़ा उर्वर दिमाग बा। काहे की गोबर बड़ा उपयोगी, उर्वर होला सभे जानेला।

गाई क गोबर त गंगाजल खानी सुध मानल जाला। पूजा पाठ, गौरा गनेस कुल्ही ओहीसे बनावल जाला। बाकी गाई क भा भईसी दूनू के गोबर पथाला जेके, गोहरी, गोईठा, उपला कंडा कई गो नाव से जानल जाला। जलावन के काम आवेला। जेहि पर सुध भोजन बनेला। गांव गिरांव में घर लिपाला। खास दिना भा पूजा-पाठ में आजो सब जगह लिपाला त फेर चउक पुराला। गांव बखारी में जहां गारो मद क कच्चा घर होला तहवां एसे कीड़ा-मकोड़ा, चिउंटी आदी ई कुल्ही से सुरक्षा होला।

हालांकि आज जुग जमाना बदलल बा। तकनीकी जुग जमाना हवे। नया तरीका से ई गोबरो के उपयोग, परयोग बढ़ल बा। गोबरे क दीया दियरी, खेलवना, रंग, पेंट अउर ढेरे कुल साज सज्जा क जिनिस बनऽता।

उपला क छोट-छोट तरह-तरह के डिजाइन, आकार में बना के इम्पोर्ट एक्सपोर्ट हो रहल बा। बड़ बड़ माल, स्पेंसर में देस परदेस में बिचाता।

हमहू एक बेरी मॉल मे बदलल नाव रूप रंग में देख के बूझी नाही पवलीं। पाकेट में नीमन से पैक नाव लिखल रहे (काऊ डंग)। पूछे के परल ई का ह। जवन घरे-घरे पथाय। एगो दूगो तो कब्बो केहू मांग के ले जा सकत रहे। आज एतना कीमती? तुरते फेर मन परल ईहो मिल जाता ईहे कम नइखे। अब घरे-घरे गाय गोरू तो पलात नइखे। घर साफा सुथरा रखे क, अपार्टमेंट में रहे क चलन बढ़ल बा। बड़-बूढ़ जे घरे में बान त रीति परंपरा क कुछ निर्वाह भी हो रहल बा। त लोग दुकानी से साफ सुथरा पाकीट में खरीद के लीयावेला। होलिका में अपने घर बार में जतना सदस्य ओतना गिनती से पंच पंच कण्डा जइसन छोट छोट टिकरी पहिले घरे माई ओई बनावे जा। ऊहे होलिका दहन में अबीर गुलाल बुकवा क झिल्ली मर मीठा अक्षत अउरी जउन होखस कुल्ही होलिका माई में डराय। बाकी आजकल बड़ बड़ सहर में पथला पथावल कहवां होखस बड़ परसानी। गउसाला तक ना मिली। घर अपार्टमेंट में गंदगी कइल ना जा सकेला। फेरू आजकल मरद मेहरारू सब कामकाजी। केकरा फुरसत ई कुल कइला क? हां ईहे करनवा एकर बिजनेस धड़ल्ले से हो रहल बा। परदेसो में खूब चमकल बा गोबरा। एगो कहावत मन परता-

"गोबर जरे गोइठां हंसे"

हमार कहनाम अतने बा कि ई गोबर जतना जेकरे दिमागी में बा, ओतना अर्थ अनर्थ लगावेला लोग। बाकी अर्थ के बात करीं त बहुत अर्थ बा। आजकल पेंड़-पौधा गमलन में लगइले के घर-घर सौक खूब बढ़ल बा। ओतने कंपोस्ट खाद के बिक्री बढ़ल बा। गोबर खूब बिकाता। रोचक एगो बात मन परत बा। एक दिना टीवी पर देखनी आजकल टमाटर के मंहगाई पर एगो मंत्री जी के कहनाम रहे कि जेकरा सउख बा ऊ गमला में टमाटर उगावस नाही त जन खाय।

आजकल घरे-घरे चूल्हा नइखे फुकात, कंडा नइखे पथात, न जरावल जा रहल बा। बाकी बायोगैस से गैस चूल्हा जरवले खातिर, बिजली बल्ब जरवले खातिर गोबरे क परयोग होता। तकनीक के फेर बा। कान कइसहुं पकड़ीं आगे से भा पाछे से कनवा ऊहे अ धराई त कनवे। केहू गोबर गनेस कहे चाहे दिमागी मे गोबर भरले रहे। बहुत काम क बा गोबर अ काम गोबरे आवता।

"गोबर सुंघला से मुसरी जिओ"

काम क बात भइल त बताई कि गोबर चललें विदेस। पहिले बेरी गोबर क विदेसी डिमांड बढ़ल बा। जयपुर से गोबर जी क पहिली जात्रा कुवैत खातिर भइल बा। विदेसो गोबर क उपयोगिता जान गइल बा। कुवैत क कृषि वैज्ञानिक जना एगो सोध में दावा कइले बान कि गाई क गोबर खेती खातिर बहुत लाभकारी बा। एकर परयोग कइला से उत्पादन में जबरदस्त बढ़ावा होला। एही नाही गोबर क गुणवत्ता बनल रहे एहि खातिर गोबरे क पैकिंग कस्टम विभाग के निगरानी में हो रहल बा।

त दू गो लाइन से कहनाम के पुरनाम करेम। गाई खानी हेने ओने कतहूं गोबर क रयता नइखी फइलावल चाहत।

गोबर गोबर जनि करऽ लोगिन
गोबर भइलें सिरमउर।
देस विदेश में नांव कमइलैं
पूजिहिं गनेसगउर।।

परिचय- डॉ. मंजरी पाण्डेय, सेवानिवृत्त शिक्षिका, कवियित्री, लेखिका, रंगकर्मी। सचिव, बौद्धायन सोसाइटी।

विविधा

राम बहादुर राय

गाँव के याती

बहुत पहिले जब खेत बोवल जात रहल तब आपस में बहुत तालमेल रहल करे कि कवना मउजा में कवन फसल बोवल जाव..एह बात खातिर गांव के एगो बहुत नीमन अनुभवी किसान जे भी रहे उनकरा से जाके निहोरा कइल जात रहे..तब उहां के पूरा तइयारी के साथे पगरी बान्हि के एगो चउतरा पर बइठीं जवन तनी ऊंचा होखे जमीन से आ बाकी लोग में कुछ जमीन पर बिछावल दरी पर बइठे त कुछ लोग खड़ा भी रहल करत रहे..ओहिजे सब आपन-आपन विचार रखे। फिर मुख्य अनुभव वाला किसान आपन राय सबके बतावे। फिर त उहे फसल बोवल जात रहे... जइसे बांण के खेतन में पियरी माटी रहेला तब ओमें बाजरा-अगहनिया, अरहर, मकई...वगैरह-वगैरह बोवल जाव..जवना खेत में बरसात के पानी ना लागत रहे ओकरा में अरहर के संगे अगहनिया, पटुवा, मूंग, उरदी बोवात रहल।

अब जवना मउजा में मकई, कांकर, खीरा बोवात रहे त तमाम तरह के जंगली जानवर जइसे हरना, बनसुवरा, लिलगाइ..घड़रोज, झुंड में धावा बोलि के सब फसल के तहस-नहस, बर्बाद कर देत रहलन। एहि कुल से बचे खातिर लखत के लखत खेतन में एकही फसल बोवल रहे आ सब अपना-अपना मचान पर पूरा इंतजाम करके रहत रहे जवना में खाना-पानी मचनिये पर टांगल रहत रहे कि कवनो जिया-जन्तु, सियार-माकुर आके खा मति जाव लेकिन रात-बिरात त केहू खेत अगोरे खातिर ना रहे.. सब लोग घरे चलि जात रहलन।

कबो-कबो अइसन होखे कि रतिये में जंगली जिया जंतु पलखत पाइ के फसल कुछ खाके कुछ तुरि-तारि के तहस नहस कर देत रहलन...तब किसान करो त का करो...एकर भी उपाय कइल जात रहल जइसे...धूहा.... कपड़ा के, लकड़ी के, धूहा के टाटी.....मतलब कि धूहा के बनावे में भी कुछ लोग माहिर होखसु आ सबकर उहे बनावसु...उनकरा केहें भीड़ लागत रहे लेकिन उ आदमी के कवनो अहं ना रहत रहे आ ना त एह घरी लेखा पइसा के फेरा में परत रहे...सब बहुत नीमन से सम्बंध निभावत रहे....गजब के नेह-छोह,प्यार, दुलार, एकता रहत रहे जवना के कवनो हिसाबे ना रहत रहे। धूहा बनावे में कुछ लकड़ी, हरेठा कुछ कपड़ा जवन फाटल-पुरान धोती-कुरता, साड़ी वगैरह रहे ओहि से बनावल जात रहल...

जब सबकर धूहा बनि जात रहल आ फसल करिहांइ भर आवत रहे तब खेत में मचान के कुछे दूरी पर धूहा गाड़ल जात रहे....अइसन बनावल रहत रहे जइसे लागे कि कवने किसान एकदमे लाल ललछहूं लाठी लिहले खेत में दवुरता केहू के मारे खातिर चाहे लखेदले बाटे कवनो जानवर के...एकदमे से जियत तस्वीर लउके...अब रात-बिरात कवनो भी जंगली पशु खेत में नोकसान करे चाहे खाये चबाये खातिर जइसहीं खेत में घूसे त ठिठक के चकचिहा के आपन नजर चारो ओर दवुरावे, तब तक धूहा पर नजर परि जाव। फिर का ओकरा ई थोड़े ना जानकारी रहे कि झूठिया धूहा खड़ा कइल गइल बा डेरवावे खातिर....अब उ काहें के रुके खेतन में ..सबकर जान के मोह होखेला...भागे सरपट लंक लगाइ के जेतना ओकर जांगर होखे...अइसहीं सब लोगन के संगे होखे आ सबकर खेत के फसल बांचि जात रहल। अगर सेकराहे जानवर लोग धावा बोलसु तब सब आपन-आपन मचान पर रहबे करे आ अपना के बचावे खातिर लाठी, डंडा, गुपुती, टांगी, हंसुवा अउरी त अउरी एगे बड़हन टीन के डब्बा राखल रहे...सब एके संगे हाहाहा...धरऽ धरऽ..मारऽ-मारऽ... हैहेहाठऽ....ढ़ब ढ़ब धमड़-धमड़ ढ़ब....लगातार हल्ला होखे लागे ...तब जानवरन के बुझा जाव कि एहिजा जीव ले लिहेसन भागसऽ रे। जान बचे त लाखो पाये।..सब आपन-आपन भाषा में आ इशारा से अइसन भागे कि लागे कि सबका पतौखा धइ लिहलस...एकदम ई सिवाने छोड़ि देबे के परे।

हर गांवन में एकाध गो टोकना भी जरूर होखेलन जिनकरा के करजिभा भी कहल जाला...उनकर इहे काम रहेला कि सबकर खेत-खरिहान निहारत रहेलन आ जिनकर खेत खूब छतियाफार लागल अपना नजर पर चढ़ा के कुछवू टोकि जे दिहलन तब फसल के अब कल्याने बा। त अइसन करजिभवन टोकनन से बचे के भी उपाय कइल जात रहल.. जइसे कि सबकरे घरे माटी के हांड़ी पुरान-धुरान जरुरे रहे, काहें से कि ओहघरी अइसन नवाई ना रहे लोग घइली-गगरी, सुराही, मेटा में पानी रखि के पियत रहलन त कवनो परकार के पानी वाला रोग ना होखे, त उ हांड़ी के पूरा उजर रंग से रंगल जाव ओकरे बाद लाल, करिया के टीका कइल एगो बड़ डंडा में ढुका के खेत में गाड़ल रहे त टोनहो बुझि जासन कि एहिजा अब दालि गले वाला नइखे। फिर उ सब दूसर सिवान धइ लेत रहलन सब।

परिचय- बलिया के रहनिहार लेखक राम बहादुर राय के चार गो हिन्दी किताब- 'जीवन के विविध रंग', 'अनकही संवेदनाएँ', 'धरती के परिंदे', 'आदमी के कई रंग' आ दू गो भोजपुरी किताब – 'अब गंउवो में शहर आ गइल' अउर 'भोजपुरी के मान्यता देई ए सरकार' प्रकाशित बा।

डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह

मिलेट्स के खेती: समय के मांग

आजकाल मनई के भाग-दउर के जिनगी हो गइल बा। लाइफ स्टाइल पूरा बदल गइल बा। ढेर लोग डायबिटीज, रक्तचाप, हृदय रोग, तनाव, मोटापा आदि के शिकार हो रहल बा। अइसन समय में मिलेट्स के सेवन जरूरी हो गइल बा। अपना प्रदेश में भी एकर खेती पूरकस होखे के चाहीं जवन समय के मांग बा। एकरा से तनिको इनकार नइखे कइल जा सकत।

मिलेट्स में ज्वार, बाजरा, रागी, कुटकी, काकुन, चीना, सांवा, कोदो आदि मोटा अनाज शामिल बा। एह सभ अनाज में पोषक तत्व जादे पावल जाला। इ अनाज शुष्क माटी आउर 200-800 मिलीमीटर कम बरखावाला आउर कम पानी वाला इलाका में उपजावल जाला। बिना सिंचाई वाला इलाका में भी एह अनाज के उपजावल जा सकत बा। एकरा खेती में रासायनिक खाद आउर कीटनाशक के इस्तेमाल ना होला। एकर फसल लगवला से कीट कंट्रोल में मदद मिलेला। मिलेट्स के पौधा हवा के साफ रखेला। इ माटी के उर्वरा शक्ति के बढ़ावेला। इ भोजन, मवेशी के चारा में उपयोग कइल जाला। इ चीनी आउर जैव इंधन के उत्पादन के स्त्रोत भी बा।

मिलेट्स में विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन सी, खनिज जइसे कैल्शियम, फासफोरस,पोटेशियम, लोहा आदि पावल जाला। मिलेट्स के सेवन कइला से डायबिटीज रोग के रोके में मदद मिलेला। एह अनाज में जटिल **कार्बोहाइड्रेट** पावल जाला जवन ब्लड सुगर के कम करेला। एकर फाइबर खून में ग्लूकोज के लेबेल बरकरार रखेला। साथ ही खराब कोलेस्ट्रोल के कम करेला आउर निमन कोलेस्ट्रोल के बढावे में मदद करेला। मिलेट्स मे मैग्नीशियम पावल जाला जउन हार्ट अटैक के रोके में सहायक होला। एह में एंटी आक्सीडेंट पावल जाला जवन तनाव के दूर करेला। मिलेट्स के मैग्नीशियम आउर कैल्शियम रक्तचाप के कंट्रोल करे में सहायक होला।

ज्वार के सेवन कइला से शरीर के ऊतक मजबूत होला आउर हार्ट अटैक आउर हृदय रोग के खतरा कम करेला। बाजरा वजन आउर ब्लड प्रेशर के कंट्रोल करे में मदद करेला। एकर सेवन कइला से प्रोटीन पाचन शक्ति मजबूत होला। रागी के उपयोग कइला से शरीर के हड्डी के विकास होला आउर खून के कमी के दूर करेला। कंगनी या टांगुन में कैल्शियम खूब मिलेला जवना से शरीर के हड्डी मजबूत होला। कुटकी हृदय के निरोग रखेला आउर मधुमेह के रोगी के खून में चीनी के बहाव के रोकेला। सांवा में आयरन पावल जाला जवन खून बढ़ावे के काम करेला। कोदो मनई के तंत्रिका सिस्टम मजबूत करेला। चैना अवसाद आउर ब्लड प्रेशर कंट्रोल करेला।

भारत में मिलेट्स के खेती राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा,गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश आउर तेलांगना में कइल जाला। बिहार खासकर भोजपुरी इलाका में एकर खेती कमोबेश पहिले होत रहे। बाकिर समय बदल गइल आउर हमनी के खाली महीन अनाज के खेती में लाग गइनीं जवना में कैलोरी जादे आउर पोषक तत्व कम पावल जाला।

आजकाल मनई के भाग-दउर के जिनगी हो गइल बा। लाइफ स्टाइल पूरा बदल गइल बा। ढेर लोग डायबिटीज, रक्तचाप, हृदय रोग, तनाव, मोटापा आदि के शिकार हो रहल बा। अइसन समय में मिलेट्स के सेवन जरूरी हो गइल बा। अपना प्रदेश में भी एकर खेती पूरकस होखे के चाहीं जवन समय के मांग बा। एकरा से तनिको इनकार नइखे कइल जा सकत।

परिचय- डॉ.सत्येंद्र प्रसाद सिंह, प्रभारी प्राचार्य, हरिराम महाविद्यालय, मैरवा, सिवान, बिहार

विविधा

डॉ. आदित्य कुमार 'अंशु'

कपरफोरउवल

भारत कृषि प्रधान देस ह। कहल जाला कि भारत के आत्मा खेती-किसानी में बसेला। किसानन के समस्या के कवनो ओर-छोर नइखे। अबहियों किसानन पर प्रशासनिक अमला के ढ़ेरे प्रभाव बा। लेखपाल, कानूनगो, एस०डी०एम. के मकड़जाल में अँझुराइल किसान कोर्ट कचहरी के चक्कर लगावत बा। आपस में कपरफोरउवल करत बा। एह झगरा के मूल ई बा जमीन के पैमाईश सही तरीका से ना भइल। गाँव-जवार में अक्सर ई देखल जाला जे आसाढ़ महीना के चढ़ते झगड़ा-बवाल होखे लागेला। काहे से कि किसान ओही बेरा आपन धान के बेहन डालेला आ मेड़बन्दी करेला।

गाँव-देहात में मेड़कटवा किसान होखेलन। उनका इहे बुझाला जे मेड़वे में ढ़ेर आनाज होई। जबे आर-कोन करेलन त कोपिया-कोपिया के डाड़ काटत-काटत दू-चार हाथ दोसरा के खेत में घुस जालन। जे किसान आपन खेत दोसरा के बटाही चाहे रेहन पर रखले बा ऊ आपन खेत घूमे ना जाला आ उनकर डाँड़हा खेत बढ़ा लेलन इहे सब कपरफोरउवल के जड़ ह। कुछ त खेतिहर अइसनो बाड़े जे ट्रेक्टर से खेत जोते के बेरा डाँड़े माठत खेत कम करि देले आ टोकला पर कहेलन जे का करीं, टेक्टरेवाला जोत दिहुवे। एह तरे धीरे-धीरे आपसे में झंझट होखेला आ दूनो पक्ष आमने-सामने आ जाला। जेवन पक्ष जेतने बरियार बा ओकर बाति सुने वाला ढ़ेर लोग बा। कुछ आदमी अपनी थेथरपन से नेटुआनाँच के बल पर सभपर भारी पड़ेला। अइसन आदमी त हरदम पीटा-पाटी करे खातिर तइयार रहेला। असही कहासुनी होत लाठी-डण्डा चले लागेला आ कपरफोरउवल हो जाला। अइसना में कुछ लोग झगरा छोड़ावेला त कुछ लोग आगि धधकावेला। पहिलका जमाना के बाति कुछ और रहे। अब त ओकर रूपवे बदल गइल बा। पहिले जगह जमीन खातिर झगरा होखे त लोग आपस में एक दोसरा के गोनर जइसन पीट देवे। फेरु साझि बेरा एक दूसरा के दुख दरद बाँटे। जेकर भइँस ना लागत रहे ओकरा के हल्दी दूध गरमा के लइका चाहे मेहरारू के हाथे पहुँचवा देवे। फेरू दोसरा दिने फजीरही पंचइती होखे। ओह बेरा जेवन पंच रहे लोग ओकरा के परमेश्वर माने, बाकिर एह बेरा के पंच त मुँह देखल बाति करत बा। अब त पंचाइत वोट के राजनीति पर हो रहल बा। जब मुखिया पंचाइत करे जात बा त ई देखत बा जे केवना दल के वोट ढ़ेर बा। ओही पक्ष मे बतियावल जाई। ओंसे नइखे होत त एगो दल की ओर ले खड़ा होके मुकदमा करवा देत बा आ दोसरा पक्ष की ओर दोसर लोग खड़ा हो जाता। अँझुरावत-अँझुरावत अइसनों हो जात बा जे कपर फोरउवल के बाद गोली-बन्दूक चले लागत बा। अब त लोग जान लेवे-देवे खातिर तइयार हो जात बा। थाना के लोग दूनो दल के थाना में बुलाके खूब रुपिया ऐंठत बा। आ फेरु मुकदमा के मकड़जाल में उलझा के सीधा-सादा किसान के खूबे दोहन होत बा। किसान थाना-कचहरी के चक्कर में दउरत-दउरत आपन जिनगी भर के कमाई फूँक देत बा। एकरा खातिर सरकार के अइसन नियम बनावे के चाहीं जे किसान जाय त ओकर बाति सुनल जाव। खाली नियम बनवला से ना होई। सरकारी महकमा ओकर पालन करे तबे हो पाई।

एगो त किसान खाद-बिया के समस्या से परेशान बा। आ फेर गाँव के पंचाइत आ मुकदमा से। किसान जीवन भर संघर्ष करत बेवान पर चढ़ जात बा। पहिले त गोबर के खाद, राखि, झारन बहारन से खेती उर्वरा शक्ति के काम हो जात रहे। अब त लोग गाय-भँइस राखते नइखे त गोबर आ घूरा के सवाले कहाँ उठत बा। सभे किसान रासायनिक खेती में अँझुरा गइल बा। किसान कइगों समस्या से लड़त-भीड़त बा। सरकारी महकमा लड़ला-भीड़ला के फायदा खूबे उठा रहल बा। मंच से किसान के समस्या के नाँव पर छिपल खेल हो रहल बा। किसान के नेता एतना उपरा गइल बाड़े जेवना के ओर-छोर नइखे।

गाँव के किसान झगरा-बवाल में फँसत-जूझत गोल-गोलइती के चक्रव्यूह में फँस गइल बा। जेकरा के जेवन मन करेला ऊ सीधा-सादा किसान के दिमाग में बइठा के आपन रोटी सेंकेला। किसान अबहियो आपन अस्तित्व के लड़ाई लड़त-भिड़ंत कपरफोरउवल तक पहुँच जात बा। ओही में जेवन किसान पढ़ल-लिखल चालू-पुरजा बा, ऊ गोल-गोलइती के चक्कर मे ना पड़ेला। ओकरा जीवन में धीरे-धीरे सुधार हो रहल बा। एहसे सभे किसान के अपना नवकी पीढ़ी के पढ़ावे-लिखावे पर धियान देबे के चाही। पढ़ल-लिखल रही त ऊ झगरा-बवाल में ना अँझुराई आ आपन विकास पर धियान दी ही।

परिचय- कईएक पुस्तकन के सम्पादक आ हस्तिनापुर की आंखो का मर गया है पानी पुस्तक के प्रणेता, शताधिक सम्मान से सम्मानित डॉ. आदित्य कुमार अंशु रंगमंच से जुडल रचनाकार हईं।

हर अंक के सम्पादकीय में निठाह सकारात्मक बिन्दू साझा होत रहल बा

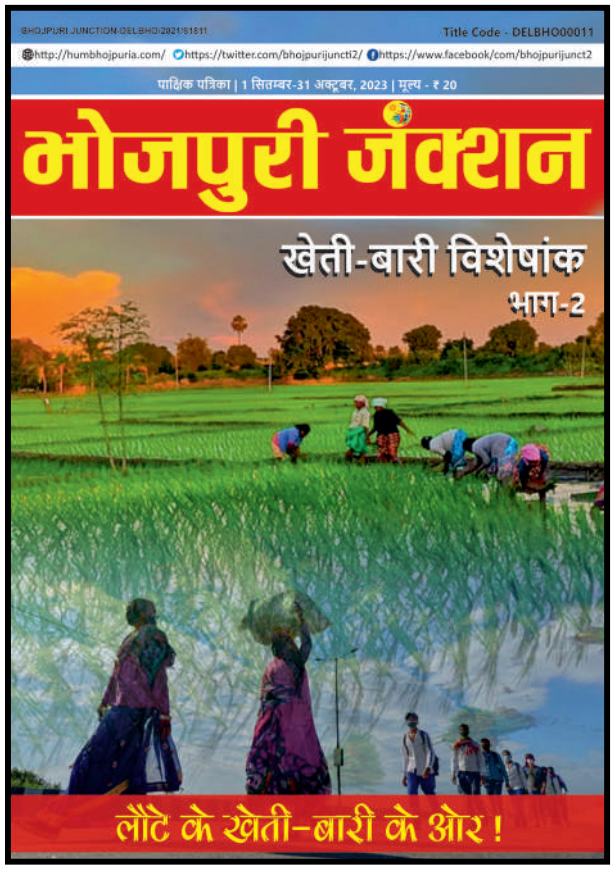

चार दिन भइल, भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी के दुसरका अंक डाउनलोड कइनीं। पहिलहीं नजर में एह अंक के कलेवर आ एकर कूल्हि रचना मन में बस गइली स। एह अंक के सम्पादन आ प्रकाशन के लेके जवन पोढ़ उत्जोग के देखा हो रहल बा ऊ साबित क रहल बा जे मनोयोग से कवनो काज उठावल जाउ, त एक समै बाद ओकर माकूल भाव बनही के बा। सम्पादक मनोज भावुक जी एही बिन्दू के निकहा भाव से एह अंक के सम्पादकीय में पगवले बाड़े। एह पत्रिका के हर अंक के सम्पादकीय में निठाह सकारात्मक बिन्दू साझा होत रहल बा। कहल बेजाइँ ना होई, भोजपुरी जंक्शन के सम्पादकीय अपना अंतर्बहाव खातिर ढेर इयादि रहेला। मनोज भाई के कइल सम्पादन रचनन के खलसा जबरी के संकलन ना होखे। एह बात के हम बिसेस रूप से रेखांकित क रहल बानीं।

अंक में सबले पहिले ब्रजभूषण भाईजी के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (अभाभोसास) के अध्यक्ष घोषित भइला के समाचार के जगह दिहल गइल बा। ई एगो सही मनई के सही पद-नाँव सङे सही जगहा प बइठावल कहाई आ सोआगत जोग बा। ब्रजभूषण भाईजी भोजपुरी आंदोलन आ भोजपुरी साहित्य के चलत-फिरत एनसाइक्लोपीडिया कहानीं। त एकरा पाछा उनकर अउलाह अध्ययन, गहन साधना आ प्रबुद्ध मन बा।

खेती-किसानी अंक भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ० प्रेमशीला शुक्ल, मंजूश्री, दिनेश पाण्डेय, सुरेश काटंक, कृष्ण मुरारी राय, विनय बिहारी सिंह, डॉ० प्रभाकर पाठक, संध्या सिंह के कथात्मक आलेखन से, महामाया प्रसाद विनोद, गोपाल ठाकुर आ गोपालजी राय के राजनीतिक आलेखन से, प्रकाश उदय, डॉ० रामरक्षा मिश्र 'विमल' आ रामेश्वर गोप के गीत-गवनई प आलेखन से आ ओम प्रकाश अश्क, पृथ्वी राज सिंह, शशिकांत मिश्र के खुसूसी आलेखन से धनी भइल बा। सभ के सभ रचना मनका अस एह अंक के माला के आकार देबे में आपन जोगदान दे रहल बाड़ी स। प्रेमशीला जी के आलेख में भाव बहाव देखे लायक बा। काँच आ पाकल भोजन के लेके बहुते गहीर बाकिर निकहा रोचक चर्चा कइले बानीं। चम्पारन के जमीन धान, चाउर, खातिर कायनात के अपना हाँथे बनावल खलिहान ह। प्रेमशीलाजी चम्पारन के चउरन-चिउरा के जइसन चर्चा कइले बाड़ी, ई अवगाहन करे जोग बा। बाकिर एह अंक के रंग बनल बा दिनेश पाण्डेय जी के गुरु-गँभीर आलेख से। हमरा इयादि नइखे परत धान प सनातनी वाङ्मयन से संकलित उद्धरनन से पगल अतना पोढ़ आलेख हम पहिले कबो पढ़ले बानीं। ई हमार अध्ययन के हदओ के लेके डेंड़ार घींच रहल बा। सचकी, मन अघा गइल बा एह आलेख से। कहल जाला, को बड़ छोट कहत अपराधू। एह उद्गार में मनाला जे नकारात्मक भाव के तासीर बा। बाकिर हम एह अंक के संदर्भ लेके एही मसल के सकारात्मक लोच दे रहल बानीं। उदय प्रकाश जी भा रामरक्षा मिश्र विमल जी के आलेख के रङ पाठकन खातिर एगो अलगे अस्तर बनावे में सच्छम बा। साँच बात बा, एक समै के श्रम-गीत आजु मशीनन के कनखोर घुर्राहट में बदल चुकल बा। बाकिर कइल का जाओ? ईहो साँच बा जे दुनिया कवनो जुग के होखो, कबो एक ना रहे। एह भाव के **अंतर्धारा** एह अंक के हर रचना में महसूसल जा सकऽता।

एह संग्रहणीय अंक खातिर मनोज भाई के बेर-बेर बधाई आ उनकर टीम खातिर हिरदै से शुभकामना।

सौरभ पाण्डेय, वरिष्ठ साहित्यकार, भोपाल

भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक (भाग-2) की संक्षिप्त समीक्षा

"भोजपुरी-जंक्शन" का नया अंक आ गया है। अपने नाम को सार्थक करता हुआ यह सचमुच में भोजपुरी के मुर्धन्य साहित्यकारों की कलमों जंक्शन बन गया है। देश में यूं तो लगभग विभिन्न विषयों पर 4000 पत्रिकाएं हर माह प्रकाशित होती हैं तथा सोशल मीडिया के इस भेड़िया-धसान दौर में दस हजार से भी ज्यादा वर्चुअल पत्रिकाएं निकल रही हैं। किंतु देश के सत्तर प्रतिशत लोगों की रोटी से जुड़े और 70% जनसंख्या का जीवनाधार खेती-किसानी और गांव-किसानों पर ईमानदारी से केंद्रित पत्रिकाएं इस झुंड में चिराग लेकर ढूंढना पड़ता है। चूंकि मैं भी इसी तरह के एक अनूठे विषय देश के जनजातीय सरोकारों की मासिक पत्रिका "ककसाड़" से विगत 10 वर्षों से जुड़ा हुआ हूं। इसलिए इसमें लगने वाले अथक परिश्रम व इसमें आने वाली अंतिम परेशानियों के बारे में भली-भांति परिचित हूँ। सचमुच इस तरह से किसी एक बोली विशेष को लेकर देश के सबसे उपेक्षित विषय गांव और खेती पर पत्रिका निकालना बड़ा दुष्कर कार्य है, और यह भागीरथी कार्य संकल्प के धनी, कर्मयोगी भाई मनोज भावुक तथा उनकी कर्मठ टीम के बूते ही संभव है। पहला अंक तो अद्भुत बन पड़ा ही था किंतु जब उन्होंने खेती-बारी विशेषांक के दूसरे अंक की घोषणा की तो मेरी उत्सुकता बढ़ गई। इसलिए दूसरा अंक मिलते ही मैंने उसे आद्योपांत पढ़ डाला।

मुख्य पृष्ठ की लाइन "लौटे के खेती-बारी के ओर" ने मन मोह लिया। वास्तव में यह वक्त की पुकार है, कोरोना ने हमें यह सबक दिया है कि हमें जल्द से जल्द अपनी जड़ों की ओर, खेती किसानी और गांव की ओर लौटना होगा, अपनी जड़ों से जुड़ना ही होगा क्योंकि जीवन रस का अक्षुण्ण स्रोत तो वहीं पर है। स्वतंत्रता पूर्व बिहार के किसान आंदोलन तथा नेपाल के किसान आंदोलन व सहजानंद जी पर लिखे लेख ने इस अंक को न केवल संग्रहणीय बना दिया है बल्कि शोधार्थियों के लिए भी काफी अनमोल सामग्री एक जगह सजा कर रख दिया है।

इस पत्रिका का हर लेख एक अनमोल रतन की तरह है, और इसके सभी माननीय लेखक बधाई के पात्र हैं। इन सारे अनमोल रत्नों को एक माला के रूप में बूथ कर भोजपुरी जंक्शन पर रखने वाले भाई मनोज भावुक की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी।

आदरणीय डॉ. बृजभूषण मिश्रा जी को भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सत्ताइसवें अध्यक्ष की महती जिम्मेदारी दी गई है, उन्हें भी बहुत-बहुत बधाई। हम सबको आशा है कि उनके नेतृत्व में भोजपुरी भाषा अपनी कीर्ति पताका दिग-दिगंत तक लहराएगी।

वैसे तो इस अंक के हर लेख पर कम से कम चार पंक्तियां तो लिखना बनता है, किंतु फिर यह पाती काफी लंबी हो जाएगी, इसलिए यहीं पर विराम। अंत में एक बार फिर से प्रिय भाई मनोज भावुक को तथा इस पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों पाठकों को इस संग्रहिनी अंक के प्रकाशन हेतु बधाई तथा शुभकामनाएं।

डॉ. राजाराम त्रिपाठी, राष्ट्रीय संयोजक, अखिल भारतीय किसान महासंघ, (आईफा), रायपुर, छतीसगढ़

भोजपुरिया माटी के जगावे के भाव !

ई नू हउए भोजपुरिया माटी के जगावे के भाव! मनोज जी सेंतिहे में भावुक नइखन भइल। गांव-जवार के रस-गंध, भाव-अनुभाव, गंवई संस्कार-संस्कृति के हियरा में जोगवले, देश-बिदेश घुमला का बाद ई भाव उमड़ल बा। ई उल्लास जेठी धरती पर असाढ़ी बदरी खानी करेजा जुड़ा रहल बा। भोजपुरिया किसानी संस्कृति के पीर परोस के एह समाज के गुदगुदा के संजीवनी देवे वाला 'भोजपुरी मंथन' का काम के जेतना सराहना कइल जाव, कम बा।

जमगर संपादकीय खतिरा, भरखर शुभकामना मनोज भावुक जी !

डॉ. हरीन्द्र हिमकर, पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी, खेमचंद ताराचंद प्रकाश, रक्स

सबके मन अगराइल बा

खेती-बारी अंक देखि के,
हमरो मन हरषाइल बा।
भोजपुरी जंक्शन में देखनीं,
बहुती लेख लिखाइल बा।
विद्वत जन के बात जे मानीं,
ओकरी घर में अन्न समाई,
भावुक जी के भाव देखि के,
सबके मन अगराइल बा।।

माहिर विचित्र, युवा कवि, देवरिया

मन के महुआ फुलाइल रही

भोजपुरी जंक्शन खेती-बारी विशेषांक (भाग-2) मिलल। मनोज भावुक जी के लगातार बिन थकले, भोजपुरी भाषा के जड़ आ माटी से दुनिया के जोड़े आ भोजपुरी के ऊंचाई ले चहुंपावे वाला कदम मानल जा सकेला। जइसे खेती-बारी हरियर लउकेला ओइसने हरियाली के दरसन खेती-बारी विशेषांक के कलेवर आ रचनन में भइल। अब त भाग-3 के इंतजारी में जियरा अकुलाइल बा। तनी हाली करिहें संपादक मंडल के लोग त मन के महुआ फुलाइल रही। लागल रहे के बा। ढ़ेर बधाई आ शुभकामना।

डॉ. निखिल कान्त, उप निदेशक, AICTE, शि. मं., भा. स.

श्रेष्ठ भोजपुरी गद्य के उदाहरण बा संपादकीय

बहुत बढ़िया अंक निकलल बा। रउआ के आ रवा टीम के हृदय से बधाई आ शुभ कामना।

अंक अभी पूरा पढ़ाइल नइखे, बाकिर जइसे हंड़िया में डभकत एगो चाउर से ही भात सींझला के पता चल जाला, ओसहीं जतना पढ़नी हां, ओकरा से अंक के समृद्धि आ स्तरीयता के बढ़िया से पता चल जाता। सिन्हा जी ऋषि सुनक आ रामकथा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के अन्य देसन में प्रभाव आ प्रसार के बढ़िया परिचय दिहले बानी। भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के रचना बढ़िया ललित निबंध के उदाहरण बा। इहे बात प्रेमशीला जी आ संध्या सिंह जी के आलेखन के बारे में भी कहल जा सकेला, हालांकि एह दूनों रचनन से कच्ची-पक्की, भाई-भवद्धि,धान आ भात से संबंधित कईगो नया जानकारी भी मिलत बाड़ी स। इ कुल्ह रचना बहुत मन से लिखाइल बाड़ी सं। एही तरह मंजू श्री जी के रचना खेती-बारी के विकास-यात्रा के बढ़िया परिचय देत बिया। दिनेश पांडेय जी के आलेख संचहूँ के धान-कथा बा। एकरा के सराहे खातिर एके गो शब्द बा-अद्भुत! ई आलेख बहुत ही ज्ञानवर्धक, पठनीय आ संग्रहणीय बा। इहे बात प्रभाकर पाठक जी के आलेख 'हर के हर बात मानी' के बारे में भी कहल जा सकेला।

एही तरे, एह अंक के ऐतिहासिक महत्त्व दियावे वाली रचना ऊ बाड़ी स, जवन किसान जीवन आ भारत आ नेपाल के किसान आंदोलन पर केंद्रित बाड़ी स। भाई सुरेश कांटक जी, महामाया प्रसाद विनोद जी, गोपाल ठाकुर आ गोपाल जी राय के लेख बहुत ही यथार्थपूर्ण आ तथ्यपरक बाड़न स। एह तरह के सामग्री के प्रकाशन भोजपुरी में बहुत कम भइल बा।

अंत में हम ई कहब कि एक से एक बड़ भोजपुरी साहित्यकार लोग के रचनन से सजल ई अंक किसान जीवन के संकट आ वर्तमान समय में ओकरा आगे दरपेश चुनौतियन के चर्चा बहुत बढ़िया से त करते बा, तीना आ एलोवेरा के खेती आ किचेन गार्डन के महत्त्व आ उपयोगिता के बारे में भी बढ़िया जानकारी दे के कृषि क्षेत्र के भविष्य आ संभावना के प्रति आस-उम्मीद भी जगावत बा।

जहां तक रवा संपादकीय के बात बा, ऊ हमेशा के तरह बेजोड़ बा। ना खाली विचारणीय बा, बलुक श्रेष्ठ भोजपुरी गद्य के उदाहरण भी बा। संपादकीय के अंत में खेती-किसानी के दुनिया में वापसी के जवन भावुकतापूर्ण आह्वान कइल गइल बा, ऊ मन के छूवत त बहुते बा, बाकिर ओकरा के जमीन पर उतारल संभव कतना बा, ई आज के एगो यक्ष प्रश्न बा अपना आप में।

पीडीएफ फॉर्म में पत्रिका पढल अब हमनी जस आदमी खातिर एगो कष्टप्रद अनुभव बा भावुक जी! ई त राउर स्नेहिल दबाव बा कि पढ़ा देत बा थोर-बहुत। थोड़ा अउर समय रहित त शेष रचनन प भी आपन राय जरूर देतीं।

बहरहाल, बहुत बढ़िया अंक संयोजन आ प्रस्तुति खातिर रउरा के आ रउरा टीम के बेर-बेर बधाई आ शुभकामना। हं, एह संग्रहणीय अंकन के छपवाइब जरूर। स्नेहाधीन।

डॉ. नीरज सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी व भोजपुरी, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

एगो सयान संपादक के दृष्टिकोण

किसान के लइका लइकाइयें में सयान हो जाला। दूर ले देखेला। छोटो चीज पर नजर राखेला। खेती-बारी किसान के कारोबार ह। अंक में संग्रहित सामग्री एगो सयान संपादक के दृष्टिकोण के बयान कर रहल बा। भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक के संकलित आलेखन में माटी के गंध महसूस हो रहल बा। भोजपुरी जंक्शन के एह दिसाई अंक के आ राउर एह काम के का तारीफ हम करीं, अंक खुद बोल रहल बा अपना गुणवत्ता के बारे में।

कनक किशोर, वरिष्ठ साहित्यकार, राँची

एह विशेषांक के परिकल्पना उच्च कोटि के कल्पनाशीलता बा

भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक बड़ा नीमन उतरल बा। ई-पत्रिका के मुख पृष्ठ, आंतरिक साज-सज्जा आ ए में छपल आलेख आ खेती-बारी पर गीत आ कविता बहुत उच्च कोटि के बा।

कहाउत बा-"उत्तम खेती, मध्यम बान/ निखिद चाकरी भीख निदान।" सिंधुघाटी के सभ्यता से लेके आज तक देश के जनसंख्या के बहुत बड़ हिस्सा खेती में लागल बा भा खेती पर निर्भर बा। वैदिक सभ्यता त पूरा कृषि-सभ्यते रहे। आजो देश के आबादी के 47 फीसदी लोग कृषि पर निर्भर बा। हमनी किहाँ कृषि व्यवसाय ना ह, उ एगो जीवन शैली ह, संस्कृति ह। हमनी के सगरी परब-त्योहार कृषि से जुड़ल बा। प्राचीन काल के यज्ञ-हवन भी कृषि से जुड़ल रहे। पर्जन्य यज्ञ बरखा खातिर होत रहे काहे कि खेती-बारी बरखा पर निर्भर रहे। 'का बरखा जब कृषि सुखाने।' एह वजह से एह विशेषांक के परिकल्पना के श्रेय मनोज भावुक के उच्च कोटि के कल्पनाशीलता के देवे के चाहीं। ई अपना तरह के अकेला विशेषांक बा।

'भोजपुरी जंक्शन' फरहद लेखा फलो-फूलो, तरह-तरह के विशेषांक निकलत रहो आ भोजपुरी के कोठार भरल रहे, इहे शुभकामना बा। संपादक मनोज भावुक के आशीष आ साधुवाद!

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव, वरिष्ठ साहित्यकार, राँची

आपना माटी के गंध

भोजपुरी जंक्शन के नांव से त बहुत पहिले से परिचित रहनी हं बाकिर पत्रिका पहिला बार हाथ में आइल ह। ई "खेती-बारी विशेषांक" एतना बढिया लागल कि एक बेर में संउसे पत्रिका पढ गइनी। सम्पादकीय के त जबाबे नइखे। मनोज भावुक जी के एक-एक शब्द आँखि के सामने लउके लागल। हर बैल के चित्र देख के मन से देहि ले रोमांचित हो गइल। अइसन बुझाता कि कवनो ढेर दिन के भुलाइल चीज एकबाएक मिल गइल।

हमार लडिकाई गाँवे में बितल बा, खेती-बारी के सब बारीकी हमरा मालूम बा। आ आजुओ हम कवनो बड़का शहर में नइखीं बाकिर बहुत कुछ पीछे छूट गइल बा। पत्रिका के एक-एक आलेख- डॉ. प्रभाकर पाठक जी के "हर के हर", दिनेश पाण्डेय जी के "जुगे जुगे धान", डॉ. प्रेम शीला शुक्ला जी के "उपजे धाना", भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के "उगे रे मोर सुगना", रामेश्वर गोप जी के "एक मुट्ठी सरसो पीट पीट बरसो", सब भुलाइल भटकल इयाद के दोबारा जिन्दा करेवाला 'कोरामिन' बा। एकरा अलावे सारा स्तम्भ ज्ञानवर्धक आ उपयोगी बा। "एगो रहलन सहजानन्द" के कथा बहुत प्रेरणादायक बा। हम त इहे कहब कि एह विशेषांक के पन्ना-पन्ना में अपना माटी के गंध भरल बा। एह पत्रिका के मुख्य उद्देश्य बा आम आदमी के अपना मूल रूप के पहचानल आ ओकरा के कायम राखल, काहें कि मशीनीकरण आ आधुनिकीकरण हमनी के अपना जड़ से काट रहल बा।

हमरा आशा बा कि सम्पादक मनोज भावुक जी के आपना माटी के प्रति जवन लगाव बा, प्रेम बा ऊ भोजपुरिया संस्कृति आ साहित्य के जरूर वापस लौटाई बाकिर एकरा खातिर हमनी के भी तन मन धन से उहाँ के सहयोग करे के परी। बहुत-बहुत शुभकामना।

डॉ. नीलम श्रीवास्तव, शिक्षिका, सीवान, बिहार

भोजपुरी में एतना सारगर्भित रचना लिखा सकता, प्रमाणित होता

भावुक जी के हमार असंख्य बधाई एह अंक खातिर। सबसे पहिले एह खातिर कि भोजपुरी में एतना सारगर्भित रचना लिखा सकता प्रमाणित होता। दूसरा खेती-बारी माने खाली हल-बैल, सोहनी-रोपनी ना ह। एकरा आगे-पीछे भी बहुत कुछ बा। तीसरा भोजपुरी माने अश्लील गाना ना ह।

सब पढ़ला के बाद दर्द एकर होता कि भारत भर में सबसे बड़हन जमींदार का बिहारे में रहस जे सब बड़-बड़ नेता इहें आ के आंदोलन कइलन?
जवना आन्दोलन के क्रम आजो बरकरार बा। बिहार में मजदूरी कइल गुलामी बा लेकिन सपरिवार पंजाब में उहे कइल बड़प्पन बा।

1-2 बीघा जमीन वाला के जमींदार बना के आज पूरा बिहार मजदूर बन गइल बा।

हरेन्द्र पाण्डेय, वरिष्ठ साहित्यकार, कोलकाता

भोजपुरी जंक्सन हवे कृषक मीत जागरुक

उत्तम खेती लालसा, सब ला करे किसान।
जोड़ हाथ मुँह विश्व के, केतना परेसान।।

खेते जीवन आ जगत, सुत उठ पावन काम।
चार धाम गंगोतरी, ना कहियो विश्राम।।

भोजपुरी जंक्सन हवे, कृषक मीत जागरुक।
लोर चुआवे आ दुखित, पूत मनोज भावुक।।

माथ पसेना बा चुवत, निकलत बाटे अंक।
पढ़ी गुनी ई दरद के, खाता राजा रंक।।

बालम बाड़े खेत में, धनिया सेवे रात।
कथन कदाचित मेढ़ पे, पिछले नाही लात।।

असंभाव्य चिन्ता फिकिर, होत रहल बा रोज।
होत फजिर बा जायके, जल्दी मिले मनोज।।

विद्वानन के बा कवित, अउरी कविता राग।
बार बार पढ़नी गजल, गीत विधा के आग।।

नेपाल से रामप्रसाद साह जी के प्रतिक्रिया दोहा छन्द में

तैंतीस वर्ष बाद भोजपुरी में लिखा

करीब 33 वर्ष बाद किसी संपादक ने हमसे भोजपुरी में लिखवा लिया। 90 के दशक में राजेश्वरी शांडिल्य ने 'भोजपुरी लोक' में अतिथि संपादक बना कर लेख लिखवाया था और अब 'भोजपुरी जंक्शन' के संपादक मनोज भावुक जी ने भोजपुरी में लिखवा लिया भोजपुरिया सन्यासी किसान नेता स्वामी सहजानंद सरस्वती के ऊपर। इससे पहले भी अँजोर जी की किताब की समीक्षा लिखवा लिया था। मनोज भावुक बड़े ही प्रेम से याद दिला दिला कर लिखवा लेते है, उनके इस कार्य के लिए उन्हें बधाई और आभार। ...

भोजपुरी जंक्शन क खेत-बारी विशेषांक भाग-2 से बहुत सा नई जानकारी मिलल। संपादकीय त बड़ा जोरदार बा। धान पर कई गो लेख बा। महामाया प्रसाद बिनोद जी के लेख "बिहार में स्वतंत्रता पूर्व किसान आंदोलन" बड़ा रच के लिखल गइल बा। किसान के आमदनी कइसे बढ़ी, ओकरा खातिर भी जानकारी बा, एलोवेरा वाला लेख में। कुल मिला जुला के अंक बड़ा निम्मन बन गइल बा। संपादक मनोज भावुक जी आ टीम के बधाई बा।

गोपाल जी राय, पत्रकार-साहित्यकार, दिल्ली

जिनगी के असली रूप से रूबरू करावत

खेती-बारी विशेषांक के सम्पादकीय जिनगी के असली रूप से हमनीं के रूबरू करा रहल बा। जिनगी के आनन्द से भरे के ढंग सिखा रहल बा। बनावटी जिनगी जहरीला बा, वास्तविक स्वाद से कोसों दूर बा, ई बात एकदम साफ झलके लागता। सम्पादक जी के ये सारगर्भित सम्पादकीय खातिर हार्दिक बधाई।

अखिलेश्वर मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार, बेतिया

खेती आ खेतिहर क जरूरत आ परेशानी के समझावत भोजपुरी जंक्शन

'भोजपुरी जंक्शन' के 'खेती-बारी विशेषांक' (भाग-2) देखि, पढ़ि के मन के बहुत शांति मिलल। आवरण से लेके भीतरी सामग्री तक सब कुछ हमरा समझ से सबका खातिर प्रेरणादायी बा।

संपादकीय क शीर्षक 'लौटे के खेती-बारी के ओर' एक तरफ जहाँ खेती का प्रति उदासीनता के लेके खुद सजग बा उहवें खेती बचावे खातिर निहोरा भी बा। अंदर जेतना भी आलेख बाड़न स एक से बढ़ि के एक। जहाँ सुरेश कांटक जी क आलेख खेती में बढ़त जा रहल लागत का तरफ इशारा कर रहल बा, उहवें दिनेश पांडेय जी क धान पर शोधपरक आलेख 'जुगे जुगे धान' में खेती किसानी में श्रृंगार क अद्भुत उपस्थिति से साक्षात्कार होता। जे भी हर (खेती में जुताई बोआई खातिर लकड़ी से बनल यंत्र) देखले बा या हर का बारे में जानता उहाँ सब लायक डॉ. प्रभाकर पाठक जी क आलेख- 'हर के हरेक बात' बा। हमके त बड़ा बढ़िया लागल ह। पर्व त्योहार में तीना क चाउर (हमरा इहाँ बलिया क्षेत्र में तेनी क चाउर कहाला) अधिकांशतः प्रयोग होला लेकिन एकरा विस्तार में जाए के मन होखे त पृथ्वी राज सिंह जी क आलेख पढ़े लायक बा। बहुत कुछ बा एह अंक में जेके पढ़ला से खेती आ खेतिहर क जरूरत आ परेशानी के समझल जा सकता। बहुत बढ़िया अंक खातिर बहुत बहुत बधाई।

कृष्ण मुरारी राय, वरिष्ठ साहित्यकार, बलिया (यू. पी.)

खेती-बारी से जोड़े में कामयाब अंक

भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक भाग-2 के आवरण हरा-भरा देख के मन गदगद हो गइल ह आउर हमरा मन में पुरनका जमाना के खेती-बारी के तसवीर उतर आइल ह-

आगे-आगे बैला चले, पीछे से किसानवा
कि हरवा जोतेला किसानवा

संपादक जी! रउआ संपादकीय में हमनी के गांव के ओर, प्रकृति के ओर, खेती-बाड़ी के ओर लवटे के आह्वान करत बानी जवन समकालीन जरूरत बन गइल बा। गांव के अमराई में, पीयर-पीयर सरसो के खेत में जवन आनंद बा भला ऊ शहर के ब्यवस्था में कहां बा।

सभ लेख बढ़िया, रूचिकर, विचारोत्तेजक आउर ज्ञानवर्धक बुझाइल। इ विशेषांक हमनी के खेती-बारी से जोड़े में कामयाब होई, ई हमरा पूरा बिसवास बा। भोजपुरी माटी के हरियरी हमेशा बनल रहो------एही शुभकामना के साथ

डॉ.सत्येंद्र प्रसाद सिंह, प्रभारी प्राचार्य, हरिराम महाविद्यालय, मैरवा, सिवान, बिहार

खेती-बारी विशेषांक अद्भुत बा

भोजपुरी-जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक भाग-2 मिलल। एह पत्रिका के संपादकीय में लौटे के खेती-बारी की ओर में भावुक जी के शहर में गांव खोजे के प्रयास भा आपन शहरी काम-धाम कइला के साथ-साथ खेती-बारी की ओर लौटे के निहोरा वाजिब बा। एह पत्रिका में जेतना आलेख बा उ पढ़ला पर गाँव, बचपन, खेत-खलिहान के गोदी में लेके चलि जाता, आ लागत बा कि हमनी के समय के ढकेल के आगे कर देले बानी जा आ ओह जगह पर आ गइल बानी जा जहाँ घुघुवा खेलत गीत, रोपनी, सोहनी, कटाई, गीत फसल के लहरत सुखद अनुभव के साथे किसान के समस्या अउर ओकरा खातिर आंदोलन के भी पुरजोर बात राखल बा। कुल मिला के एह पत्रिका के खेती-बारी विशेषांक अद्भुत बा। सब लेखक लोग के साथे एह पत्रिका के सहेजे वाला आदरणीय मनोज भावुक जी के बहुत-बहुत बधाई आ धन्यवाद।

अजय कुमार, युवा कवि, गोरखपुर

सराहनीय, संग्रहणीय, अतुलनीय

राउर काम सराहनीय, संग्रहणीय आउर अतुलनीय बा मनोज भाई। मां हंसवाहिनी के आशीर्वाद बनल रहे। भोजपुरी साहित्य के मान बढ़ावत रहीं भाई। बधाई स्वीकार करीं।

डॉ राजेश कुमार 'मांझी', हिंदी अधिकारी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली

किसान अंक कहीं कि कमाल अंक!

भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के खेती-बारी विशेषांक (भाग-2) में हमार एगो लेख शामिल भइल बा, बहुत गौरवान्वित महसूस करत बानी आ संपादक श्री मनोज भावुक जी के प्रति आभार व्यक्त करत बानी। संपादकीय समेत सब लेखवे कमाल के बा। किसान के लेके जे केहू ना सोचले होई ऊ मनोज जी कर के देखा देनी। विशेषांक पर विशेषांक आ अभी आगहूँ विशेषांक बा किसान पर। जय हो। बहुत बधाई।

संध्या सिंह, गांधी नगर, गुजरात

भारतीय जनमानस के भाव खेती-बारी में परोस दिहल बा

जी जान से भोजपुरी के सींचSतारन आदरणीय मनोज भावुक जी। जवन प्रत्यक्ष बा उनका संपादकीय में भोजपुरी बहुत मीठ बा। भोजपुरी बोले वाला लोग त मिठाइये जानी। भोजपुरी क साहित्य बंगाली, असमिया खान हर दृष्टी से भरपूर, समृद्ध बा। बाकी सहरी अंजोर, चकाचउंध में आजकल लोग अइसन अन्हरिया गइल बाने के कुछु देखात बुझाते नइखे। धीरे-धीरे आपन माटी के सोन्ह गंध भुलाइल जाता।

अइसने गाढ़ घड़ी में मनोज भावुक जी भोजपुरी के गंगा बहवले के खातिर भगीरथ खान्ह खड़ा हो गइल बाड़ें। नौकरी, चाकरी, अफसरी, विदेश सब सुख-सुबिधा के लात मारके, अपने भोजपुरी के समृद्धी से जन-जन के परिचय करवले खातिर, अ भोजपुरी क विकास बस ईहे मिशन लेके चल परलें।

ई आपन माटी अ भाषा से आके खाली जुड़िये नइखन गइल बलुक परिश्रम, धैर्य, मनोयोग समय के गर्द हटाई के "भोजपुरी जंक्शन" पाक्षिक पत्रिका के माध्यम से अइसन वैचारिक क्रांति फइला देहले बाने की केउनो विषय होखे, साहित्य, आध्यात्म, कला, विज्ञान आदि आदि सब एहि भोजपुरी के संदर्भ में अइसन परोस देहले बाने की लोगबाग हमनी के कुल्ही देख के अचंभित बानी जा।

'खेती-बारी विशेषांक' के दूगो अंक निकलल आ अभी कई गो बाकी बा। सही बताईं त "खेती-बारी" खाली खेत, गांव, किसानी से संबंधित नइखे बलुक जीवन के हर पक्ष से संबंधित बा। एही से सबका खातिर पठनीय बा। एक से बढ़के एक लेख, कविता, गीत आदि भरपूर कि खुद्दे पढ़े वाला के बुझाला कि कतना विशाल साहित्य-सागर बा एकर कि जे बूड़ल एहिमे, ऊ आनंद सागर में डुबकिये लगावत रहता।

"खेती-बारी" अंक में माटी से जुड़ल कहावत, लोकोक्ती, मुहावरा संगे सहजता से सज्जी बात रखल गइल बा जेकरा के पढ़ के भोजपुरी के समृद्धी अ साहित्य अउर साहित्यकार के विशेष जानकारी बढ़ता। कतना नीमन भाषा के लेखक लोग अइसे लुकाइले रहि जइतें लोग जे मनोज भावुक जी के खोजी परयास ना भइल होत।

चर्चा में रहल किसान आंदोलन के सही जनकारी होखते बा। पूर्व पर के इतिहासों मालूम पड़ल। माने ज्ञान क ग्रंथ हो गइल ई खेती-बारी। केउनो भाषा के लोकप्रिय मजबूत बनवला में लोकगीत, लोकधुन क बड़ा हाथ होला। एइ अंक में भी लोकप्रिय लोकधुन के मनभावन गीत गद्य पद्य सब पढ़के मन झूम गइल। पारंपरिक के साथे-साथे विशेष जानकारियो विशेष सराहनीय बाटे। काहे के जेकरा में उपयोगी अ आधुनिक जनकारी भी बा। जइसे आजकल किचन गार्डन, रूफ गार्डन कुलहीन के चलन बढ़ल बा। ओकर बहुत सुन्दर जनकारी। एलोबेरा के खेती, उपयोग क जनकारी आज के समयानुसार हवे। तीना क चावल के संग्रह अ उपयोगी जानकारी दीहल गइल बा जवन कम लोग के मालूम होई। 'राउर पाती' स्तम्भ में जन-मन खुलते बा।

माने लब्बोलुआब कहल जा सकेला कि भारतीय जनमानस में रचल बसल बा जवन भाव, ओकरा के मनोज जी खेती-बारी में परोस देले बाने। हर केहू के पसंद के आलेख बा। आज भोजपुरी के बड़ा फलक दिहले बाने मनोज भावुक जी। परनाम कर तानी राउर श्रमसाध्य परयास के।

डॉ. मंजरी पाण्डेय, राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त शिक्षिका, कवयित्री, लेखिका, रंगकर्मी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

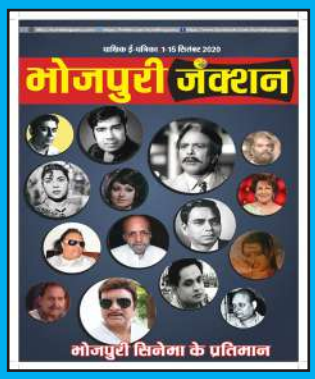
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

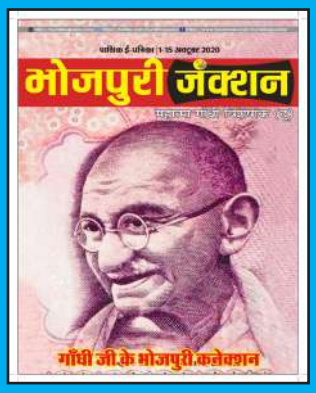
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

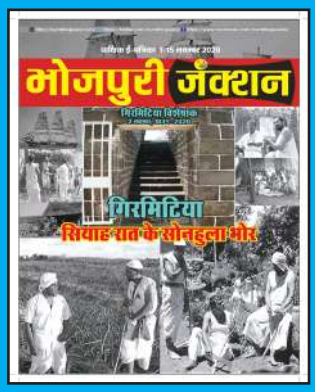
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

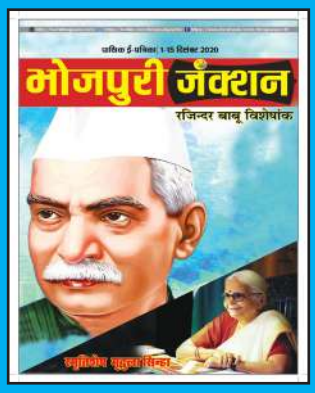
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
भोजपुरी जंक्शन
मईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

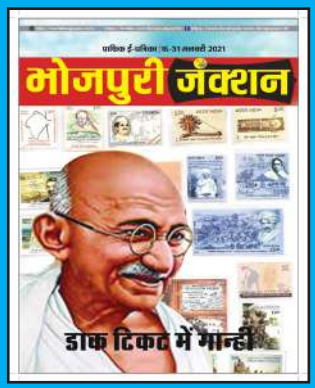
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

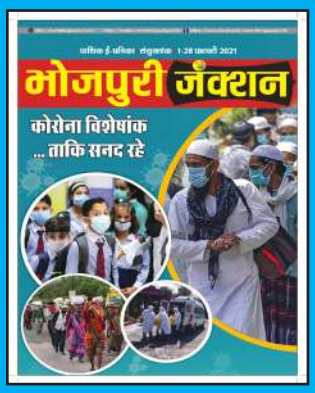
पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक 1-28 फरवरी 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 मार्च 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना कवितावली
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी?

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोविंग से बेसी
'सोविंग' के जरूरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-30 जून 2021
भोजपुरी जँक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जँक्शन
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जँक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code – DELBIH00811
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 सितंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

पाक्षिक पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

पाक्षिक पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
मन के रिचार्ज करीं

पाक्षिक पत्रिका | 16-30 नवंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

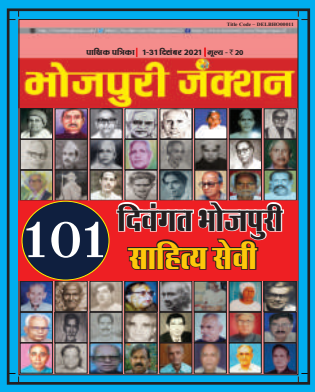
पाक्षिक पत्रिका | 1-31 दिसंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
101
स्वर्गीय भोजपुरी
साहित्य सेवी

पाक्षिक पत्रिका | 1-15 जनवरी 2022 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

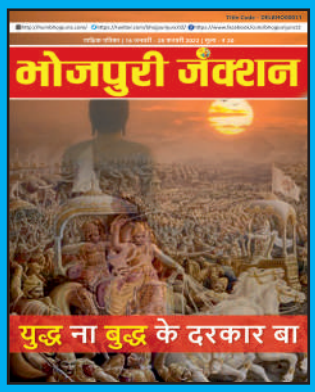
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
'कोई किसी का नहीं ये झूठे नाते हैं... 'NATO' का क्या'
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

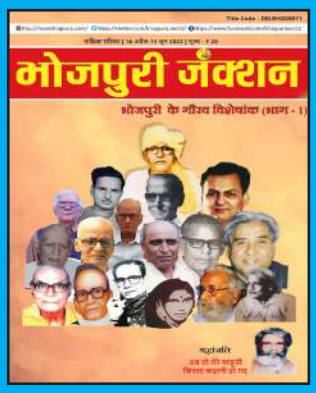
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग - 1)
कवनो
ठगवा
नगरिया
लूटल हो
- कबीर

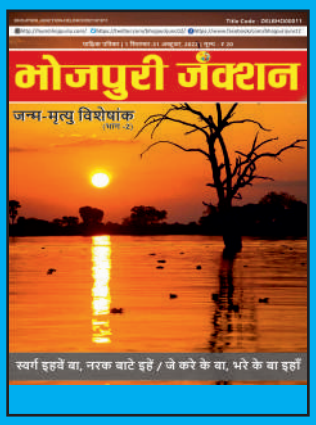
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -2)
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-2
लौटे के खेती-बारी के ओर !

राज्यपाल के हाथे "राज्य गौरव सम्मान" से सम्मानित भइलें मनोज भावुक

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी भाषा में उल्लेखनीय योगदान खातिर साहित्यकार, संपादक, सुप्रसिद्ध कवि आ पत्रकार मनोज भावुक के बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर जी के हाथे जलालपुर प्रखंड के हरपुर शिवालय, सारण (छपरा) में आयोजित कार्यक्रम में "राज्य गौरव सम्मान" से सम्मानित कइल गइल। महामहिम मनोज भावुक के अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह आ प्रशस्ति पत्र देके सम्मानित कइनी। एह अवसर पर सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल भोजपुरी फिल्म, साहित्य आ वैश्विक स्तर पर भोजपुरी के प्रचार-प्रसार में मनोज भावुक के योगदान से राज्यपाल महोदय के अवगत करवनी। बतवनी कि मनोज जी भोजपुरी खातिर यूरोप, अफ्रीका, दुबई, मॉरिशस, नेपाल अनेक देश के यात्रा कइले बानीं। सिनेमा पर भी बहुत काम कइले बानीं। हाल ही में इहाँ के फिल्मफेयर आ फेमिना द्वारा भी सम्मानित कइल गइल ह।

ACFL माइक्रो फाइनेंस

विकास आपका - साथ हमारा

भारतीय रिज़र्व बैंक से मान्यता प्राप्त

बिहार की पहली माइक्रोफाइनेंस

3 राज्य || 46 जिला || 87 शाखाएं || 2.5 लाख+ ग्राहक सेवित || 850 करोड़+ ऋण संवितरित

हमारी ऋण सेवाएँ

- आय वृद्धि
- स्वच्छ घर
- शिक्षा
- परिवार कल्याण
- गृह सम्मुनती

महिला सशक्तिकरण की तरफ एक प्रयास

सहेली ऐप

सभी ग्राहकों के लिए ऋण से संबंधित संपूर्ण जानकारी

ई-क्लिनिक

सभी शाखाओं पर मुफ्त परामर्श और जरुरी दवाएं उपलब्ध